करने का मौक़ा मिले, और मेरे रोग की कुछ निवृति हो सके।

यहां आकर मैंने मूत्र की परीक्षा कराई, जिस से मालूम हुआ, कि मेरे गुरदे भी ठीक तौर पर काम नहीं करते, और आवश्यक से बहुत कम मूत्र ख़ारिज होता है। उसमें साधारण अवस्था से अब दुगना "यूरिया" मौजूद है, और औक्सेलेट आफ़ लाइम के क्रिस्टल भी साधारण अवस्था से बहुत अधिक सीमा में पाए जाते हैं। यह इस बात का चिन्ह है, कि मेरी स्नायु प्रणाली (Nervous system) बहुत हि दुर्ब्बल हो चुकी, और होती जाती है।

मेरे शरीर के कई मुख्य अंग (वर्षों के लगातार आघातों और अतिशय विचार और परिश्रम के कारण) बहुत दुर्ब्बल हो गए हैं। सिर में अकसर गर्मी अथवा दर्द की तकलीफ़ रहती है। पेट में अजीर्ण का कष्ट रहता है। शरीर के विविध पट्ठों, ख़ासकर जोड़ों के स्थान में अकसर दर्द रहता है। प्रायः कोई दिन ख़ाली नहीं गया, जिस में मुझे एक वा दूसरे प्रकार से कोई क्लेश वा आघात् न मिला हो। मेरी मामूली शारीरिक ज़रूरतें भी बहुत दिक्क़त से पूरी होती हैं। मैं फिर भी हर सम्बन्ध में अपने जीवन व्रत के अनुसार काम किए जाता हूं। मैं अगले महीने में सोलन जाना चाहता हूं।

मेरे पेशाब के इमतहान से यह मालूम हुआ है, कि उस में यूरिया दो फ़ीसदी के बजाए ३.६ फ़ीसदी निकलता है, और आक्सेलेट आफ़ लाइम क्रिस्टल की मात्रा भी उचित से बहुत ज़्यादा है। इसके लिए डा० ............ने कल एक नुसख़ा दिया है, वह कल शाम से शुरू किया गया है। चार पांच दिन से (शायद इस स्थान और मौसम की ख़राबी से) गले के ख़राब हो जाने से खांसी का सिलसिला फिर शुरू हो गया है। आज सुबह खांसी ज़्यादा हुई, और उसके साथ बलग़म भी ज़्यादा निकला। ऐसा शक पड़ता है, कि पांच महीने के बाद अब यह सिलसिला फिर शुरू हुआ। कई अंग अर्थात् शिर, दिल, जिगर और गुरदे बहुत कमज़ोर हो गए हैं—मानों शारीरिक गठन का सारा सिलसिला ख़राब हो गया है। दो दिन से बदन में दर्द ज़्यादा होता है—कल बहुत ज़्यादा रहा, और इसीलिए मैं बाहर भी न जा सका।

अप्रैल :—

मैं यहां सोलन में ९ अप्रैल १९०७ को पहुंच गया था। मकान नातमाम था। कितने हि दिन तक हवा और बारिशों का ज़ोर था, इसलिए खांसी और पेट की तकलीफ़ों के भिन्न और भी तकलीफ़ें रहीं।

अब अपनी और अन्य शुभचिन्तकों की शुभ काम-

नाओं और मौसम आदि की तबदीली के असरों से खांसी में फ़ायदा मालूम होता है । तीन चार दिन से पेट भी अपेक्षाकृत बेहतर है।

मई :—

कई हफ्ते हुए, मुझे यहां के एक यूरोपियन फ़ौजी डाक्टर ने देखा था। उस ने परीक्षा करने के बाद श्रीमान् देवरत्न जी को कहा था, कि मेरा हृदयपिंड चरबी के रूप में बदलना शुरू हो गया है। मुझे उसकी बात पर अब तक विश्वास नहीं हुआ । मैं यहां पहाड़ के ऊंचे नीचे स्थानों में मामूल के मवाफ़िक भली भान्त चलता फिरता हूं। कभी २ शायद हर रोज़ हृदयपिंड (दिल) की ऊपर की सतह वा बाएं कन्धे के इधर उधर कुछ दर्द मालूम होता है।............मेरी खांसी प्रायः चली गई है, और ताक़त भी लाहौर की अपेक्षा कुछ अधिक मालूम होती है।

इस मास के पहले पन्दरह दिनों में मेरी स्वास्थ्य पहले की न्याईं अधिक ख़राब रही, अर्थात् खांसी, जोड़ों में दर्द, पेट में वायु की उत्पत्ति आदि रोगों से मैं पीड़ित रहा। परन्तु पिछले सोलह दिनों में ऋतु में बेहतरी आने से मेरी खांसी कम होने लगी, और इस मास के अन्त तक प्रायः बिलकुल चली गई । जोड़ों में दर्द अब

भी—विशेषतः प्रातःकाल के समय—हो जाता है। पाचन प्रणाली पहले की अपेक्षा अच्छा काम करती है, और लाहौर की अपेक्षा ताक़त भी बेहतर मालूम होती है, परन्तु बीच २ में आंखों में लाली और दर्द और सिर में दर्द की तकलीफ़ हो जाती है।

इन दिनों में भी मैं प्रातःकाल प्रायः ४½ वा ५ बजे उठता रहा हूं। अपने प्रातःकाल के साधन और शौचादि के अनन्तर प्रायः ६ बजे से लेकर प्रायः ७½ बजे तक लिखने का काम करता रहा हूं। फिर आठ बजे के लग भग बाहर फिरने जाता रहा हूं। श्रीमती पूजनीया जी और श्रीमान् देवानन्द जी मेरे साथ होते रहे हैं। बाहर से आकर मैं डाक वा समाचार पत्र आदि देखने के भिन्न कई बार फिर लिखने वा पहले लिखे हुए लेखों का संशोधन आदि का काम करता रहा हूं। ११½ बजे के क़रीब स्नान और भोजन आदि करता रहा हूं। फिर २ बजे से लेकर प्रायः ६ बजे तक ताज़ा डाक पढ़ने, सुनने, उसके सम्बन्ध में आवश्यक आज्ञाएं देने, समाचार पत्र वा कोई अन्य पुस्तक पढ़ने आदि में व्यतीत करता रहा हूं। फिर पर्व्वताश्रम की नई फुलवाड़ी को दुरस्त वा उन्नत करने के अनन्तर सायंकाल का भोजन करता रहा हूं, और ९ बजे के क़रीब विश्राम करता रहा हूं। मई मास में कितने नए हितकर लेख लिखने के भिन्न, मैं देव शास्त्र यज्ञ के

दिनों में देव शास्त्र के पुनः देखने के काम में व्यस्त रहा हूं।

जून :—

कुछ दिनों से मेरी शारीरिक अवस्था कुछ नीचे को हि गई है। दिमाग़ी काम बहुत अधिक रहा है, मौसम भी अपेक्षाकृत अधिक गरम रहा है। बाहर फिरने में धूप भी अधिक लगती रही है। इन और इनके भिन्न शायद कुछ और कारणों से जोड़ों का दर्द अधिक रहा है। सिर दर्द भी रहा है, और आंखें ख़राब रही हैं।

जुलाई :—

अकसर सिर दर्द की शिकायत रही। गला भी अपेक्षाकृत ख़राब रहा। बायां कान भी बहता रहा, और जोड़ों का दर्द भी रहा। ज़ुकाम से भी तकलीफ़ रही।

अगस्त :—

इस मास के पहले दो सप्ताह में मुझे ज़ुकाम और खांसी आदि की शिकायत रही, परन्तु पिछले भाग में मेरी स्वास्थ्य (पुरानी शिकायतों के भिन्न) साधारणतः कुछ अच्छी रही है। सिवाए किसी २ दिन के, जब कि मेरी सेहत ज़्यादा ख़राब हो जाती रही है, मैं प्रति दिन अपना लिखने पढ़ने और विविध सामाजिक कार्यों के परिचालन आदि का काम करता रहा हूं।

सितम्बर :—

कई लोगों के साथ कई प्रकार की बात चीत और कुछ जनों के नीच वर्तावों के कारण दिल और दिमाग़ पर बहुत सदमे पहुंचने से सिर ख़राब हो गया। पांच छै दिन तक उस में दर्द होता रहा। इसी हालत में कुछ और हानिकारक घटनाएं पैदा हुईं। एक दिन शाम से सिर में चक्कर की अलामतें दिखाई दीं। पहले भी इस बीमारी के महा भयानक हमलों से मैं बहुत दुख उठा चुका था। डरता था, कि कहीं यह अलामतें बढ़ न जावें। कल हलका सा जुलाब लिया। ख़ुराक बहुत घटादी। बहुत देर तक विश्राम की हालत में रहा, जिस से बीमारी बढ़ने से रुक गई और आशा है कुछ दिन में चली जाएगी।

इस मास में देव समाज के बहुत से कर्म्मचारियों और सेवकों आदि के सोलन में मुझ से मिलने और मेरे सत्संग और उपदेशों आदि से लाभ उठाने के लिए पहुंच जाने के कारण मुझे प्रायः सारा महीना हि अपने प्रति दिन के साधारण मान्सिक परिश्रम सम्बन्धी कामों के भिन्न, उन जनों के सम्बन्ध में भी बहुत सा परिश्रम करना पड़ा है, और आगत जनों के हित साधन के लिए प्रायः प्रति दिन बहुत सा समय देना पड़ा है, जिसका फल यह हुआ है कि यद्यपि मेरे इस हितकर परिश्रम से ऐसे

सब जनों का अवश्य बहुत हित हुआ है; परन्तु मेरी स्नायु प्रणाली (Nervous system) बहुत दुर्व्वल हो गई है, जिसके कारण सिर में दर्द और पाचन प्रणाली के कार्य्य के ठीक न चलने की शिकायतें पुनः पैदा हो गई हैं । इस मास में कई बार एक वा दूसरे समय में मुझे आहार परित्याग करना पड़ा, और कितने हि दिनों तक प्रायः प्रति दिन सिर में दर्द होजाता रहा।

अकतूबर :—

आंखों की कुछ तकलीफ़ के भिन्न पेट भी कुछ ख़राब रहा है।

नवम्बर :—

सोलन से लाहौर वापिस आने पर मेरी स्वास्थ्य और भी बिगड़ी रही। दिमाग़ी काम की ज़्यादती से मेरे सिर और पेट दोनों को हि हानि पहुंची है। गला बदस्तूर ख़राब है, कभी २ अधिक बिगड़ जाता है। इस मौसम में धुएं के नीचे छा जाने से मुझे यहां हवा भी अच्छी नहीं मिलती। यहां रहने को भी जी नहीं चाहता; परन्तु काम की निगरानी भी छोड़ी नहीं जाती। कुछ हल नहीं होता।

दिसम्बर :—

कई दिनों से पेट बिगड़ रहा है। गले की तकलीफ़

बहुत अधिक हो गई है। कुछ २ खांसी भी होती है। मद्दा व्रत क़रीब है। और बहुत सी बातों के भिन्न मुझे अपनी सेहत के विषय में भी बहुत फ़िकर लग रहा है।

( १९७८ )

जनवरी :—

और कई रोगों के भिन्न इस मास में सिर में कुछ चक्कर की अलामतें फिर शुरू हो गई थीं। इसलिए जल वायु परिवर्तन के लिए मैं मोगे को चला गया। परन्तु वहां जाकर मुझे कोई फ़ायदा नहीं हुआ। कई दिन के बाद वहां से रवाना होकर फ़ीरोज़पुर आगया, जहां पर पेट और सिर में दर्द की बहुत तकलीफ़ रही, और उस से कमज़ोरी बहुत बढ़ गई। वहां से मैं फिर लाहौर को वापिस आगया।

फ़रवरी :—

मेरी शारीरिक स्वास्थ्य में कुछ बेहतरी नहीं है। दोपहर के बाद से मेरा सिर धीरे २ इतना कमज़ोर हो जाता है, कि मेरे लिए मुंह से कुछ बोलना तक मुशकिल हो जाता है। दिमाग़ी काम से जब तक विश्राम न मिले, और कोई स्वास्थ्यकर स्थान रहने के लिए प्राप्त न हो, तब तक किसी बेहतरी की आशा नहीं दिखाई देती।

इस मास के पिछले हफ़ते में मुझे दाढ़ के दर्द की

बहुत तकलीफ़ रही। बठिंडे आश्रम के खोलने का इरादा भी मैंने अधिकतर इसी दर्द के कारण छोड़ दिया। कई दिन तक बहुत कष्ट सहने के बाद मैंने उसके उखड़वाने का फ़ैसला किया, और एक डेन्टिस्ट के पास जाकर और बहुत तकलीफ़ में से गुज़र कर आख़िरकार मैंने वह दाढ़ निकलवा डाली। उसके निकलवाने से दर्द और भी बहुत बढ़ गया और ऊपर और नीचे के मसूढ़े भी बहुत सूज गए। उन से ख़ून भी निकलता रहा। आशा है कुछ दिन में इस से आराम हो जाएगा।

मार्च :—

मेरे मसूढ़ों में कभी २ कुछ २ दर्द हो जाता है। इसके भिन्न गले में कुछ २ नज़ला गिरता है। नाक से भी कुछ पानी निकलता है। मुझे अन्देशा है, कि कहीं पिछले साल की तरह खांसी की मुसीबत फिर पैदा न हो जाए। जोड़ों का दर्द बढ़ गया है। तीन चार दिन तक दाहनी टांग के दर्द ने ख़ासकर बहुत बेचैन रक्खा। सिर में भी दर्द रहता है। कई दिन से क़ब्ज़ की भी शिकायत है।

अप्रैल :—

मेरी दुर्बलता चली चलती है। इस महीने में भृत्य स्वामी व्रत था। मैं अपनी अत्यन्त दुर्बलता के कारण उस दिन कोई उपदेश न दे सका। प्रति दिन काम करने और कभी उचित काल तक आवश्यक आराम न मिलने

से शरीर और दिमाग़ दोनों को एक २ समय में अत्यन्त नुक़सान पहुंचता है। ऐसे समय में मैं अपने आपको बहुत असहाय और दुखिया अनुभव करता हूं। मैं सोचता हूं, कि जब मैं औरों के लिए अपने आपको इस प्रकार बलि देता हूं, तब कोई और मेरे शरीर और मस्तिष्क की उचित रक्षा के लिए क्यों यथेष्ट यत्न नहीं करता, और मेरे लिए क्यों सेवाकारी नहीं बनता?

मई :—

दिमाग़ी कमज़ोरी चली चलती है। कुछ दिन जोड़ों का दर्द भी ज़्यादा रहा। काम प्रति दिन करना पड़ता है। बहुत दिनों तक काम से छुट्टी मिलने की ज़रूरत है; परन्तु कोई सूरत नज़र नहीं आती। मामूली छोटी मोटी तकलीफ़ें भी चली चलती हैं। दिमाग़ में ताक़त और आम सेहत में बेहतरी उस समय तक नहीं आसकती, जब तक कि दिमाग़ी काम से एक अच्छे अर्से तक फ़ुरसत न मिले। ख़बर नहीं, ऐसा विश्राम मुझे कब और क्योंकर हासिल होगा?

जून :—

मेरी स्नायु प्रणाली (Nervous system) बहुत काल पहले से बिगड़ रही थी। सिर बहुत गरम रहता था। लिखने, पढ़ने और बोलने से उसकी तकलीफ़ बहुत बढ़ जाया करती थी। एक २ समय में मेरे लिए मुंह से बोलना

या आवाज़ निकालना बहुत मुशकिल हो जाता था। परन्तु पावों के द्वारा मैं फिर भी कुछ दूर तक भली भान्त चल फिर लेता था। लेकिन काम के बोझे से पीछा न छुटने से आख़िरकार दिमाग़ बिलकुल रह गया। स्नायु प्रणाली (Nervous system) सारी चूर २ होगई। सिर की गर्मी और तकलीफ़ और पेट की ख़राबी को दूर करने के लिए मैंने १३ जून शनिवार के दिन एक हलका सा जुलाब लिया। जुलाब अच्छा होगया, पर शाम तक कमज़ोरी बहुत बढ़ गई, और अपने मकान पर भी कुछ दूर तक चलना मेरे लिए बहुत कठिन होगया। अगले दिन अर्थात् १४ जून से मैं मंझे पर पड़ा हुआ हूं। दिमाग़ और स्नायु प्रणाली की अत्यन्त दुर्बलता हि इसका मूल कारण है। अपने जीवन व्रत के सम्बन्ध में कई कामों की चिन्ता, समाज के नाना कामों के परिचालन के लिए आवश्यक संख्या और आवश्यक दर्जे में योग्य जनों की कमी का फ़िकर और एक वा दूसरी छोटी मोटी दुर्घटना और समीपी जनों में शुश्रूषा के कई अंगों के अभाव और वृद्ध अवस्था होने के कारण मेरे स्वास्थ्य में कुछ बहुत सन्तोष-जनक उन्नति नहीं होती। ख़ाली पड़े रह कर समय काटना भी बहुत कठिन बोध होता है, परन्तु धैर्य्य के भिन्न और कोई उपाय नहीं। वर्षों के लगातार अविश्राम और असाधारण दर्जे तक सख्त़ काम करने से मेरी स्नायु प्रणाली (Nervous system) को जितनी हानि पंहुची है, उस

से आशा नहीं, कि मुझे शीघ्र आराम हो । ऐसा हो, कि फिर मुझे इतनी स्वास्थ्य प्राप्त हो सके, कि मैं अपने बाज़ ज़रूरी लेखों को जो अधूरे पड़े हैं, किसी न किसी तरह पूरे करने के योग्य हो सकूं, और कुछ काल में काफ़ी तादाद में ऐसे सुयोग्य सेवक पासकूं, कि जो समाज के प्रत्येक विभाग के भली भान्त परिचालक बन सकें। मेरी बीमारी का हाल सुन कर कान्ति जी भी यहां आगए हैं, और तीन चार दिन तक ठहरेंगे। बहुत से सामाजिक जनों ने भी मेरे पास हमदर्दी के तार वा पत्र आदि भेजे हैं।

जुलाई :—

मुझे इस रोग को भुगतते हुए एक महीने से ज़्यादा अर्सा गुज़र चुका है; लेकिन मैं इस समय तक भी बहुत ख़राब हालत में हूं । घर के पास भी कुछ देर टहलने से मैं बहुत थक जाता हूं । कई वार मैं मंझे से भी बहुत ज़ोर लगाकर उठता हूं । इन दिनों में बदन में दर्द और सिर में भी तकलीफ़ रही है । आवाज़ बद-स्तूर बहुत धीमी है । बोलने में बहुत कठिनाई प्रतीत होती है। मैं अब तक न कुछ चल फिर सकता हूं, न कुछ बोल सकता हूं, न लिख सकता हूं, न पढ़ सकता हूं। ऐसी अवस्था में प्रायः चारपाई पर पड़े हुए वा बैठे २ समय व्यतीत करना अत्यन्त दूभर हो रहा है। दवा जारी है,

परन्तु जब तक प्रतिकूल घटनाओं का क्रम बन्द न हो, तब तक कोई उचित दवा भी मुझ पर अपना कुछ बहुत असर नहीं कर सकती।

मेरे यह दिन जिस अत्यन्त दुख और क्लेश से कटे और मैंने एक २ रात और एक २ दिन जिस गहरे फ़िकर और बेचैनी के साथ काटा है, उसको मेरे भिन्न और कौन जान सकता है? आख़िरकार यह काली घटा फटी, आकाश कुछ साफ़ हुआ, और मेरी गहरी मंगल कामनाओं से इस अत्यन्त दुख और चिन्ताप्रद अवस्था में कुछ बेहतरी पैदा हुई।.........कल डाक्टर......... साहिब ने मुझे फिर देखा, उन्हों ने दवा में कुछ और तबदीली की।

अगस्त :—

आज कल का मौसम मेरी सेहत के लिए अनुकूल नहीं। यहां कोई दिन ऐसा नहीं जाता, जब कि थोड़ी वा बहुत बारिश नहीं होती। बादल भी हर रोज़ घिरे रहते हैं। कभी सुबह को और कभी किसी और समय में बहुत कुहिर छाजाता है। धूप बहुत कम निकलती है, और हवा बहुत मरतूब होती है। इन सब का असर मेरी सेहत पर अच्छा नहीं पड़ता। इसके सिवाए कल मैं अपनी ताक़त से ज़्यादा पैदल चला, और फिर कितनी देर तक एक पुस्तक पढ़ता रहा, उधर सुबह से पीठ

के एक भाग में बहुत दर्द था, इन सब कारणों से मेरी दुर्बलता अधिक बढ़गई, और मेरे दिमाग़ को भी नुक़सान पहुंचा। पढ़ने लिखने का कोई काम अब तक मेरे दिमाग़ के लिए ठीक नहीं बैठता।

सितम्बर :—

सितम्बर मास में मेरी स्वास्थ्य का हाल नीचे लिखे हुए उन नोटों से मालूम हो सकता है, कि जो मेरी साप्ताहिक सूचनाओं में से यहां पर उद्धृत किए जाते हैं:—

७ सितम्बर १६०८ :—

जोड़ों के दर्द में कभी २ ज्यादती के भिन्न इस सप्ताह में मुझे कोई और शारीरिक पीड़ा मालूम नहीं हुई। कई वार बाहर जाने के लिए भी अवसर मिला है, और मैं प्रायः दो ढाई और कभी तीन मील तक चल सका हूं। अब मैं कुछ देर तक लिखने पढ़ने का भी काम कर लेता हूं, और मेरे साधारण स्वास्थ्य की गति भी कुछ न कुछ बेहतरी की तरफ़ है। कई दिन से मैंने दवा का पीना भी छोड़ दिया है।

१४ सितम्बर :—

कुछ दिन हुए, जब मैं नरगिस के कुछ पौदों को विविध जगहों से उखाड़कर किसी और जगह लगाने के लिए उनके नीचे की मट्टी को खोद रहा था, और खुरपे को

उनकी तली में पहुंचाकर हाथ के ज़ोर से उनकी धापों को ऊपर खैंचने की कोशिश कर रहा था, तब इस तौर पर ज़ोर के लगाने से मेरे दाहने हाथ के अंगूठे के पास की अंगुली के पट्ठों को कुछ आघात् पहुंचा, और तब से उस अंगुली में दर्द रहता है। उस पर तेल की कुछ मालिश की है, परन्तु अभी तक आराम नहीं हुआ। इन दिनों यहां पर उत्तर की ठंढी और तेज़ हवा भी चलती रही है और उससे मेरे गले को भी किसी क़दर नुक़सान पहुंचा है। बाक़ी शरीर सम्बन्धी किसी और हालत में कोई ख़ास फ़रक़ नहीं आया।

२१ सितम्बर :—

पिछली सूचना में मैंने अपने हाथ की एक अंगुली में मोच आजाने का जो ज़िकर किया था, उसका दर्द अभी तक नहीं गया। तीन चार दिन पहले तक वह दर्द बहुत अधिक रहा; परन्तु अब उतना नहीं है। इसके विषय में सूचित होकर एक सेवक डाक्टर ने फ़ीरोज़पुर से और कान्ति जी ने लाहौर से दवा भेजी है। इस नई दवा को अभी तक मैंने व्यवहार नहीं किया। दो दिन से यहां के एक हस्पताल की दवा लगा रहा हूं। आशा की जासकती है, कि एक वा दूसरी दवा से कुछ दिनों में फ़ायदा होजाएगा।

२८ सितम्बर :—

अंगुली में मोच के आजाने स जो दर्द पैदा होगया

था, वह चला चलता है। कोई दवा अभी तक बहुत मुफ़ीद साबित नहीं हुई। सिर की कमज़ोरी से गले की आवाज़ जो दोपहर के पीछे बहुत हलकी और धीमी पड़ जाती है, उसमें भी कोई बहुत बेहतरी नहीं आई।

अकतूबर :—

मेरी स्वास्थ्य प्रायः पहले की तरह है। अधिक लिखने पढ़ने से सिर बहुत थक जाता है, और उसमें कभी २ दर्द होजाता है। ऐसे थकान के समय आवाज़ भी बहुत धीमी होजाती है। इन दिनों नींद भी ख़राब रही है। अंगुली का दर्द बहुत कुछ दूर हो गया है। दो तीन दिन तक पूर्णतः आराम हो जाने की आशा है। २३ अकतूबर को दोपहर के बाद से दिल बहुत उदास रहा है। बीच २ में ऐसा मालूम होता रहा है, कि कहीं कोई दुर्घटना हुई है, वा होने वाली है। लिखने पढ़ने का काम भी ज़्यादा रहा है, और उस से भी दिमाग़ को हानि पहुंची है। मैं ख़ाली रह नहीं सकता, और इसीलिए किसी और प्रकार से मसरूफ़ न होने की सूरत में लिखने पढ़ने के काम में मुझे ख़ामख़ा हद्द से ज़्यादा लगे रहना पड़ता है, और इस से मेरी स्वास्थ्य को हानि पहुंचती है।

नवम्बर :—

मेरी शारीरिक स्वास्थ्य अपेक्षाकृत अधिक ख़राब रही है। गले में फिर तकलीफ़ रही। उसके साथ पहले

ज़ुकाम हुआ, और तीन दिन तक बहता रहा। फिर खांसी होगई। मुझे डर था कि उसका सिलसिला कहीं बहुत अर्से के लिए जारी न हो जाय, परन्तु ऐसा नहीं हुआ, और अब कई दिनों के बाद उस से बहुत कुछ आराम है। कई दिनों से सिर और दाहनी दाढ़ में दर्द रहता है। रात के पिछले भाग में जोड़ों का दर्द होता है। सिर भी ख़राब है। इस दुखिया अंग को काम से पूर्णतः विश्राम प्राप्त करने के लिए कोई अवसर नहीं मिलता; क्योंकि मेरे हालात हि ऐसे हैं। लाचारी है!

कुछ दिन हुए मुझे फिर इतने मान्सिक परिश्रम और हार्दिक क्लेश में से गुज़रना पड़ा, कि मेरे सिर की हालत बहुत ख़राब होगई। मेरी स्नायुविक दुर्व्वलता फिर बहुत बढ़ गई, और मैं फिर बिस्तरे पर पड़ गया। परन्तु बिस्तरे पर लेटे हुए भी मेरी चिन्ता का स्रोत बन्द नहीं होता था। समाज के स्कूलों के विषय में बराबर विचार जारी थे। आख़िरकार कुछ हल सूझ गया। मैंने लेटे २ कुछ नोट लिखे, और उन्हें पेन्सिल से एक काग़ज़ पर लिख कर कौंसिल के सभासदों के पास विचार के लिए भेज दिए। सारे दिन बहुत कमज़ोरी रही। शाम को भोजन के समय एक कर्म्मचारी के उपस्थित होने पर, मैंने जब उस से यह पूछा, कि कौंसिल ने मेरे नोटों पर क्या विचार किया? तब उस से यह जान कर कि उन्हों ने उन नोटों को सिरे से हि

छोड़ कर और उन पर कुछ ध्यान न देकर कुछ अपने हि जुदा सिद्धान्त स्थिर किए हैं, मुझे बहुत बड़ा आघात् लगा। इस आघात् से मैं थोड़ी देर तक बहुत क्लेश और बेचैनी की हालत में रहा। आहार के समय, और उसके बाद इस अत्यन्त क्लेश ने मेरी पाचन प्रणाली को बहुत हानि पहुंचाई। दो या तीन बजे रात से पेट में दर्द शुरू हो गया। यह दर्द बराबर जारी रहा। सुबह हुई। मैंने उस समय का आहार छोड़ दिया। दोपहर तक कुछ फ़ायदा न देख कर, उस समय का आहार भी त्याग दिया। शाम तक कई वार दवा पीने और उपवास करने से दर्द घटा। सन्ध्या को मैंने कुछ खिचड़ी खाई। तब से पेट ख़राब है। सिर दर्द की अलग तकलीफ़ है। जोड़ों का दर्द ख़ूब बढ़ गया है। दाढ़ का दर्द भी जारी है। २२ तारीख़ को कुछ अधिक देर तक पढ़ने से, और शाम को कुछ कर्म्मचारियों के आजाने पर (जिन्हें मेरी अवस्था का विचार करके उस समय मेरे पास आना उचित न था) मुझे उनके साथ बहुत कुछ बात चीत करनी पड़ी, और इससे मेरे सिर को फिर बहुत हानि पहुंची। रात के समय मैं इस क्लेश की हालत में पड़ा २ सोच रहा था, कि मैं कैसे २ कठोर जनों से घिरा हुआ हूं, जो मेरे क्लेश में भी मेरे प्रति कुछ सहानुभूति नहीं प्रदर्शन करते। अगले दिन मैं बाहर नहीं जासका और घर में हि पड़ा रहा।

दिसम्बरः—

पिछली सूचना के प्रकाशित होने के अनन्तर और ठीक महोत्सव के दिनों में पहुंचकर नज़ले के गिरने और गले के पक जाने आदि से मेरी स्वास्थ्य फिर अधिक ख़राब होगई। यहां तक कि ७ दिसम्बर की रात मैंने बहुत बेक़रारी के साथ और तड़प २ कर काटी। अगले दिन महोत्सव सम्बन्धी महा सभा थी। मेरी सेहत बिलकुल इस योग्य न थी, कि मैं उसके परिचालन का काम कर सकता। परन्तु फिर भी मेरे हितानुरागी हृदय ने यह गवारा न किया, कि जो सैंकड़ों सेवक आदि विविध स्थानों से इस समय एकत्र हो रहे हैं, उन्हें पूर्णतः निराश किया जाय। इसलिए मैं महा सभा में शामिल हुआ और वहां पर प्रायः सवा घंटे तक खड़े होकर मैंने एक उपदेश भी दिया। इस उपदेश से मेरी स्वास्थ्य को अत्यन्त हानि पहुंची। मेरा गला इस क़द्र पक गया, कि जितना इस्से पहले आज तक कभी न पका था; यहां तक कि और आहार तो कहीं रहा, मेरे लिए दूध का निगलना भी कठिन होगया। गले के पकने के भिन्न मुझे ज्वर भी होगया, जोड़ो में दर्द भी बढ़गया, दुर्बलता बहुत अधिक होगई, और डाक्टर ने चलने फिरने और बात चीत करने आदि से पूर्णतः विरत रहने की राय दी। तीन चार दिन इसी अवस्था में पड़े रहने के पीछे मेरी सेहत में कुछ बेहतरी आई, और मैं १३ दिसम्बर की गाड़ी में पेशांवर को

रवाना हुआ। वहां का निवास मेरी स्वास्थ्य के लिए कुछ न कुछ लाभदायक प्रमाणित हुआ।

( १९०९ )

जनवरी :—

लाहौर—गले की ख़राबी चली चलती है। खांसी भी नहीं गई। सिर कमज़ोर है। जोड़ों के दर्द में अवश्य कुछ कमी है। एक वा दूसरे विषय पर लिखने के लिए कई २ बार प्रबल तरंगें उठती रहती हैं, परन्तु सिर साथ नहीं देता; इसीलिए नहीं लिख सकता। पढ़ने का काम कुछ न कुछ प्रति दिन अवश्य होता है; परन्तु उस से भी एक २ बार सिर को हानि पहुंच जाती है। यहां आश्रम का निवास यद्यपि मेरे लिए कई बातों के विचार से स्वास्थ्यकर नहीं; तथापि अभी तक किसी और बेहतर स्थान में जाकर रहने की कोई सूरत भी दिखाई नहीं देती।

मात-पिता-सन्तान व्रत पर यहां के अपने सब बच्चों को अपने पास वर्तमान पाकर मैंने उन्हें प्रायः एक घंटे तक उपदेश दिया। इसके भिन्न शाम की सभा में भी उनके साथ कितनी देर तक बात चीत की। इस से मेरे गले को बहुत हानि पहुंची। गला फिर बहुत सूज गया। खांसी बहुत बढ़ गई। अगले दिन पेट में भी बहुत तकलीफ़ हो गई। कल कुछ बुख़ार रहा। जोड़ों का दर्द बहुत

बढ़ गया। सिर भी दुखता रहा। कमज़ोरी बहुत है। लाहौर में कई सालों से सर्दियों में खांसी बहुत हो जाती है। अभी तक किसी बेहतर जगह में चले जाने की कोई सूरत दिखाइ नहीं देती।

मैं आश्रम को छोड़ कर चीफ्स कालेज के पास एक कोठी में चला आया हूं। आश्रम में मेरी इतवार की रात बहुत मुसीबत से गुज़री। जोड़ों के दर्द से मैं निहायत बेचैन रहा। खांसी और गले की ख़राबी के भिन्न रात में ज्वर भी होता रहा। यहां की खुली हवा में रहने से कुछ थोड़ी सी बेहतरी मालूम होती है। गले के अधिक ख़राब होने से कानों से सुनने की ताक़त भी बहुत सी चली गई है। यहां शायद जनवरी के अख़ीर तक रह सकूंगा। आगे के लिए अभी तक कोई रास्ता दिखाई नहीं देता। मैं चाहता हूं, कि यदि किसी तरह फ़रवरी का महीना मेरा मैदान में हि कट जाय, तो फिर मार्च में मैं सोलन चला जाऊं। देखिए क्या सूरत निकलती है।

२५ जनवरी को डाक्टर..............जी ने मुझे देखा। मेरे गले को देख कर उन्हों ने कहा, कि कई महीनों तक इनहेलर के द्वारा दवा के खैंचने से आराम होने की आशा हो सकती है। कानों को देख कर उन्हों ने बतलाया, कि गले की ख़राबी से उनके परदे नीचे को बैठ गए हैं, और वह्व एक बैग के द्वारा हवा पहुंचाने से

फिर ऊपर को उभर सकते हैं। सुबह के समय कानों से बहुत मुशकिल से सुनाई देता है, परन्तु कुछ घण्टों के बाद धूप के लगने से पहले की अपेक्षा कुछ बेहतर सुनाई देता है। गले की ख़राबी से खांसी भी रहती है, बलग़म भी बहुत निकलता है। अभी तक इन दोनों में कुछ फ़ायदा नहीं हुआ। इस समय तक किसी और जगह जाने की तजवीज़ भी नहीं निकली। शायद कुछ अरसे तक यहीं रहना पड़ेगा। दिमाग़ का काम करने से सेहत को हानि पहुंचती है। खांसी ज़्यादा होती है, और बलग़म भी ज़्यादा निकलता है।

फ़रवरी :—

बठिंडा—यहां आकर भी अब तक मेरी सेहत में कुछ बेहतरी नहीं आई। कल शरीर ज़्यादा ख़राब था। खांसी भी ज़्यादा थी, दर्द भी था। मैं बाहर भी नहीं जा सका। नीन्द अच्छी नहीं होती। दिमाग़ बहुत कमज़ोर है। पेट और यकृत की दुरस्तगी के सम्बन्ध में रात में जो टिकियां खाता हूं, उनके भिन्न खांसी की कोई ख़ास दवा नहीं होती—दवा करने वाला भी कोई नहीं है।

दोनों पाओं की छोटी अंगुलियों में मुद्दत से गट्टे पड़े हुए हैं। वह यहां पर ज़्यादा क्लेश देते हैं। यहां की शुष्क वायु से जूते सुकड़ गए हैं, और उनके तंग होजाने से कई दिनों से चलने फिरने में दिक्क़त रहती है। परसों

बुधवार को (२४ फ़रवरी को) मैं यहां से रवाना होना चाहता हूं। कुछ घंटे फ़ीरोज़पुर ठहरूंगा। उसी दिन शाम की गाड़ी में लाहौर को जाना चाहता हूं। लाहौर में तीन चार दिन ठहरने के बाद सोलन को जाने का इरादा रखता हूं। सम्भव है कि वहां जाकर मेरी खांसी दूर होजाय।

मार्चः—

सोलन—यहां आकर खांसी कुछ न कुछ घटती हुई मालूम होती है। रात के पिछले भाग में जोड़ों में दर्द रहता है। नीचे के स्थानों की अपेक्षा यह पर्व्वत स्थान मुझे क्या शरीर और क्या आत्मा दोनों के हि विचार से अधिक अनुकूल मालूम होता है। रोगी रहने और बयस के बढ़ने से मेरे शरीर की गठन की गति नीचे की तरफ़ हि है। पिछली बार यहां पर मेरी स्नायु प्रणाली (Nervous system) जिस प्रकार चकनाचूर होगई थी, उसके बाद से वह फिर पहली अवस्था में नहीं आई। स्नायु प्रणाली (Nervous system) की दुर्ब्बलता से मस्तिष्क भी दुर्ब्बल होगया है। उसमें अब पहले की तरह बल नहीं मालूम होता, फिर भी यदि अनुकूल अवस्था मिलती रहे, तो कुछ दिनों तक काम दे सकता है।

अप्रैल :—

मेरी सेहत कई दिनों से फिर ख़राब है। सिर में

ख़ासकर अधिक तकलीफ़ रहती है। दिमाग़ी काम की ज़्यादती हि इस तकलीफ़ का मुख्य कारण है। मैं इतना अधिक हित अनुरागी हूं, कि मैं उसके वशीभूत होकर यही चाहा करता हूं, कि जो हितकर काम चार दिन में पूरा होसकता है, वह एक दिन में हि पूरा होजाय। इसीलिए जब मैं ख़ुद कोई काम करने लगता हूं, तब मैं अपनी शारीरिक शक्ति की परवा न करके उससे बहुत अधिक काम ले लेता हूं, जिससे दिमाग़ पर बहुत बोझा पड़ने से उसे बहुत हानि पहुंच जाती है। इन दिनों में बहुत विचार के साथ लिखने का काम और पाठ करने के भिन्न सत्संग की सभाओं में बहुत ज़ोर के साथ बोलने और उपदेश देने से मेरे दिमाग़ को बहुत नुक़सान पहुंचा। पिछले शुक्रवार की सभा के बाद से मेरे सिर में बहुत तकलीफ़ रही। परसों, सनीचर को कुछ आराम रहा। कल लिखने पढ़ने और बोलने से फिर यह क्लेश अधिक होगया। क्या करूं, इस देह के साथ इस पृथिवी में ऐसे नाना क्लेशों से छुटकारा पाना असम्भव दिखाई देता है। लिखने का काम बहुत बाक़ी पड़ा है, और वह बहुत सा दिमाग़ी परिश्रम चाहता है। इधर मेरा दिमाग़ कमज़ोर हो चुका है, उधर मेरे पास कोई ऐसा आदमी नहीं, कि जो मेरे लिए ऐसे काम में इतना सहायक बन सके, जितना मैं चाहता हूं। अच्छा! जो कुछ हो! मेरे शुभाकांक्षियों

को मेरे सम्बन्ध में ऐसी शुभ कामनाएं करनी चाहिएं, कि मैं अपने जीवन व्रत के सम्बन्ध में उन सब कामों को कि जिन्हें केवल मैं हि पूरा कर सकता हूं, और मेरे सिवाय कोई और नहीं कर सकता, जहां तक सम्भव हो, अधिक से अधिक मात्रा में पूरा कर जाऊं।

मई :—

पिछले शुक्रवार से मेरी स्वास्थ्य फिर बहुत ख़राब होगई है। स्नायविक दुर्बलता के बढ़ जाने से सिर ने काम करने से फिर जवाब दे दिया है। मस्तिष्क विषयक अधिक कार्य्य हि इस पीड़ा का मुख्य कारण है। कुछ काल तक लगातार विश्राम के बिना आराम होने की आशा नहीं। शोक! कि न चाह कर भी मुझे कई प्रकार की क्लेशदायक चिन्ताओं और तकलीफ़ों में से गुज़रना पड़ता है।

मस्तिष्क विषयक काम के भिन्न गर्मी की ज़्यादती भी इस दुर्बलता और तकलीफ़ के बढ़ाने का हेतु हुई है। मेरी आंखें भी कितने दिनों से ख़राब चली चलती हैं। बोरिक एसिड के डालने से कुछ फ़ायदा अवश्य होता है, परन्तु शाम तक यह सब फ़ायदा प्रायः काफ़ूर हो जाता है। सन्ध्या के समय मेरी शारीरिक दुर्बलता बहुत ज़्यादा होती है—एक २ बार ऐसा प्रतीत होता है, मानों चलते हुए पांव डगमगा रहे हैं, और मैं गिर जाऊंगा।

यहां अब गर्मी बहुत पड़ती है। मेरे बड़े कमरे में जो थरमा-मेटर लगा हुआ है, उसका पारा इन दिनों ८६ दरजे तक पहुंचता है, और आफ़िस का थरमामेटर प्रायः९० डिगरी तक। इधर यह गरमी का मौसम मेरे लिए बहुत मुखा-लिफ़ है, और मेरी शारीरिक स्वास्थ्य इतनी बिगड़ी हुई है, उधर मेरे एक कृतघ्न विरोधी ने इन्हीं दिनों में मुझे गवाही के लिए लाहौर की एक अदालत में तलब किया है!!

जून :—

इस महीने में तीन चार बार मेरे सिर की तकलीफ़ बहुत अधिक होगई। पढ़ने की अपेक्षा लिखने से और लिखने की अपेक्षा बोलने से मेरी यह तकलीफ़ बहुत बढ़ जाती है, और जब अधिक होजाती है, तब मैं अपने आपको बहुत ही असहाय और दुखिया अनुभव करता हूं। इधर मेरा सिर बहुत ख़ाली २ बोध होता है, और उसमें एक प्रकार का बहुत ख़राब और क्लेशदायक असर पैदा होजाता है, उधर मेरे लिए अपने मुंह से एक शब्द तक निकालना कठिन और क्लेशकर मालूम होता है। इधर जिनके सम्बन्ध में मुझे एक वा दूसरे भाव को लेकर कुछ बोलना वा उपदेश देना अथवा उनकी किसी अनुचित क्रिया के लिए कुछ कहना पड़ता है, वह ख़ुद मेरे लिए प्रायः हमदर्दी नहीं रखते, उधर मेरे इर्द गिर्द जितने अधिक जन इकट्ठे होजाते हैं, और उनके साथ

जितने अंश मेरा साक्षात् सम्पर्क होता है, उतने हि अंश मेरी इस तकलीफ़ और विपद् के कारण भी अधिक बढ़ जाते हैं। इसलिए इन दिनों यहां पर बहुत से लोगों के एकत्र होजाने से मेरे सिर को अधिक नुक़सान पहुंचा है। क्या करूं, बहुत लाचार हूं। इधर अपने भीतर के अति प्रबल हित भाव के कारण जहां तक मेरे द्वारा किसी का हित होना सम्भव है, उसमें वहां तक सहायक बनने के लिए अपने आपको मजबूर पाता हूं, उधर अयोग्य आत्माओं से वासता डालकर अपने लिए बहुत मुसीबत खड़ी कर लेता हूं। मैं जब देखता हूं, कि मेरे इस प्रकार के क्लेश भुगतने से हि किसी में कुछ बेहतर तबदीली आसकती है, तब उसके अवांछनीय होने पर भी उसे भुगतता हूं।

जुलाई:—

२ जुलाई के दिन जब मैं सुबह बाहर फिरने के लिए गया, तब लौटते समय बहुत ज़ोर दार बारिश शुरू होगई, जिससे मैं बिलकुल तरबतर होगया। मैं चलते समय यह इरादा करके निकला था, कि वापिसी के समय परमेश्वरदत्त जी से मिलकर आऊंगा। मैंने इस ज़ोरदार बारिश के होने पर भी अपने इस इरादे को पूरा किया। घर पर पहुंच कर मैंने कपड़े बदले। शाम को मैंने फूलों की बहुत सी तर क्यारियों में मिट्टी खोदने और पौदों की

सफ़ाई का काम किया। अगले दिन भी तर ज़मीन में बैठ कर इसी प्रकार का काम करता रहा, जिससे मुझे बहुत हानि पहुंची। मुझे ज़ोरदार ज़ुकाम होगया। सिर दर्द के भिन्न मेरे जोड़ों का दर्द बहुत बढ़ गया। दो दिन बुख़ार भी रहा, और दो रातें ख़ासकर बहुत बेचैनी से कटीं। कमज़ोरी बहुत अधिक होगई, और सुनने की शक्ति जो कई बरसों से बहुत कम हो चुकी थी, और भी कम हो गई। ज़ुकाम के बाद पहले समयों की तरह खांसी होगई। कभी खांसी ख़ुश्क होती है, और कभी नाक और मुंह के द्वारा गाढ़ा बलग़म निकलता है। अभी तक किसी दवा से कोई फ़ायदा नहीं हुआ। इसके भिन्न दाहने पांव के अंगूठे में कुछ वर्म और दर्द के हो जाने और कुछ मौसम के ख़राब होने के कारण मैं कई दिन से फिरने के लिए बाहर भी नहीं जासका।

कई दिनों से सिर में दर्द और कुछ बवासीर की शिकायत है। शरीर में दुर्बलता बहुत बढ़ गई है। फिर भी मैं चुप चाप धैर्य्य के साथ यह सब आज़ाब सह रहा हूं।

अगस्त :—

इन दिनों मुझ पर दिमाग़ी काम का बहुत बोझा रहा है। बारिशों के कारण कई दिन तक फिरने के लिए बाहर नहीं जासका। इस लिए मेरा पेट ज़्यादा ख़राब

रहा—बादी और क़ब्ज़ की शिकायत के सिवाय सिर में भी कभी २ दर्द रहा। इसके भिन्न दाहने हाथ की जिस अंगुली में पिछले साल चोट आगई थी, और जिसके पट्ठे कुछ ख़राब और कमज़ोर हो गए थे, उसी में कुछ दिन हुए पौदों की शाख़ों को काटते समय ज़ोर लगाने से फिर मोच आगई। इस मोच की तकलीफ़ भी अभी तक चली चलती है।

एक ओर दो ढाई सप्ताह तक कर्म्मचारियों के साथ मिलकर, उनके और समाज आदि के भले के लिए आलोचना आदि विषयक विविध प्रकार का मस्तिष्क सम्बन्धी कठिन काम करने और दूसरी ओर लगातार बारिशों के कारण मौसम के ख़राब रहने से मेरी स्वास्थ्य को फिर हानि पहुंची है। जोड़ों और बदन का दर्द बढ़ गया है, सिर में भी दर्द रहा है। अंगुली की तकलीफ़ भी चली चलती है। पेट में हवा और कोष्टबद्धता की शिकायत है।

सितम्बर:—

इधर मेरे हालात ऐसे बन चुके हैं, कि मेरे लिए कई प्रकार के मान्सिक परिश्रम में रत रहना ज़रूरी हो गया है, उधर बीच २ में इस प्रकार के अतिशय परिश्रम से जब मेरे मस्तिष्क और इसीलिए मेरी स्नायुं प्रणाली (Nervous system) को अधिक हानि पहुंचती है, तब भी मुझे आवश्यक विश्राम न मिलने से मेरी सारी

स्वास्थ्य को बहुत हानि पहुंचती है। परसों से इसी प्रकार की हानि से क्लेश मिल रहा है। कितने हि छोटे मोटे कामों का बोझा जो औरों को उठाना चाहिए, वह न चाहकर भी मुझे उठाना पड़ता है।

मेरा मस्तिष्क विशेष रूप से विश्राम चाहता है। परन्तु क्या अपने पुराने स्वभाव और क्या सामाजिक नाना कामों का बहुत अधिक बोझा सिर पर होने के कारण मैं विश्राम कर नहीं सकता। इसलिए मेरी बिगड़ी हुई स्वास्थ्य पनपने में नहीं आती। क्या करूं, बहुत असहाय अवस्था में हूं। अंगुली कुछ तो बेहतर है, लेकिन उसका आधा भाग कमज़ोर हो गया है, और जिस प्रकार यदि कोई अंगुली बहुत देर तक पानी में पड़ी रहे, तो उसका पट्ठा कुछ बैठ सा जाता है और उस में एक प्रकार की तकलीफ़ सी मालूम होती है, उसी प्रकार मुझे बहुत कुछ इस अंगुली में असर मालूम होता है। कल शाम के खाने में एक चीज़ मेरे सामने बहुत गरम रख दी गई, उसके मुंह में जाते हि अचानक ज़बान दांतों के नीचे आकर कुचल गई, और तब से ज़बान में वर्म और दर्द की तकलीफ़ है। इसके भिन्न बीच २ में कई दुर्घटनाएं ऐसी पैदा होती रहती हैं, जिन से मेरी सेहत को बहुत हानि पहुंचती है।

अकतूबर :--

१४ अकतूबर को परलोक व्रत था। मैंने अपनी दुर्ब्बल अवस्था की परवा न करके इस अवसर पर प्रायः सवा घंटे तक परलोक के विषय में एक उपदेश दिया। इससे मेरे दुर्ब्बल मस्तिष्क को बहुत हानि पहुंची; मेरे सिर में दर्द होगया। यह दर्द तब से न्यूनाधिक एक वा दूसरे समय में होता रहा है। इसके भिन्न मेरे दांत भी अब जवाब देते जाते हैं—कितने हि काल से कई एक दांत हिलते हैं, दो दाढ़ें भी हिलती हैं; इसीलिए खाना खाने में कुछ दिक्क़त रहती है। अभी तक इतनी कुशल अवश्य है, कि एक दाढ़ में थोड़े से दर्द के भिन्न और दांतों में दर्द की तकलीफ़ नहीं है। कल रात मेरे दाहने पांव में सख्त दर्द रहा, जिस से मैं बेचैन रहा। विचार और लेख के कामों के भिन्न सामाजिक नाना कामों और उलझनों का बोझा इतना अधिक है, कि मैं अब उसे अपने आप किसी तरह उठा नहीं सकता, उधर उसके उठाने के लिए कोई और जन भी तैयार नहीं है। इसलिए बहुत असहाय अवस्था में हूं। मेरे मस्तिष्क को जिस विश्राम की नितान्त आवश्यकता है, वह मुझे प्राप्त नहीं। मेरी स्नायु प्रणाली ( Nervous system ) बहुत दुर्ब्बल हो चुकी है—बरसों हो चुके परन्तु मुझे याद नहीं पड़ता कि अत्यन्त बीमारी वा कभी कभी सफ़र के भिन्न मुझे कोई दिन छुट्टी का मिला हो। सरकारी

नौकरों को विश्राम के लिए कितनी कुछ छुट्टियां मिलती हैं, परन्तु मेरे अनोखे जीवन व्रत और समाज में सुयोग्य आत्माओं के अभाव के कारण मुझे अब तक अपने अतिशय थके हुए शरीर के विश्राम के निमित्त भी कोई अवसर नहीं मिल सका । मैं इस हालत में एक २ वार अपने आप को बहुत बेकसी में देख कर दुखी भी होता हूं, परन्तु कुछ पेश नहीं जाती ।

नवम्बर :—

मेरे गले की पीड़ा बराबर चली चलती है । उसके साथ कुछ खांसी भी है । बोलने के बिना मेरा काम नहीं चलता, परन्तु बोलने से मेरे गले को हानि पहुंचती है । इसलिए आराम होना मुशकिल हो रहा है । यहां के आश्रम की हवा मेरे लिए अनुकूल नहीं है । यहां मैंने लारंस गार्डन से कुछ फ़ासले पर रेस कोर्स के मैदान के नज़दीक एक कुटिया बना कर उस में रहने की तजवीज़ की है । सम्भवतः थोड़े दिनों में यह कुटिया बन जायगी । गले के भिन्न जोड़ों के दर्द की भी थोड़ी बहुत तकलीफ़ रहती है ।

एक दिन रात के समय मुझे अपने सिर में कुछ चक्कर सा मालूम हुआ । बुधवार की सुबह से इस चक्कर का अच्छी तरह प्रकाश होगया । इसलिए मैं चलने फिरने के बहुत कुछ अयोग्य होगया, और दो दिन

तक बाहर भी नहीं जा सका। कितनी हि देर तक पड़े रहने और आहार में परिवर्तन करने से धीरे २ इस अवस्था में बेहतरी आई। परन्तु इन्हीं दिनों बहुत सर्द हवा भी चलती थी, जिसके असर से गला ख़राब होगया और कई दिन से कुछ २ खांसी रहती है। गले में दवा लगाई जाती है, परन्तु अभी तक कुछ फ़ायदा मालूम नहीं होता। दोपहर के बाद लिखने पढ़ने के असर से आंखों में भी तकलीफ़ हो जाती है।

आवाज़ भी बहुत ख़राब हो गई है—जोड़ों में दर्द अधिक रहता है, और बीच २ में कुछ बुख़ार भी होता है। एक ओर यहां की हवा में अब जिस क़िसम की तबदीली हो रही है, वह मेरे मुद्दत के कमज़ोर गले के लिए अनुकूल नहीं है, दूसरी ओर दवा दारू का भी यहां कोई अच्छा इन्तज़ाम नहीं। इसलिए अब लाहौर को रवाना हो जाना चाहता हूं। १७ नवम्बर को आशा है, लाहौर पहुंच जाऊंगा।

२४ नवम्बर, बुधवार की शाम से आश्रम को छोड़ कर मैं फ़ीरोज़पुर की सड़क के पास एक कोठी में आगया हूं।............साहब इस कोठी के मालिक हैं। उन्हों ने कृपा करके दो ढाई हफ्ते के लिए बिना किसी किराए के यह कोठी मुझे रहने के लिए दे दी है। यहां पर पूजनीया जी के अतिरिक्त समाज के दो उम्मेदवार कर्म्मचारी

मेरे पास रहते हैं। पूजनीया जी हम सब का खाना बनाती हैं।

दिसम्बर :—

इस महीने में कई रातों तक अच्छी तरह नीन्द नहीं आई। यदि मेरा दिमाग़ अधिक थका हुआ हो, अथवा बीच में नीन्द के टूट जाने पर उसमें किसी प्रकार के विचार का सिलसिला शुरू हो जाय, तो फिर मैं अच्छी तरह सो नहीं सकता। मुझे अपने गले में पहले की अपेक्षा अवश्य बेहतरी मालूम होती है।

गले में दवा के लगाने, एक औषधि की कुछ टिकियों के मुंह में रखने और पुष्टि दायक मिक्सचर के पीने और शुभ कामनाओं के करने से यद्यपि मेरे गले में बेहतरी आई, और कुछ दिन तक मेरे शारीरिक बल में भी कुछ वृद्धि हुई, तथापि आवश्यक विश्राम के न मिल सकने से यह बेहतरी कुछ अधिक काल तक न चल सकी। इसलिए कई दिनों से मान्सिक परिश्रम के बहुत बढ़ जाने और नाना दिक्क़तों में से गुज़रने से मेरी स्वास्थ्य को फिर हानि पहुंची, और तब से शरीर बहुत ढीला है। अब सर्दी भी अधिक हो गई है, और आज बारिश भी हो रही है। आज हि मैं अपनी नई कुटिया में चला जाऊंगा।

मेरे कई दांत हिलते हैं। मसूढ़े फूले हुए हैं। उन

में दर्द अधिक है। मसूढ़े में एक जगह एक ज़ख्म भी हो गया है। इसके सिवाय कई दिन से सवेरे के समय मेरे सिर में कुछ देर तक चक्कर सा रहता है। कल महा यज्ञ विषयक महा सभा है। ऐसा हो, कि किसी तरह मैं उस सभा में शरीक हो सकूं, और निर्विघ्न रूप से उसके सम्बन्ध में अपना कर्तव्य पूरा कर सकूं।

## ( १९१० )

जनवरी :—

मुझे तेरह दिन से दाढ़ के दर्द की शिकायत है। ७ जनवरी से यह तकलीफ़ बहुत बढ़ गई। पिछली कई रातों में नींद में बहुत व्याघात् रहा। शरीर बहुत कमज़ोर होगया। दान्तों के एक सरजन का इलाज होता है। जिस दाढ़ में अब तकलीफ़ है, वह पिछले साल भरी गई थी। मेरे मेहरबान डेन्टिस्ट ने उसके अन्दर का भरा हुआ सब मसाला वर्मे और कुरेदनी आदि के द्वारा निकाल कर उसे साफ़ किया। १० जनवरी को उन्हों ने उस के पास के मसूढ़े में चीरा दिया, जिस से बहुत सा ख़ून निकला। अभी तक असल तकलीफ़ चली चलती है। दिन तो किसी न किसी तरह कट जाता है, परन्तु रात में तक-लीफ़ के बढ़ जाने से बहुत बेचैनी रहती है।

मेरी दाढ़ का दर्द रात में बहुत बढ़ जाता रहा है, और मैं उसके कारण कई २ घंटे सो नहीं सका। बहुधा

ग्यारह वा बारह बजे रात से यह पीड़ा बढ़ती है। अभी तक कोई दवा पूर्णतः ठीक और मुफ़ीद नहीं मिली। इन दर्दों से शरीर बहुत दुर्बल होगया है। १५ जनवरी से मौसम के ख़राब होजाने से मेरे पहले से बिगड़े हुए गले को भी बहुत हानि पहुंची है। छाती में बलग़म पैदा होगया है और कुछ २ खांसी होती है। दाढ़ की चीसों का असर कान और कनपटी तक पहुंचता है, और उन दोनों में भी दर्द होता है।.........जी दो दिन के लिए फ़ीरोज़पुर गए हुए हैं। मैंने अपने कष्ट और दुःख के कारण उन्हें यहां ठहरा लेना मुनासिब नहीं समझा। यद्यपि जिस दिन मैं रात के समय दाढ़ के दर्द से बहुत बेचैन था, और वह उस रात आश्रम में हि थे, तथापि मैंने उनके प्रोग्राम में कुछ विघ्न नहीं डाला।

अब तक यह स्थान और ऋतु दोनों हि मेरे लिए प्रतिकूल प्रमाणित हुए हैं। यदि एक रोग कुछ घटता है, तो दूसरा बढ़ने लगता है। दाढ़ के दर्द में दो तीन रातों से कमी है, परन्तु २३ जनवरी से बलग़म की ज़्यादती से आधा सीसी का अति कष्टदायक दर्द पैदा होगया है। तीन चार बजे सुबह से लेकर दोपहर तक यह दर्द रहता है। लिखना पढ़ना बहुत मुशकिल होगया है। पेट भी ठीक नहीं। जोड़ों का दर्द अलग सताता है। इधर शरीर की यह दशा है, उधर आत्मा अपने विविध सम्बन्धों में नाना प्रकार के कर्तव्य पालन से वंचित होने से किसी

तरह आराम नहीं पाता !! सचमुच ऐसे औज़ार का क्या फ़ायदा, जो भली भांत काम में न आसकता हो, और जिस से काफ़ी हित न निकलता हो ? पर अब तो जो कुछ हालात पैदा होचुके हैं, उन्हीं में जहां तक अधिक से अधिक शुभ की सम्भावना हो सकती है, वहां तक पुरुषार्थ करने की आवश्यकता है। यदि प्रबन्ध हो सका, तो कुछ दिनों के लिए मैं जल वायु के परिवर्तन के निमित्त यहां से कहीं बाहर जाना चाहता हूं।

दाढ़ का कष्ट बराबर जारी है। उसके दूर करने के लिए कई यत्न किए परन्तु सभी निष्फल प्रमाणित हुए। रात्रि के समय प्रायः ग्यारह बजे के बाद से कई बार यह दर्द इतना बढ़ जाता है, कि जिस से मैं बहुत बेचैन रहता हूं, और सो नहीं सकता। मसूढ़ों में वर्म भी बहुधा हो जाता है, और खाना खाने में बहुत दिक्क़त होती है। मैं दाढ़ को उखड़वा नहीं सकता—उखड़वाना पसन्द भी नहीं करता, वह कुछ ज़्यादा हिलती भी नहीं। मैं चाहता हूं कि उस का दर्द दूर हो जाए, और बस। परन्तु अब तक वह किसी उपाय से दूर नहीं हुआ। मैं यहां रहना नहीं चाहता, परन्तु यहां से बहुत दूर जाने में किराए और अन्य ख़र्च के लिए बहुत रुपया चाहिए, और यदि यह निश्चय हो सकता, कि अमुक स्थान में जाने से ज़रूर फ़ायदा होगा, तो भी मैं किसी न किसी तरह वहां जाने के लिए यत्न करता। परन्तु ऐसा निश्चय दिलाने वाला

कोई नहीं । यदि सचमुच कोई मंगलमय और सर्व्वज्ञ ईश्वर होता, तो कितनी बड़ी सहूलियत होती। मैं उस से इस विषय में पूछ लेता, और वह मुझे ठीक बात बता देता, और मैं इस बात को जान कर कि अमुक दवा से वा अमुक स्थान में जाकर रहने से निश्चय फ़ायदा होगा, उसी उपाय को ग्रहण कर लेता !! परन्तु शोक कि ऐसा कोई ईश्वर नहीं है !!!

३० जनवरी को रात के ग्यारह बजे के बाद से मेरे दाढ़ का दर्द बहुत बढ़ गया, जिस से मैं कई घंटे तक बेचैन रहा । मेरे मसूढ़े भी सूजे हुए हैं । पेट में हवा के सबब से बहुत कष्ट रहता है । दाढ़ के दर्द के साथ २ बाएं कान और बाईं आंख के ऊपर माथे में भी दर्द हो जाता है ।

फ़रवरी :—

पहली फ़रवरी १९१० (मंगलवार) की रात को मेरी दाढ़ का दर्द इतना अधिक बढ़ गया, कि मैं उसके कारण बहुत तड़पता रहा । मुझे बुख़ार भी होगया । कितने हि दिनों के लगातार दर्द और बीमारी में भी कई प्रकार के मान्सिक काम काज करते रहने से, मेरा शरीर यहां तक कमज़ोर हो चुका है, कि मैं अगले दिन हजामत बनवाते समय कुछ देर के लिए मूर्छित होगया । कुछ घंटे के बाद फिर एक काम करते २ मुझ पर मूर्छा का असर हुआ, और मैं उसके छोड़ने के लिए मजबूर

हो गया। ४ फ़रवरी को मैंने एक बंगाली कविराज को बुला कर अपने दर्दों और अपनी स्नायविक-दुर्बलता का हाल बताया। उन्हों ने नाड़ी देखी, और घर जाकर मेरे लिए कुछ गोलियां भेजदीं; जिन्हें मैं उनकी व्यवस्था के अनुसार एक वा दूसरे अनुपान के साथ खाता रहा। उनके सेवन से मुझे कुछ फ़ायदा हुआ। पहले मेरा टेम्परेचैर ( शारीरिक ताप ) जो उचित दर्जे से बहुत नीचे चला गया था, उस में धीरे २ बेहतरी आई, और वह उन्नत होकर ६८ के लग भग तक आगया।

शारीरिक कष्ट के अधिक बढ़ जाने से मैंने ३ फ़रवरी से मैदान की कुटिया का निवास छोड़ कर देवाश्रम में फिर रहना शुरू किया। ७ फ़रवरी को मैंने डाक्टर ............को बुला कर उन से अपने शरीर की परीक्षा कराई। उन्हों ने मेरे "दिल" को पहले सालों की तरह अब भी कमज़ोर बताया, और जिगर की बाबत कहा, कि वह पहले से सुकड़ कर कुछ छोटा हो गया है। दर्द के बहुत घट जाने के बाद, १५ फ़रवरी को मंगलवार के दिन मैंने डाक्टर............के पास जाकर अपनी दाढ़ भरवाई। उसके बाद से उस में कोई उत्कट पीड़ा नहीं हुई। प्रायः दो सप्ताह तक मैं वैद्य की दी हुई गोलियां खाता रहा। उसके बाद उन्हों ने दूसरी दवाई दी। परन्तु वह अनुकूल न मालूम हुई। इसलिए दो तीन दिन के बाद मैंने उसका सेवन छोड़ दिया। इन्हीं दिनों उपदेश

विषयक अधिक काम करने से सिर में तकलीफ़ हो जाती रही।

मार्च :—

६ मार्च को प्रायः सारे दिन पेट में और रात को सारे शरीर में बहुत दर्द रहा। फ़ीरोज़पुर के निवास के दिनों में मेरी स्वास्थ्य और स्थानों की अपेक्षा कुछ बेहतर थी; परन्तु सोलन में पंहुच कर मेरी स्वास्थ्य अधिक ख़राब हो गई। यहां पर कुछ दिन ज़ुकाम के भिन्न बदन में दर्द की बहुत शिकायत रही, जिस से कमज़ोरी बहुत बढ़ गई। दोपहर के बाद से दुर्ब्बलता बढ़ती रही है, और शाम को थोड़ा सा चलना फिरना और बोलना चालना भी दूभर मालूम होता रहा है।

अप्रैल :—

मैं जब से सोलन में आया हूं, तब से बराबर बीमार हूं। अप्रैल मास में अजीर्ण रोग के कारण,

(१) मेरी भूख बहुत घट गई,—कभी २ बिलकुल न लगती, कभी बहुत कम लगती, इस लिए ख़ूराक बहुत थोड़ी हो गई।

(२) पेट में हवा पैदा होती रही, और वह फूल जाता रहा।

(३) पेट में हवा के बढ़ जाने से डकारें आती रहीं।

(४) पेट में कई वार बे आरामी रहती रही।

(५) क़ब्ज़ रहता रहा।

(६) मुंह का ज़ायक़ा ख़राब रहा।

इन कष्टों के भिन्न मुझे दो बार ज़ुकाम हुआ, जिस से कई दिन बुख़ार भी हो जाता रहा।

२२ अप्रैल से जोड़ों के दर्द और खांसी की तकलीफ़ बहुत बढ़ गई। कुछ २ बुख़ार भी होने लगा। तब से घर में पड़ा हुआ हूं। इन कई प्रकार की पीड़ाओं से मेरा शरीर जो पहले हि दुर्ब्बल था, अब इतना अधिक दुर्ब्बल हो गया है, कि मेरे लिए मकान के अन्दर भी चलना फिरना मुशकिल हो रहा है। दिमाग़ इतना कमज़ोर हो गया है, कि किसी चिट्ठी की चन्द सतरों के पढ़ने से भी क्लेश मालूम करता है।

मई :—

मैं बराबर बीमार हूं। मई के दूसरे सप्ताह में मेरी दुर्ब्बलता में कुछ कमी आई थी, परन्तु १८ मई की शाम से मुझ पर स्नायविक दुर्ब्बलता का फिर ज़ोरदार आक्रमण हुआ, और मैं फिर बिस्तरे पर पड़ गया। इसके साथ हि मेरी खांसी भी बढ़ गई, और मेरे जोड़ों का दर्द भी ज़्यादा हो गया।

२० मई की रात मैंने बहुत बेचैनी से काटी। २१

मई को मैंने डाक्टर आरगल्स साहब को बुलाया। उन्हों ने देख भाल के बाद मेरे हृदय पिंड अर्थात् दिल को बहुत कमज़ोर बताया। उन्हों ने अपना एक व्यवस्था पत्र दियी। २४ मई को वह फिर आए और उन्हों ने मेरे गले में रोशनी डाल कर उसकी परीक्षा की। गले के नीचे "लेरिंग्स" में ख़राबी देख कर उन्हों ने उसी को मेरी खांसी का कारण बताया। उन्हों ने फिर एक नया नुसख़ा दिया, और उस में कुछ आवश्यक परिवर्तन के बाद मैं कई दिनों से उसी का सेवन करता रहा। अगले दिन रात को यहां पर एक बहुत बड़ा तूफ़ान आया, कि जिस से मेरे मकान को भी कुछ हानि पहुंची। २७ को बहुत ज़ोर दार वर्षा हुई। मौसम में इस प्रकार का अचानक परि- वर्तन मेरे रोगी शरीर के लिए हानिकारक प्रमाणित होता है।

३० मई को प्रायः ८ घंटे तक मेरे पेट में दर्द रहा। पेट में वायु पैदा हो जाती है, और अजीर्ण के कारण उस में तकलीफ़ रहती है। खांसी भी बहुत कष्ट दायक है।

इस बीमारी में बाज़ जनों से बहुत कुछ शुश्रूषा मिली, कई जनों से ऐसे पत्र वा तार मिले, कि जो दिल को छूने वाले थे। परन्तु कई निकट और बाहर के जिन सेवकों वा सम्बन्धियों के हृदय सहानुभूति से शून्य हैं, वह पहले की न्याईं कठोर हि प्रमाणित हुए। यदि किसी

जन के शरीर और आत्मा दोनों के पालन में किसी का हाथ हो, और वह अपने ऐसे पालन कर्ता और परम हितकर्ता के सम्बन्ध में भी कृतज्ञता के विचार से न केवल यह कि पूर्णतः खाली हो, किन्तु कई अवसरों पर अपनी किसी नीच वासना के वशीभूत होकर अत्यन्त कृतघ्न प्रमाणित हुआ हो, तो यह दृश्य मनुष्य जगत् में बहुत बुरा और शोकमय समझा जाता है। परन्तु नेचर का नियम अटल है। जब तक किसी ऐसे जन में अपने किसी पाप के लिए परिशोध विषयक सात्विक भाव जाग्रत न हो, और जब तक वह किसी के सम्बन्ध में अपने पाप वा अपराध के लिए यथेष्ट परिशोध करने के योग्य न बने, तब तक उसके आत्मिक विकाश का मार्ग बन्द रहता है, और एक समय में सदा के लिए बन्द हो जाता है। कैसा भयंकर परिणाम !!

रोग शय्या पर पड़े हुए कई वार मैंने अपने शरीर को अपने जीवन व्रत के कार्य्य में अक्षम और अयोग्य पाकर यह आशंका अनुभव की, कि कहीं ऐसा न हो, कि मेरे शरीर के जवाब दे जाने से मनुष्य मात्र के लिए परम आवश्यक देव शास्त्र का काम हि पूरा होने से रह जाए। ऐसे समय में इस भाव के पैदा होने से मेरा दिल भर २ आया, और अन्य दिनों की तरह इस विषय में अपनी मंगल कामनाओं को जारी रखने के भिन्न मैं कई वार चारपाई पर पड़े २ और पेन्सिल हाथ में पकड़े हुए,

जहां तक उस समय मेरे लिए सम्भव था, उसके पुनः अवलोकन का काम करता रहा।

जून :—

पहली जून को डाक्टर आरगिल्ल ने मुझे फिर देखा। परीक्षा के बाद उन्हों ने मेरे सम्बन्ध में इस विषय का एक सर्टीफ़िकेट लिखा, कि मेरी जैसी हालत है उस के विचार से वह मुझे तीन महीने तक सफ़र के लायक़ नहीं समझते। मैंने यह सर्टीफ़िकेट अपने आवेदन पत्र के साथ फ़ीरोज़पुर में मिस्टर वीज़ले साहब की सेवा में भेज दिया। उनकी अदालत में श्रीमान् सरमुख सिंह बनाम लक्ष्मण दास के मुक़द्में में गवाही देने के लिए मेरे विरोधी लाला लक्ष्मण दास ने मुझे समन के द्वारा बुलाया था।

इन्हीं दिनों में एक कर्म्मचारी के यहां आने पर मुझे उनके और कई दिनों तक उनके भिन्न कुछ और कर्म्मचारियों के साथ कई सामाजिक विषयों पर आलोचना और बातचीत करनी पड़ी, और कुछ आवश्यक लेख भी लिखने पड़े, जिस से मेरे रोगी शरीर को अत्यन्त हानि पहुंची। ५ जून की शाम को मुझ पर स्नायविक पीड़ा का तीसरा आक्रमण हुआ। यह आक्रमण जैसी कि आशा हो सकती थी, पहले दोनों आक्रमणों से बहुत अधिक तीव्र था। मेरे हाथ पांव आदि सब अंग शिथिल

हो गए। मेरी आवाज़ बहुत नीचे चली गई—मेरे लिए मुंह से बोलना कठिन हो गया। ज़ोर लगा कर बोलने की कोशिश करने पर कई बार मैं एक फ़िक़रा तक ठीक न बना सकता—वाक् शक्ति पर मेरा अधिकार न रहा। मस्तिष्क के साथ २ दिल भी बहुत दुर्बल हो गया। सोमवार को दोपहर के बाद डाक्टर आरगिल्स ने मुझे फिर देखा। उन्हों ने दिल को बहुत कमज़ोर पाया। दवाई होने लगी। मंगल को श्रीमान्.........जी को गवाही के लिए फ़ीरोज़पुर को जाना पड़ा। वह न चाह कर भी लाचार होकर रवाना हो गए। मैंने भी ख़ुद ज़ोर देकर उन्हें भेज दिया। परन्तु मेरी हालत और भी अधिक ख़राब हो गई। इधर कोई वाकिफ़कार आदमी मेरे पास नहीं, उधर मेरी संकट मय अवस्था !! मैं श्रीमान् जी को तार देने के ख़याल में हि था, कि उन तक मेरे दिल का तार पहुंच गया। उनकी गवाही न हुई, और वह बृहस्पति की दोपहर को यहां वापिस आगए। अगले दिन जब श्रीमान् जी अपने सुबह के साधन में बैठे, तब अचानक उनके हृदय में मेरे रोग के सम्बन्ध में कई एक वैद्यक दवाईयों का ख़याल पैदा हुआ। उन्हों ने मुझ से उनका ज़िकर किया। मैंने कहा कि उन्हें आज़मा सकते हैं। उसी दिन सुबह को मैंने अपनी बहुत नाज़ुक हालत देखकर समाज के सम्बन्ध में विचार करते २ उसके परिचालन के लिए अपनी कुछ आवश्यक आज्ञाएं छोड़ जाने

के निमित्त एक लेख लिखवाया। दोपहर के बाद बहुत निराशा पैदा हो गई। रात के समय जब कई जन मेरे पास मंगल कामना करने के लिए एकत्र हुए, तब उनके साथ मेरे शुभ चिन्तक कई परलोक वासी आत्मा भी उस में योग देने के लिए पहुंच गए। इन परलोक वासियों में एक जन वैद्य भी थे। उन्हों ने एक मीडीयम के द्वारा मेरे लिए एक नुसख़ा बताया, और उस में उन्हों ने प्रायः वही चीज़ें प्रगट कीं, कि जिनका श्रीमान्...........को अपने सुबह के साधन में ख़याल गुज़रा था। अगले दिन से वही औषधि आरम्भ की गई। और उसके साथ २ अंग्रेज़ी दवाईयों का एक मिक्सचर भी शुरू हुआ। ११ जून को कान्ति जी भी मेरे पास पहुंच गए। इसी दिन विकाश भी आगई। मेरी अपनी मंगल कामनाओं, मेरे परलोक और इस लोक वासी सम्बन्धियों की मंगल कामनाओं, औषधि और संयम से धीरे २ मेरी हालत ने फिर पलटा खाया। मेरे दिल की कमज़ोरी कुछ २ घटने लगी। १६ जून से ऐसा बोध हुआ, कि मैं अब ख़तरे से बाहर हो गया हूं। तब से बहुत धीमी २ बेहतरी की गति जारी है। प्रधान रोग के साथ २ पीठ और कन्धों में बहुत दर्द रहा, सिर में भी पीड़ा और पेट में बहुत वायु उत्पन्न होती रही, कोष्ट बद्धता की पुरानी शिकायत भी जारी रही। इस समय में ईश्वर सिंह जी की साधारण सेवा के भिन्न ........जी ने चिकित्सा विषयक बहुत प्रशंसनीय सेवा

की। उनका ऐसे समय में मेरे पास रहना बहुत कल्याण-कारी प्रमाणित हुआ।

डा० आरगिल्स के चाहने पर मैंने उन्हें अपना एक फ़ोटो मंगवा कर दिया, और २० जून को उसके नीचे अपने हाथ से अपना नाम लिख कर उनके पास भेज दिया। २२ जून को हवा का दुबारा तूफ़ान आया, और उसके साथ २ बारिश भी हुई। इस से मौसम में परिवर्तन के पैदा हो जाने से मेरी सेहत को फिर कुछ हानि पहुंची। २५ जून को श्रीमान्.........जी धर्म्मपुर को गए और वहां डाक्टर बैनरजी से मिले। मिस्टर बैनरजी तीस साल से प्रयाग में चिकित्सा का काम करते रहे हैं। बहुत तजरबेकार आदमी हैं। चिकित्सा विषयक पुस्तकों के अलावा सायंस और फ़िलासफ़ी का अध्ययन भी करते रहते हैं। २६ जून को वह मेरे पास आए, और कई घंटे तक मेरे आश्रम में हि ठहरे रहे। उन्हों ने मेरी परीक्षा की। उन्हों ने मेरी स्नायविक प्रणाली को हि मुख्यतः अत्यन्त दुर्बल बताया। उन्हों ने मुझे सब प्रकार के लिखने पढ़ने के काम से पूर्णतः विरत रहने की बहुत ज़ोर-दार हिदायत की। कई औषधियां तजवीज़ कीं। इसी दिन रात को डाक्टर आरगिलस भी मित्र भाव से मुझ से मिलने के लिए आए, और मेरी सेहत की बेहतरी पर अपनी ख़ुशी ज़ाहर कर गए।

अब कई दिन से बारिशें हो रही हैं। पहाड़ों पर

हरयावल आगई है, आश्रम में बहुत से पौदे फूल दे रहे हैं। अब यद्यपि मुझ में इतना बल आगया है, कि मैं अपने आश्रम में कुछ दूर तक चल फिर सकता हूं, तथापि मेरी और कई तकलीफें चली चलती हैं। सिर अब तक इतना कमज़ोर है, कि थोड़ा सा लिखने, पढ़ने वा थोड़ी सी बातचीत करने से उस में तकलीफ़ पैदा हो जाती है। इधर निहायत कमज़ोर सिर मेरा साथ नहीं देता, उधर ख़ाली रहना मेरे लिए बड़ी मुसीबत है। इस लिए बड़ी दिक्क़त रहती है। मेरी इस सख़्त बीमारी के समय देव समाज के जिन २ जनों ने मेरे लिए मंगल कामनाएं की हैं, अथवा मुझे सहानुभूति के पत्र लिखे हैं, अथवा किसी और प्रकार से मेरी सहाय की है, उनके प्रति मैं अपनी प्रसन्नता का प्रकाश करता हूं।

जुलाई :—

जिस चटनी की श्रीमान्.........जी ने व्यवस्था की थी, उसका सेवन तो पहले से हि जारी था। पहली जुलाई से डाक्टर बैनरजी की बताई हुई एक और औषधि का सेवन भी आरम्भ किया गया। दोनों दवाएं अच्छी प्रमाणित हुईं। ६ जुलाई को मेरे नाम लछमण दास वाले मुक़द्दमे में रजिस्ट्री के द्वारा फिर समन आए; और ११ को डाक्टर आरगिल्स साहब ने मेरी फिर परीक्षा करके मुझे एक और सर्टीफ़िकेट दिया; जिस में उन्हों ने लिखा कि

मैं अभी दो महीने तक सफ़र करने के योग्य नहीं हूं। मैंने अपने आवेदन पत्र के साथ यह सर्टीफ़िकेट फिर फ़ीरोज़पुर की अदालत में भेज दिया। वहां से फ़ैसला हुआ, कि मेरी गवाही सोलन में हि एक खुले "कमीशन" के द्वारा ली जाए। उम्मीद है, अगले महीने में यहां पर मेरी शहादत होगी।

उपरोक्त औषधियों के सेवन से यद्यपि मुझे अच्छा फ़ायदा हुआ है, तथापि अभी मैं बहुत दुर्बल हूं—सिर ख़ास कर बहुत कमज़ोर हैं। इस के भिन्न छोटी २ और शिकायतों को छोड़ कर जोड़ों के दर्द की भी कितने हि दिनों से फिर ज़्यादा तकलीफ़ है।

अगस्त :—

अगस्त मास में जोड़ों के दर्द के भिन्न मेरी बांई टांग के घुटने और उसके पास के पट्ठों में बहुत पीड़ा रही, जिस से कई बार मामूली तौर से चलने फिरने में भी मुझे बहुत दिक्कत रही। यह पीड़ा अभी तक नहीं गई। कुछ दिनों के सिवाय इस मास में भी औषधि का सेवन जारी रहा है, और उस से कुछ न कुछ फ़ायदा हुआ है। इस महीने में पहले की अपेक्षा मैंने काम भी अधिक किया है। मान्सिक परिश्रम के अतिरिक्त कई घंटे भौतिक, और उद्भिद जगत् की सेवा में खर्च करता रहा हूं, और मेरे

साथ और कई जन भी काम करते रहे हैं। मेरे आफ़िस के सामने नए सेहन और उसकी बाईं ओर के पुश्ते के नीचे कई क्यारियों और छोटे २ खेतों के बन जाने से आश्रम की शोभा बहुत बढ़ गई है। फूल भी बहुत हैं। और मुझ जैसे दुर्बल शरीर धारी के लिए ऊपर के सेहन में टहलने के वास्ते बहुत अच्छी और काफ़ी जगह बन गई है। मैं अकसर अपने इसी नए सेहन पर टहला करता हूं। अपने हाथों से भौतिक और उद्भिद जगत् की कई २ घंटे तक विविध प्रकार की सेवा करके मेरा हृदय बहुत तृप्ति और शरीर बहुत स्फूर्ति लाभ करता रहा है। इन दोनों के भिन्न मनुष्य और पशु जगत् के कल्याण के निमित्त भी मैं एक वा दूसरे प्रकार की सेवा करता रहा हूं।

सितम्बर :—

मैं अपनी टांग में जिस दर्द के पैदा होने का ज़िकर कर चुका हूं, उस में कई सप्ताह के अनन्तर कुछ दिनों तक कमी रही, परन्तु उसके बाद से फिर ज़्यादती है, यद्यपि पहले की न्याई बहुत क्लेश दायक नहीं है। गवाही के दिनों में मेरी सेहत को बहुत हानि पहुंची—यहां तक कि तीसरे दिन शाम को मुझे अपने दिमाग़ की सख़्त कमज़ोरी और सिर की तकलीफ़ से यह प्रतीत होता था, कि शायद चौथे दिन में कोर्ट में जाने के योग्य न रहूंगा।

परन्तु मैं इस प्रकार के विघ्न को हरगिज़ २ पसन्द न करता था। आख़िरकार मैं उस में से गुज़र गया। उसके बाद से मेरी सेहत का रुख़ बेहतरी की तरफ़ है।

अकतूबर :—

सोलन से लाहौर में आने के बाद वहां की ख़राब हवा में रहने से, जैसा कि मुझे पहले हि अन्देशा था, धीरे २ मेरे गले को फिर हानि पहुंची। २३ अकतूबर को पूजनीया जी की विवाह सम्बन्धी रौपक जुबीली के अवसर पर मुझे प्रायः एक घंटे तक बोलना पड़ा, जिस से मेरे गले को ख़ास करें बहुत नुक़सान पहुंचा। इस हानि से पहले सालों की तरह खांसी शुरू हो गई, और बलग़म जारी हो गया। सोलन में रवानगी से कई दिन पहले कुछ हरारत भी होती रही थी। लाहौर से फ़ीरोज़पुर में जाने पर मेरी सेहत और भी ख़राब हो गई। गले की ख़राबी के भिन्न नज़ले, खांसी और सिर और बदन में दर्द और कुछ ज्वर आदि के कारण दो दिन तक बहुत तकलीफ़ रही।

नवम्बर :—

नवम्बर के शुरू में कई शिकायतें रहीं। फिर कुछ दिन तक अपेक्षा कृत सेहत अच्छी रही। दो दिन दिमाग़ से बहुत अधिक काम लेने के कारण सिर में तकलीफ़ रही। २० नवम्बर के उपदेश से गले को बहुत हानि

पहुंची। तब से गला बराबर ख़राब हालत में है। उसके अच्छे होने के लिए दवा के भिन्न उसे जिस विश्राम की बहुत ज़रूरत है, वह उसे प्राप्त नहीं। मुझे एक वा दूसरी सामाजिक ज़रूरत के कारण उस से बराबर काम लेना पड़ता है, और इसी लिए वह अच्छा होने में नहीं आता। २५ नवम्बर की शाम को श्रीमान्............फ़ीरोज़पुर में मिले। मैं यद्यपि इस समय क्या शरीर की दुर्बलता और क्या उस से भी बढ़ कर गले की सख़्त तकलीफ़ के कारण उन से बात चीत करने के योग्य न था, तथापि यह जान कर कि उन्हों ने मुझ से ख़ुद अलग मिलने के लिए कोई अवसर नहीं ढूंढा, मैंने इस अवसर को ग़नीमत समझ कर उन से बात चीत शुरू की। पहले मैंने उनके उन प्रश्नों के उत्तर दिए, कि जो उन्हों ने मुझ से अपने एक पत्र के द्वारा पूछे थे। फिर मैंने उनकी आत्मिक अवस्था के सम्बन्ध में अत्यन्त आवश्यक बात चीत की। इस से यद्यपि उन्हें आत्मिक लाभ तो अवश्य हुआ, परन्तु मेरे गले को फिर अधिक हानि पहुंची। समाज के नाना कामों के सम्बन्ध में मेरे लिए इस प्रकार अपनी सेहत को नष्ट करना और अपने लिए किसी रोग को पैदा करना वा बढ़ा लेना एक मामूली बात है।

दिसम्बर :—

उपदेशों के परिश्रम से यद्यपि दिसम्बर के आरम्भ

से ही गले को हानि पहुंच चुकी थी, तथापि प्रति दिन आवश्यक कामों के सम्बन्ध में बहुत सी बात चीत और आलोचना करनें और बीच २ में उपदेशों के देते रहने से, यह तकलीफ़ बराबर जारी रही। ईश्वर बिश्वासी लाला कांशीराम की झूठ बयानियों और मि० वेलिंकर की ओर से अपने व्याख्यान में हम लोगों को "ब्रट" आदि कहने से मुझे बहुत आघात् लगे, और बहुत क्लेश पहुंचा और बहुत समय तक यह क्लेश जारी रहा। एक वार अधिक मान्सिक परिश्रम करने और दो बार कई और कारणों से सिर दर्द और कभी २ सारे शरीर में भी दर्द रहा। इसके भिन्न दो तीन दिन पेट में भी दर्द की तकलीफ़ रही।

## ( १९११ )

जनवरी :—

इस मास में मैं पहले १६ दिन फ़ीरोज़पुर में और बाक़ी के दिन लाहौर में रहा। इस महीने में कई वार सिर और जोड़ों की और कई दिन बादी से पेट में अफारे की तकलीफ़ रही। मान्सिक काम की अधिकता ही इस तकलीफ़ का मुख्यतः कारण है। जोड़ों के दर्द की शिकायत बहुत पुरानी है।

फ़रवरी :—

इस महीने में पहले १८ दिन तक मैं लाहौर में

रहा, और फिर १६ तारीख़ को फ़ीरोज़पुर चला गया, और बाक़ी के दिनों में वहीं रहा। इस मास में देव शास्त्र विषयक एक यज्ञ के लिखने में कितने दिनों तक दिमाग़ पर बहुत ज़्यादा ज़ोर पड़ा, जिस से सारी स्नायु प्रणाली (Nervous system) को हानि पहुंची। पहले कुछ दिनों तक सिर में दर्द होता रहा, फिर १२ तारीख़ से क़ब्ज़ की तकलीफ़ बढ़ गई। उसके साथ २ सारे शरीर में, विशेष कर कमर पीठ और कन्धों में, बहुत दर्द रहने लगा, और सिर भी ख़राब रहा। कई प्रकार की दवाइयां खाईं, किसी २ समय का खाना भी छोड़ा, परन्तु फ़ायदा न हुआ। १५ तारीख़ को कन्धों और पीठ आदि के दर्दों से नीन्द में ख़ास कर बहुत व्याघात् रहा। कई दिन तक बाहर भी फिरने नहीं जा सका। कमज़ोरी बढ़ गई है।

मार्च :—

मेरी सेहत बराबर ख़राब चली चलती है। कितने काल तक अतिशय मान्सिक परिश्रम करने से उसे बहुत हानि पहुंची है। जैसी कि आशा की जा सकती थी, पहले पहल पेट के सम्बन्ध में इस हानि के अशुभ लक्षण दिखाई दिए—अर्थात् उस में क़ब्ज़ की शिकायत पैदा हो गई। फिर क्या इस से और क्या मान्सिक दुर्ब्बलता से जोड़ों का दर्द बहुत बढ़ गया। पेट में हवा की बहुत ज़्यादती हो गई, जिस से अंतड़ियों में भी कई वार दर्द

होता रहा। इन सब दर्दों से कई रातों नीन्द में भी बहुत व्याघात् रहा। शरीर की दुर्बलता अधिक हो गई। एक २ वार मुंह से कुछ बोलना तक दूभर हो गया। परन्तु इस रोगी अवस्था में भी मैं अपने आत्म-बल के द्वारा शरीर से जबरन काम लेता रहा, और अपने इसी आन्तरिक बल के कारण क्या, अपनी बात चीत और क्या किसी विषय की आलोचना, वा किसी विषय में उपदेश आदि के समय मैं सेहत वालों की तरह बोलता और काम करता रहा। इस सब से शरीर को बराबर हानि पहुंचती रही। लेकिन इन हालात को जान कर भी कई जनों ने केवल मुंह के द्वारा यह पूछ लेने के सिवाय कि "आपकी सेहत कैसी है?" कभी मेरी स्वास्थ्य के बेहतर करने के लिए कोई ज़रूरत अनुभव नहीं की।

अप्रैल :—

इस महीने में भी बदन में दर्द और कमज़ोरी के भिन्न, पेट और आंखों के सम्बन्ध में एक वा दूसरी तकलीफ़ जारी रही। २६ अप्रैल से शरीर की दुर्बलता बढ़ने लगी—एक जन की उलटी गति से आघात् पाकर २८ की रात मेरी बहुत क्लेश से कटी, और ३० को दिल दिमाग़ और सारे शरीर की दुर्बलता इतनी अधिक हो गई, कि मेरे लिए मुंह से बोलना तक बहुत कठिन हो गया।

मई :—

३० अप्रैल की शाम से सिर की अत्यन्त दुर्बलता से बोलना बहुत कठिन हो गया। लिखना तो मुशकिल हो हि चुका था, अब कुछ पढ़ना भी दूभर हो गया। शरीर साथ नहीं देता। अब सड़क से अपनी पहाड़ी पर चढ़ कर आश्रम तक पहुंचना भी सहल नहीं रहा। ४ मई को डाक्टर बैनरजी ने धर्म्मपुर से आकर देखा। इस बार भी उन्हों ने दिल की चाल और स्नायु प्रणाली (Nervous system) को बहुत कमज़ोर बताया। उन्हों ने कुछ दवा तजवीज़ की। परन्तु वह ठीक न बैठी। इस कमज़ोरी के भिन्न जोड़ों के दर्द की पुरानी तकलीफ़ भी होती रही। आंखें ख़राब रहीं। पेट में हवा के अधिक पैदा होने और क़ब्ज़ से जुदा तकलीफ़ रही। नीचे की एक दाढ़ हिलती है, उस में वर्म रहता है, उस से भी तकलीफ़ रहती है। ऊपर के तीन चार दान्त भी हिलते हैं, खाना ठीक तरह से चबाया नहीं जाता। कुछ अधिक पढ़ने वा बोलने से सिर दर्द हो जाता है। २२ मई को दिल दिमाग़ और शरीर की कमज़ोरी से बहुत बेचैनी रही। २३ को रात के आठ बजे से दिल डूबने लगा और बहुत घबराहट रही। गरमी भी ज़्यादा थी। इस बेचैनी में कभी दफ्तर के कमरे में और कभी बाहर सेहन में लेटता रहा, परन्तु सो नहीं सका।

जून :—

शारीरिक दुर्बलता चली चलती है। जोड़ों के पुराने दर्द इस दुर्बलता के बढ़ाने में विशेष कारण बनते हैं। इस महीने में पेट में हवा बहुत पैदा होती रही, जिस से बहुत देर तक डकारों के भिन्न कई २ घंटे पेट के तनाव से तकलीफ़ रही। क़ब्ज़ और बवासीर से कई दिन तक क्लेश रहा। कितने दिनों तक गर्मी से आंखें ख़राब रहीं। कई दिन तक एक कान में दर्द रहा। कितनी वार सिर ख़राब हो जाता रहा। कभी २ दाढ़ में तकलीफ़ रही। बदन के दर्दों से कई वार मैं इतना बेचैन रहा, कि कई रातों मैं अच्छी तरह सो नहीं सका।

जुलाई :—

इस महीने में अकसर बदन में दर्द और कमज़ोरी, पेट में हवा और तनाव और डकारों और कभी २ पट्ठों में अकड़ाव, सिर दर्द, आंखों में दर्द, पेट में दर्द, दाढ़ में दर्द और कुछ बवासीर की तकलीफ़ रही। एक रात बाएं घुटने में और एक रात प्रायः सारे बदन में दर्द के कारण बहुत बेचैनी और नीन्द बहुत ख़राब रही। कभी २ गर्मी से भी बेचैनी होती रही।

अगस्त :—

पेट में हवा की तकलीफ़ जारी रही। शरीर की

दुर्बलता के भिन्न बहुत अधिक मान्सिक काम करने से मस्तिष्क भी बहुत कमज़ोर और सिर में दर्द रहा। शरीर के अन्य अंगों में दर्द रहा। कभी २ कब्ज़ और बहुत दिन तक बवासीर से तकलीफ़ रही। गले की पुरानी शिकायत से भी कष्ट रहा।

सितम्बर :—

इस महीने में मसूढ़े के वरम और दाढ़ के दर्द से अकसर तकलीफ़ रही। पेट में हवा बहुत पैदा हुई। हर रोज़ घंटों डकारें आती रहीं, और पेट के तन जाने से कई वार उस में दर्द भी हो जाता रहा। चौथी तारीख़ को सिर और दाढ़ के दर्द से सारे दिन क्लेश और रात के समय नीन्द में बहुत व्याघात् रहा। कई वार बहुत अधिक मान्सिक काम करने से स्नायु प्रणाली (Nervous system) को बहुत हानि पहुंची। सिर में दर्द होता रहा और शारीरिक कमज़ोरी बहुत बढ़ गई। आवाज़ बहुत धीमी पड़ गई। दर्दों के कारण मैं कई रातों अच्छी तरह सो नहीं सका। दाढ़ की तकलीफ़ से खाना खाने में बहुत दिक्क़त रही—केवल बाईं तरफ़ से आहिस्ते २ कुछ चबा सकता था। बीच २ में जोड़ों का दर्द भी ज़्यादा रहा। १३ तारीख़ से ज़ुकाम और नज़ले का हमला हुआ; उस से कई दिन बहुत क्लेश रहा। छाती में जलन और खांसी हो गई। एक रात ख़ास कर बहुत

बेचैनी से कटी। एक रात को बाईं टांग में बहुत पीड़ा रही। ३० तारीख़ को समाज में प्रायः ऐसे अधिकारी जनों के अभाव की चिन्ता से कि जिन में उच्च गति विषयक क्रमशः विकाश हो सकता हो, कई घंटे तक नींद न आई। १६ तारीख़ को जब मैं अधिक बीमारी के कारण मंझे पर से न उठ सका, तब मैंने उस दिन लिखा कि "सवेरे से मंझे पर पड़ा हुआ हूं, काम करने के बिना किसी तरह जी नहीं लगता, समय काटना दूभर हो रहा है।"

अकतूबर :—

पेट में हवा के बहुत पैदा होने और अनेक वार पेट के बहुत तन जाने और उस में दर्द और घंटों तक डकारों के उठने के कारण बहुत क्लेश रहा। इसके भिन्न जोड़ों का पुराना दर्द भी होता रहा। चौथी तारीख़ को सारी रात और पांचवीं की दोपहर तक दर्द से बेचैनी रही। इस से कमज़ोरी बढ़ गई। छठी की रात को उच्च चिन्ता के दौर से नीन्द में बहुत व्याघात् रहा। ९ और १० को सोलन से लाहौर की ओर रवानगी के लिए नाना प्रकार की तैय्यारी में लगा रहा। ११ को अम्वाले पहुंचने पर रात में दर्द से बेचैनी रही। १२ को लाहौर पहुंचा। थकान से बदन चूर हो गया। अगले दिन एक मेहरबान डेन्टिस्ट के पास जाकर वह दाढ़ निकलवाई, कि जो

महीनों से सोलन में तकलीफ़ दे रही थी । लाहौर में पेट में दर्द हो जाता रहा, और जोड़ों का दर्द भी जारी रहा। कई दिन रात के पिछले भाग में एक वा दूसरे प्रकार के उच्च विचारों में प्रवृत हो जाने से नीन्द नहीं आई। २६ को गर्मी और हवा में बदबू आदि के कारण अच्छी तरह सो नहीं सका।

नवम्बर :—

इस महीने में अजीर्ण रोग से अधिक कष्ट रहा। क़ब्ज़ के भिन्न पेट में दर्द और वायु के अधिक होने और उसके फूल जाने से बहुत तकलीफ़ रही। डकारें भी आती रहीं।

दिसम्बर :—

अजीर्ण रोग का कष्ट जारी रहा । रात के समय प्रायः प्रति दिन मेरे सोने के कमरे में पड़ोस से धुएं के घुस आने से बहुत तकलीफ़ रही—उस से कई वार दम घुटता रहा। इधर मैं अपने कमरे की खिड़कियां नहीं बन्द कर सकता था, क्योंकि ऐसा करने से मुझे ताज़ी हवा नहीं मिल सकती थी, उधर सर्दी के मौसम के कारण धुआं बहुत ऊपर नहीं जाता था, इसीलिए मेरे कमरे में घुस आता था। पेट की ख़राबी से भूख कम लगती रही। सिर में तकलीफ़ और कमज़ोरी रही । कई वार

रात के समय एक वा दूसरे सामाजिक विषय पर चिन्ता के स्रोत के जारी हो जाने से नीन्द में बहुत व्याघात रहा।

## ( १९१२ ई० )

जनवरी :—

रात के पिछले भाग में जोड़ों का दर्द अधिक होता रहा है, जिस से नीन्द में भी व्याघात् रहा। सिर में दर्द और कमज़ोरी की शिकायत रही। अजीर्णता के कारण मुंह का स्वाद ख़राब रहा। गले में कष्ट रहा। एक बार कान में भी दर्द पैदा हो गया। आवाज़ बहुत धीमी रही। डकारों से भी तकलीफ़ रही।

फ़रवरी :—

जोड़ों के दर्द के बढ़ जाने से एक दिन बाहर न जा सका। पेट के बहुत तन जाने और गले में नज़ले के गिरने और जलन के होने से कई रातें बेचैनी से कटीं। बीच २ में पतले दस्त आते रहे। सिर दर्द और डकारों से बहुत तकलीफ़ रही। भूख कम हो गई। कमज़ोरी बढ़ गई। डाक्टर............ने देखा। उन्हों ने पेट का बढ़ जाना कई एक कष्टों का कारण बताया।

मार्च :—

इस मास में क़ब्ज़, पेट में हवा और डकारों के भिन्न

छाती में जलन, खांसी, बलग़म और दमकशी से बहुत तकलीफ़ रही। कमज़ोरी भी बहुत रही।

अप्रैल :—

अजीर्ण रोग से कुछ न कुछ कष्ट मिलने के भिन्न अतिशय मान्सिक परिश्रम करने के कारण २८ अप्रैल से सिर और स्नायु प्रणाली ( Nervous system ) को फिर बहुत बड़ी हानि पहुंची।

एक ओर मैं निकम्मा नहीं रह सकता, क्योंकि बिना काम करने के मेरा दिल घबराने लगता है, और मुझे किसी तरह चैन नहीं मिलता। दूसरी ओर दिमाग़ी काम के लिए मेरा कमज़ोर सिर और शरीर साथ नहीं देता। और किसी काम में मैं बहुत देर तक मसरूफ़ नहीं रह सकता, इस लिए बड़ी मुसीबत है !! कोई जन ऐसा नहीं जो मेरी इस दिक्क़त के दूर करने में उचित रूप से सहायक हो। क्या करूं, ऐसी अवस्था में अपने आपको निहायत असहाय और लाचार पाता हूं।

शाम को मैंने कुछ देर पौदों की कतर छांट का काम किया। समय काटना मेरे लिए मुशकिल हो रहा है।

मंझे पर पड़े २ घबरा जाने पर ३० अप्रैल की दोपहर के बाद मैंने कुछ अख़बारात पढ़ने की कोशिश की, परन्तु थोड़ा सा पढ़ते हि सिर चकराने लगा, और आगे

में कुछ न पढ़ सका। पांच बजे के क़रीब बाहर निकल कर आश्रम की कोठी की दीवारों के चारों तरफ़ जो कुछ घास उग आया था, उसे निकालने की कोशिश की, लेकिन उस में भी तकलीफ़ बढ़ने लगी, लाचार वह काम भी छोड़ दिया। इस दिन एक जन की एक ऐसी चिट्ठी मिली, कि जिसे पढ़ कर हृदय में बहुत आघात् लगा और दिल अधिक कमज़ोर हो गया। कई घंटे तक यह क्लेश जारी रहा। शाम से मेरे दिल की चाल बहुत ख़राब हो गई। मेरी कमज़ोरी इतनी बढ़ गई, कि मेरे लिए मुंह से एक शब्द निकालना भी बहुत कठिन हो गया।

मई :—

१ मई। बोलना निहायत मुशकिल। रात में भी नीन्द अच्छी न आई। सुबह अपने तौर पर कुछ औषधि पीं। प्रायः सारे दिन मंझे पर पड़ा रहा। बारह बजे के बाद अपनी बीमारी के विषय में दो जगह दो तार भिजवाए। रात को दस बजे के क़रीब एक बहुत बड़ा तूफ़ान आया। कुछ बारिश भी हुई। हवा इस क़दर ज़ोरदार थी, कि उस से मेरे मकान की छतों और झंडे के हिलने से बहुत भयानक शब्द निकलता था। इस भयानक शब्द का मेरे कमज़ोर दिल पर बहुत बुरा असर पड़ा, उस में घबराहट शुरू हुई, और प्रायः सारी रात होती रही। इस समय मैं हि बीमार और मैं हि अपना चिकित्सक था। थोड़ी २

देर बाद मैं गर्म पानी के कुछ २ घूंट पीता रहा, जिस से ताक़त के मिलने में मदद मिली। यह रात बहुत बेचैनी और तकलीफ़ से कटी।

२ मई। आठ बजे के क़रीब.........जी को बुलाने के लिए दो जगह दो तार भिजवाए—एक लाहौर को, दूसरा फ़ीरोज़पुर को। वह बारह बजे के लग भग सोलन पहुंच गए। उनके आने से बहुत तसल्ली मिली। प्रायः सारा दिन मंझे पर पड़े २ दिल उकता गया। काम से ख़ाली रह कर पड़े २ समय बिताना मेरे लिए जितना कठिन हो रहा है, उसका मैं बयान नहीं कर सकता।

३ मई से ६ मई तक :—

७ मई तक आश्रम में हि बन्द रहा। ८ को रिक्शा में बैठ कर बाहर गया। इन दिनों में भी मैं डाक सुनता रहा। सामाजिक कामों के विषय में फ़ैसले देता रहा। एक दिन धर्म्म संगीत के प्रूफ़ भी देखे। प्रायः प्रति दिन पौदों के सम्बन्ध में एक वा दूसरे प्रकार का काम किया।

दिमाग़ और दिल की कमज़ोरी के भिन्न बीच २ में डकारों की तकलीफ़ भी होती रही। जोड़ों में भी दर्द रहा। कई दिन तक आंखें भी ख़राब रहीं।

१७ मई की रात को पिछले भाग में समाज के जुबीली उत्सव के सम्बन्ध में कई प्रकार की चिन्ता रहने से नींद न आई।

२० मई को मैंने कुछ लिखने की कोशिश की परन्तु सफलता न हुई; दिमाग़ साथ नहीं देता।

(सूचना :—कई सालों से मैं अपनी बीमारी के विषय में जो नोट रखता था, उनका २० मई के बाद से लिखा जाना बन्द हो गया। इसलिए ऊपर की न्याईं मैं अब इस क्रम को और आगे नहीं बढ़ा सकता। मेरे स्वास्थ्य-त्याग के सम्बन्ध में जो हालात यहां तक दिए जा चुके हैं, वह काफ़ी से बहुत ज़्यादा हैं।)

# चौथा अध्याय ।

—:०:—

## ब्राह्म समाज का त्याग ।

———

### पहला परिच्छेद ।

—:०:—

### पंजाब ब्राह्म समाज के साथ मेरा सम्बन्ध और उसका त्याग ।

—:०:—

मैं रुड़की कालेज की नौकरी से पंजाब के सर्कारी शिक्षा विभाग में तबदील होकर सन् १८७३ ई० के अख़ीर में लाहौर में आया । मैं उन दिनों वेदान्त फ़िलासफ़ी को ठीक जानता था, और विश्व के कहलाने वाले स्रष्टा अर्थात् ईश्वर का पूर्ण विश्वासी था, और हिन्दुओं के नाना देवी देवतों को मिथ्या और एक इसी ईश्वर को सच्चा उपास्य मानता था। ब्राह्मण पुरोहितों की ओर से सैंकड़ों वर्षों से प्रचलित की हुई बहुत सी कुरीतियों को बुरा जान कर मैं उन्हें त्याग कर चुका था । मैं श्रीमद्भगवद्गीता पर बहुत श्रद्धा

रखता था, और स्तोत्र, पाठ, और प्रार्थना आदि कई प्रकार के दैनिक शुभ साधनों के करने का अभ्यासी था। मैं सत्य और हित विषयक उन्नतशील कई अनुराग भावों में विकशित हो चुका था; और अपने विश्वास और कथन के विरुद्ध कोई काम न करता था। मेरी पत्नी लिखी पढ़ी और प्रायः मेरे जैसे धर्म्म विषयक विश्वास रखती थीं, और मेरे जीवन के पथ में पूर्णतः सहाय और साथी थीं। मेरे लाहौर में आने से बहुत वर्षों पहले वहां ब्राह्म समाज स्थापित हो चुकी थी। मैं उसे अपने उस समय के विश्वास और मत और सामाजिक सुधार विषयक विचारों के बहुत निकट पाकर उसकी ओर आकृष्ट हुआ। एक अच्छे काल तक मैं उसके उद्देश्य और उस की शिक्षा आदि पर विचार करता रहा। फिर उन्हें ठीक जान कर जहां तक मुझे याद है, सन् १८७५ ई० में मैं उस में शामिल हुआ, और फिर प्रायः १२ वर्ष तक मेरा उसके साथ सम्बन्ध क़ायम रहा।

इस समाज में अपने शामिल होने की ठीक तारीख़ के जानने के लिए मैंने पंजाब ब्राह्म समाज के सेक्रेटरी को एक चिट्ठी लिखवाई, परन्तु उन्हों ने टाल मटोला करके वह तारीख़ न बताई।

शामिल होने के साल में हि अथवा उस से अगले साल समाज के लोगों ने मुझे अपने यहां के आचार्य्य

अर्थात् उपदेष्टा के पद पर वरण किया। सन् १८७६ ई० में मैं समाज की मैनेजिंग कमेटी का मेम्बर निर्व्वाचित हुआ। इसके भिन्न उन्हीं दिनों ब्राह्म धर्म्म प्रचार के लिए जो एक अलग "सोसाइटी फ़ार दी डिफ्यूज़न आफ़ थीइज़म" के नाम से बनाई गई थी, मैं उसका भी सेक्रेटरी चुना गया, और एक वर्ष के लग भग मैंने उसके सम्बन्ध में भी कई एक पुस्तकों के लिखने, अनुवाद करने और छापने आदि का काम किया। प्रायः सन् १८७७ ई० तक मैं इस समाज के सम्बन्ध में शान्ति पूर्व्वक काम करता रहा, और तब तक समाज और उसके परिचालकों की आन्तरिक अवस्था के विषय में मुझे कुछ अधिक जानने का अवसर न मिला। परन्तु उसके अनन्तर जो परदा उठा और उठता गया, उसके उठने से मैंने वर्षों तक जो २ कुछ देखा, और उस से जो २ कुछ दुःख सहा, और उन सब का मुझ पर जैसा कुछ असर हुआ, और फिर सन् १८८७ ई० में मैं इस समाज को सदा के निमित्त त्याग करने के लिए मजबूर हुआ, उसका संक्षिप्त हाल आगे लिखा जाता है।

"ब्राह्म समाज आफ़ इन्डिया" नामक कलकत्ते की एक ब्राह्म समाज के लीडर बाबू केशव चन्द्र सेन ने सन् १८७७ ई० के अख़ीर में जब कुच्छबिहार के छोटी उमर के राजा के साथ अपनी छोटी उमर की एक लड़की का

ब्याह कर देना चाहा, तब उनकी समाज के बहुत से जनों ने यह देख कर कि वह ब्राह्म समाज और अपनी पहली शिक्षा के विरुद्ध यह अनुचित कार्य्य करना चाहते हैं, बहुत बड़ा आन्दोलन आरम्भ किया। उन्हों ने इस विषय में कुल हालात की चिट्ठियां छापकर बहुत सी ब्राह्म समाजों में इस आवेदन के साथ भेजीं, कि वह समाजें इस विषय में अपनी २ रायें प्रगट करें। लाहौर की ब्राह्म समाज में भी उनकी यह चिट्ठियां आईं। परन्तु यहां पर केशव बाबू के कई अन्ध श्रद्धावान ब्राह्मो उन्हें ईश्वर की ओर से "रसूल" जानकर उनके विरुद्ध कोई आवाज़ उठाना नहीं चाहते थे। मैंने इस विषय में बहुत ज़ोर दिया और बताया, कि हमारे लिए धर्म्म को मानकर सत्य का साथ देना अत्यन्त आवश्यक है, और जिन लोगों ने उसका पक्ष समर्थन करने के निमित्त हम से आवेदन किया है, उन्हें हमें निराश न करना चाहिए; तब बहुत कठिनाई से इस समाज के मेम्बरों की एक साधारण सभा कीगई, और उसमें इस मामले पर बहुत कुछ आलोचना हुई। यद्यपि केशव चन्द्र के अनुयाई नहीं चाहते थे, कि इस विषय में सभा में कोई रिज़ोल्यूशन पेश और पास हो, फिर भी उनकी इच्छा के विरुद्ध इस सभा में अधिकांश मत से निम्न लिखित अभिप्राय का रिज़ोल्यूशन पास हुआ :—

"That this meeting has learnt with concern that the marriage of Babu K.C. Sen's daughter is not going to be celebrated according to the Act III of 1872, and is open to other objections and that Mr. Sen being the recognised leader of the Brahmo Samaj of India, should have taken this step which is calculated to cast a gloom over the rising church of the Brahmo Samaj. This meeting, after mature deliberation, and on the strength of the letters received from Calcutta Brahmos, puts on record with regret that the proposed marriage if it actually takes place, will not have the concurrence of the Brahmos."

भावार्थ। "इस सभा ने यह बात शोक के साथ मालूम की है, कि बाबू केशव चन्द्र सेन की लड़की का ब्याह ऐक्ट तीन सन् १८७२ ई० के अनुसार नहीं होगा, और उसके सम्बन्ध में और भी कई अनुचित बातों के सम्पन्न होने की आशंका है, और यह कि वह ब्राह्म समाज आफ़ इन्डिया के माने हुए नेता होकर ऐसी क्रिया करते हैं, कि जो ब्राह्म समाज की उन्नति के पथ में अन्धेरा डालने वाली है। यह सभा बहुत सोच विचार के बाद और उन चिट्ठियों के आधार पर जो कलकत्ते के ब्राह्म जनों ने भेजी हैं, दुःख के साथ इस बात को लिपिबद्ध करती है, कि यदि यह विवाह सचमुच सम्पन्न

किया गया, तो वह ब्राह्म लोगों की इच्छानुसार न समझा जायगा"।

यह रिज़ोल्यूशन यद्यपि पास हो गया, तथापि कुछ कर्म्मचारियों की चालाकी से समाज की कार्य्यवाही की पुस्तक में दर्ज न किया गया। और जब कई महीनों के बाद मुझे उनकी इस शोचनीय क्रिया का पता लगा, तब मुझे उनकी इस अन्याय-मूलक क्रिया से बहुत आघात और क्लेश पहुंचा, और मुझ पर उनकी इस चाल के बहुत बुरे असर पड़े।

कुछ दिनों के बाद अर्थात् सन् १८७८ ई० में केशव बाबू ने कुच्छबिहार के अल्पवयस्क राजा के साथ अपनी अल्पवयस्क लड़की की शादी कर हि दी। इस से पहले उन्हों ने विवाह में खर्च की ज़रूरत बता कर कुच्छबिहार राज्य के प्रबन्ध कर्ताओं से दस हज़ार रुपए भी लिए। फिर अपनी लड़की को व्याहने के लिए कलकत्ते से कुच्छ-बिहार को लेगए। वहां पर इस विवाह के सम्बन्ध में भी इनके धर्म्म मत के विरुद्ध कई प्रकार की हिन्दू रसमें पूरी की गईं। और इनके विषय में यह आपत्ति करके, कि यह इंगलैंड में जाकर और अंगरेज़ों के हाथ का बना हुआ भोजन खाकर भृष्ट होगए हैं, इन्हें कन्या सम्प्रदान करने की आज्ञा भी न दीगई। केशव बाबू ने यद्यपि अपनी इन अनुचित क्रियाओं से अपने बचाव के लिए यह प्रका-

शित किया, कि उन्हों ने यह शादी ईश्वर के हुक्म से की है, और उसके लिए सिर्फ़ ईश्वर ज़िम्मेवार हैं, न कि वह; फिर भी उनके प्रतिवाद कारियों ने उनकी एक न सुनी। और उनकी समाज के लोगों ने कलकत्ते में एक बहुत बड़ी सभा करके उन्हें समाज के आचार्य्य पद से अलग कर देने का रिज़ोल्यूशन पास किया, और उनके स्थान में उन्हों ने कई नए आचार्य्य नियत किए। परन्तु केशव चन्द्र और उनके कुछ अनुयाइयों ने परामर्श करके इन लोगों को ब्रह्म मन्दिर पर क़बज़ा न दिया। तब कुछ दिनों के बाद इन लोगों ने निराश होकर "साधारण ब्राह्म समाज" के नाम से अपनी एक अलग समाज स्थापन की; और उसके अलग प्रचारक और अधिकारी नियुक्त किए। तब से कलकत्ते में तीन ब्राह्म समाजें होगईं। केशव बाबू की समाज का कुछ काल के अनन्तर नव विधान समाज भी नाम होगया।

ब्राह्म समाज के कई विख्यात जनों की ऐसी शोचनीय आत्मिक अवस्थाओं और क्रियाओं से मुझे बहुत आघात और दुःख पहुंचा।

केशव बाबू की इन बुरी क्रियाओं से और बहुत सी समाजों की तरह लाहौर की समाज में भी दो पार्टियां होगईं—एक पार्टी उनकी इन अनुचित क्रियाओं की

विरोधी थी, दूसरी (जो उनकी अन्ध विश्वासी थी) उनका पक्ष समर्थन करती थी। साधारण ब्राह्म समाज के क़ायम हो जाने पर उनके एक प्रचारक अपनी समाज के साथ बाहर की समाजों की सहानुभूति प्राप्त करने के लिए दौरे पर निकले। उन्हों ने पंजाब में भी पहुंचने की इच्छा प्रगट की, और समाज की ओर से उन्हें लाहौर आने के लिए निमंत्रित भी किया गया। परन्तु कलकत्ते में केशव बाबू की पार्टी और लाहौर में उनके अन्ध अनुयाइयों को उनका लाहौर में पहुंचना स्वभावतः पसन्द न था। इसलिए केशव बाबू के एक साथी प्रचारक बाबू प्रताप चन्द्र मुज़मदार ने लाहौर में अपनी पार्टी के एक चलते पुरज़े को एक पत्र लिख कर इशारा किया, कि उन्हें लाहौर समाज के वार्षिक उत्सव पर बुलाया जाय। उसके इस अनुयाई ने जो कि बंगाली था, अपने कुछ साथियों से मिल कर उन्हें निमंत्रण पत्र लिख दिया। यह पत्र जुलाई सन् १८७८ के आख़री दिनों में लिखा गया। इस पत्र के पहुंचने पर केशव बाबू के अख़बार "इंडियन मिरर" ने यह ख़बर छापी, कि लाहौर की ब्राह्म समाज ने बाबू प्रताप चन्द्र को अपने यहां प्रचार के लिए निमंत्रित किया है। लाहौर में साधारण समाज के पक्ष वालों से यह मामला बिलकुल छिपा कर रक्खा गया। इसीलिए अगस्त के महीने में जब मैं आगरे में बाबू नवीन चन्द्र राय के पास ठहरा

हुआ था, तब मुझे उनके यहां उस अख़बार में उपरोक्त ख़बर पढ़ कर बहुत हैरानी हुई; और मैंने नवीन बाबू से कहा, कि मुझ से और कितने हि और सामाजिक जनों से छिपा कर यह कार्रवाई की गई है। वास्तव में प्रताप बाबू सारी समाज की ओर से निमंत्रित नहीं हुए। उन्हों ने कहा, कि तब इस ख़बर का खंडन होना चाहिए। इस पर मैंने एक पत्र "मिरर" को और एक साधारण सामाज के अख़बार "ब्राह्मो पबलिक ओपीनियन" को उपरोक्त विषय में लिख कर उन पर यह प्रगट किया, कि दर हक़ीक़त प्रताप बाबू लाहौर की सारी समाज की ओर से नहीं बुलाए गए। परन्तु जैसी कि उम्मेद हो सकती थी, "मिरर" ने मेरा यह पत्र नहीं छापा, और "ब्राह्मो पबलिक ओपीनियन" ने छाप दिया। मेरे इस तरदीदी पत्र के छपने पर लाहौर में केशव बाबू के अनुयाइयों में बहुत घबराहट पैदा हुई। उन्हों ने समाज के सेक्रेटरी को जो बहुत हि कमज़ोर दिल और दिमाग़ का आदमी था, अपनी चाल पर लाकर और उस से एक पत्र पर हस्ताक्षर कराके उसे "ब्राह्मो पबलिक ओपीनियन" के ऐडीटर के पास भेज दिया। इस पत्र में लिखा गया, कि प्रताप बाबू सारी समाज की तरफ़ से हि निमंत्रित हुए हैं। "ब्राह्मो पबलिक ओपीनियन" के लिए उस पत्र का छापना उचित था, और उस ने उसे, अपने अख़बार

में छाप दिया । मुझे इस पत्र के झूठे वर्णन से बहुत आघात् पहुंचा । मैंने उसके प्रतिवाद में फिर एक पत्र उसी अख़बार में लिख कर सेक्रेटरी और उसके साथियों को चैलेञ्ज दी, कि वह सारी समाज की साधारण सभा अथवा कारकुन कमेटी के किसी इजलास का हवाला देकर बताएं, कि किस दिन और किन २ मेम्बरों की हाज़री में प्रताप बाबू को लाहौर समाज की तरफ़ से बुलाया जाना स्थिर हुआ था। मेरी इस चैलेंज से उनके छक्के छूट गए, क्योंकि इस मतलब के लिए समाज की ओर से कोई मीटिंग नहीं हुई थी, कि जिसका वह हवाला देते । इधर वह किसी मीटिंग का हवाला नहीं दे सकते थे, उधर सच्च को भी मानने के लिए तैयार न थे । इस लिए प्रायः दो महीने तक वह अपने झूठ की ताईद के लिए तरकीबें सोचते रहे। प्रताप बाबू भी इस समय में लाहौर पहुंच चुके थे, इस लिए उनके साथ भी इस विषय में कितने दिनों तक सलाहें होती रहीं। आख़िरकार उनके ख़याल में एक तरकीब निकल आई। मेरी चिट्ठी के प्रतिवाद में मिथ्या-मूलक एक चिट्ठी लिखी गई, और उसके साथ एक फ़हरिस्त बनाई गई, जिस पर इन लोगों ने अपने दस्तख़त करने के भिन्न समाज के कुछ और जनों पर दबाव डाल कर उन से भी इस बात की पोषकता में दस्तख़त कराए, कि उन सब जनों की इच्छा से हि प्रताप बाबू निमंत्रित किए गए थे। यह चिट्ठी

इस फ़हरिस्त के साथ "आफ्री पबलिक ओपीनियन" में छपने के लिए भेजी गई। उपरोक्त पत्र के ऐडीटर ने उसे प्रकाशित कर दिया। इसके छपने पर झूठ के साथियों ने यह समझा, कि अब अग्निहोत्री और उसके सत्य का भली भांत पराजय हो गया। परन्तु कुछ दिनों के बाद हि उन्हें मालूम हुआ, कि सत्य और उसका अनुरागी दोनों हि बहुत बली हैं। प्रकृति के नियम के अनुसार वह असत्य के द्वारा पराजय हो नहीं सकते थे, और इसी लिए नहीं हुए।

मैंने झूठ के इन तरफ़दारों की इन चालों से जिस क़दर दुःख पाया, उसका मैं बयान नहीं कर सकता। मेरा दिल विलप २ कर यह कहता था, कि क्या मेरे सत्य अनुराग का यही परिणाम हो सकता है? क्या मिथ्या के पक्ष वाले मेरे सामने सिर उठा कर निकलेंगे और अपनी मिथ्या की जय पर फूलेंगे? नहीं, नहीं, ऐसा क्योंकर हो सकता है? मैंने अपने सत्य अनुराग विषयक बल से प्रेरित हो कर फिर संग्राम आरम्भ किया। मैंने निम्न लिखित नक़शा तैयार किया :—

| नाम | पहला प्रश्न | दूसरा प्रश्न | तीसरा प्रश्न | दस्तख़त |
|---|---|---|---|---|
| | ४ अगस्त सन् १८७८ ई० के "इंडियन मिरर" में लिखा है, कि बाबू प्रताप चन्द्र मुज़मदार को लाहौर के ब्राह्मो लोगों ने निमंत्रित किया है। कृपा करके बताएं कि उस "तारीख़ से पहले" आपकी उस विषय में ज़बानी वा लेख के द्वारा कोई सम्मति ली गई थी ? | क्या सेक्रेटरी की वह चिट्ठी एक फ़हरिस्त के साथ (जिस में आपका नाम भी दर्ज है) कि जो २८ नवम्बर के "ब्राह्मो पबलिक ओपीनियन" में छपी है, आप को आप से फ़हरिस्त पर दस्तख़त कराने से पहले दिखाई गई थी ? | जुलाई सन् ७८ के अख़ीर में जब प्रताप बाबू के निमंत्रण के लिए लाहौर से चिट्ठी भेजी गई थी, तब क्यों उन दिनों आप लाहौर में मौजूद थे ? | |

इस नक़शे को तैयार करके मैंने उसे उन जनों के सन्मुख ख़ानापुरी के लिए रखना चाहा, कि जिन्हों ने निमंत्रण सम्बन्धी उपरोक्त फ़हरिस्त पर दस्तख़त किए थे, परन्तु यह उनके लिए बहुत टेढ़ी खीर थी, जिसे वह किसी तरह खाने के लिए तैयार न थे। वह साफ़ जानते थे, कि उनके इस नक़शे के भरने से मेरे सत्य की पोषकता होगी। इसलिए उनमें से कितनों ने उसके भरने से पूर्णतः इन्कार किया। कुछ ने कतराना और हीले बनाना शुरू किया। मेरे दिल पर उनकी ऐसी गतियों से बड़ी सख़्त चोटें लगीं। परन्तु मैंने भी उनका पीछा न छोड़ा, और कहा कि तुम जो कुछ चाहो लिख दो, परन्तु तुम्हें लिखना अवश्य होगा। आख़िर मेरे बहुत बड़े संग्राम से केवल छै आदमियों ने इस नक़शे की ख़ानापुरी की। ख़ानापुरी करने में यद्यपि इनमें से किसी २ ने ख़ूब चालाकी से काम लिया, परन्तु फिर भी असल भेद खुल गया। कुछ जनों ने लिखा, कि उनसे उपरोक्त विषय में कोई राय नहीं लीगई। कुछ ने लिखा कि वह उन दिनों लाहौर में हि न थे, और उनसे लेख के द्वारा भी कोई राय नहीं लीगई। इस प्रकार मिथ्या की कच्ची हांडी टूट कर चकनाचूर होगई। मैंने ३० दिसम्बर को "ब्राह्मो पबलिक ओपीनियन" के

एडीटर के नाम फिर एक ज़ोरदार चिट्ठी लिखी, और उपरोक्त नक़शे की नक़ल करके और उसके सही होने के प्रमाण में एक बैरिस्टर के दस्तख़त कराके, उसे भी अपनी उस चिट्ठी के साथ भेज दिया। एडीटर पर सारा हाल खुल गया, और उस ने मेरे पहले बयान का पूर्ण प्रमाण पाकर सत्य का बख़ूबी साथ दिया। इन हालात के छपने पर मिथ्या के पत्त पातियों का इस विषय में सदा के लिए पराजय हो गया। परन्तु ईश्वर के इन पुजारियों और धर्म्म के नाम लेवों का मुझ पर जैसा कुछ बुरा असर पड़ा, उसे मैं हि जानता हूं।

इन्हीं दिनों में जब कि मैं अपने सत्य की पोषकता के लिए प्रमाण ढूंढ रहा था, मैंने उस बंगाली को दो पत्र लिखे, कि जो केशव बाबू की पार्टी का लाहौर में बहुत बड़ा चलता पुरज़ा था। इन में से ११ दिसम्बर सन् ७८ ई० के पत्र का अन्तिम अंश नीचे दर्ज किया जाता है :—

"I love truth and will always advocate it. I shall gladly follow any person, who leads me to it, but no amount of *influence or force or combination, can ever make me shun and sacrifice it.* If my friends are disgusted with me for my this *uncompromising regard for truth,* I shall be only too sorry."

भावार्थ।

"मैं सत्य का अनुरागी हूं और सदा उसकी पैरवी करूंगा। मैं ख़ुशी २ किसी भी ऐसे जन का अनुगत हो सकता हूं, कि जो मुझे सत्य की ओर ले जासके। परन्तु किसी प्रकार का दबाव वा बल वा कोई जथा मुझ से सत्य का त्याग नहीं करा सकता। यदि सत्य के सम्बन्ध में मेरे ऐसे बे लाग लपेट गाढ़ अनुराग से मेरे मेहरबान मुझे घृणा करते हैं, तो मैं उनके ऐसा करने पर केवल अपने गहरे शोक का हि प्रकाश कर सकता हूं"।

एक ओर इन लोगों को सत्य और उच्च जीवन की ओर से श्रद्धा-विहीन और दूसरी ओर आवश्यकता के समय मिथ्या और अन्याय-मूलक एक वा दूसरे प्रकार के आचारण का साथी वा परिपोषक देखकर मेरा सत्य और हित परायण हृदय अत्यन्त व्यथित और शोकाकुल हुआ। ऐसी दशा में मेरे भीतर बार २ यह प्रेरणा होने लगी, कि तुम ऐसे जनों के साथ रह कर और मिल कर धर्म्म जीवन विषयक कोई उच्च काम भली भांत नहीं कर सकते। इस लिए मैंने अपनी इस शुभ प्रेरणा के अनुसार समाज की मेम्बरी और उसके आचार्य्य के पद को पूर्णतः छोड़ दिया। और जनवरी सन् १८७६ ई० से तीन चार जनों को लेकर

लाहौर में अपनी एक अलग प्रार्थना सभा स्थापन की, और अपने घर के एक बड़े कमरे में प्रति सप्ताह सभा करके उन तक अपने उच्च प्रभाव पहुंचाने की चेष्टा आरम्भ की।

जनवरी १८८० ई० में कलकत्ते की साधारण ब्राह्म समाज ने मेरी अनुमति लेकर अपने वार्षिक उत्सव के अवसर पर पंडित शिवनाथ शास्त्री आदि तीन और जनों के साथ अनुष्ठान पूर्व्वक मुझे अपने यहां के प्रचारक अर्थात् मिशनरी के पद पर वरण किया। प्रार्थना सभा के सम्बन्ध में प्रायः डेढ़ वर्ष तक काम करने के बाद ८ मई सन् १८८० ई० को मैंने लाहौर में "सेन्ट्रेल पंजाब ब्राह्म समाज" के नाम से एक अलग समाज स्थापन की। १६ मई १८८० ई० से इसका नाम पंजाब सेन्ट्रेल ब्राह्म समाज रक्खा गया। समाज स्थापन करके कोई दो महीने के बाद मैंने उसके लिए अपने मकान के पास हि नौ या दस रुपए माहवार पर एक अलग मकान किराए पर लिया; जहां पर मैं उसके सम्बन्ध में प्रति सप्ताह साधारण सभा करके उपदेश दिया करता।

फिर धर्म्म विषयक प्रभावों को अधिक दूर तक फैलाने के निमित्त धीरे २ "भ्रातृ सम्मिलनी सभा," "साधक मंडली," "समदर्शी सभा" और "स्टूडेन्टस क्लब" के नाम से कई और संस्थाएं स्थापन की गईं।

इनके भिन्न और स्थानों में भी काम शुरू किया गया। अमृतसर में एक "भजन सभा" क़ायम हुई। शिमले की उस समय की "शिमला हिल्ज़ ब्राह्म समाज" भी हमारी समाज की शाख़ बनी। बीच २ में बाहर के कई स्थानों में भी मेरे लेकचर और उपदेश होने लगे। लाहौर में भी मैंने बीच २ में बहुत से लेकचर दिए, जिन में से तीन लेकचर "शिक्षा सभा हाल" में भारत की स्त्रियों की वर्तमान दशा और उनकी उन्नति की आवश्यकता के विषय में थे। कुछ लेकचर मुलतान में हुए; कुछ अमृतसर में। "बिरादरे हिन्द" नामक मेरे मासिक उर्दू पत्र के द्वारा भी इसी प्रकार का काम होता रहा। इसके भिन्न दो ट्रैक्ट अंग्रेज़ी ज़ुबान में छापे गए।

इधर मेरी समाज का काम दिनों दिन उन्नति कर रहा था, उधर मेरे नव विधानी विरोधी भी मुझे हानि पहुंचाने के लिए अपना यत्न करते रहते थे। परन्तु मैं उन से नाना प्रकार के अनुचित आघात् और दुःख पाकर उस काल में भी यथावसर उनके लिए हितकर होने की आकांक्षा रखता था। सन् १८८० ई० में जबकि लाला काशीराम नवविधानी शिमले में अपने दफ़तर में काम करते थे, तब एक ऐसी घटना हुई, जिसकी ख़बर पाकर लाला काशीराम की लाहौर वाली बिरादरी ने उन्हें अपने में से ख़ारिज करने के लिए इच्छा की। काशीराम

जी के लिए यह बहुत विपद् का समय था। इस समय में उन्हें अनुभव हुआ, कि वह जिस अग्निहोत्री को वर्षों तक सताते और हानि पहुंचाते रहे हैं, वह उनकी इस विपद में भी सहाय कर सकता है। इसी भाव के अनुसार उन्हों ने इस विषय में मुझे शिमले से जो चिट्ठी लिखी, वह नीचे दर्ज होती है:—

SIMLA.
21-9-80.

My dear Pandit Shiv Narain,

You may have heard of the row my Biradriwalas are making consequent upon my having eaten with Lala Ralla Ram. I am sure they will excommunicate me..........

May I ask whether you can receive my wife for a couple of days on my return to Lahore in the first week of October next?

I am afraid I shall be put to a little inconvenience as I have got no servant at present, my old servant who came with me having already left my service.

If you could manage to rent a house for me somewhere near yours, and engage a male servant and a maid servant, I think I shall have no trouble whatever, but this is not an easy matter.

I write this to you because I am almost

certain that none of my Lahore friends will be in a position to give me shelter specially in these days when their whole community is in commotion.

Pray excuse trouble and favour me with a reply.

Yours Sincerely,
(Sd.) Kashi Ram.

( भावार्थ )

शिमला।
२१—६—८०

मेरे प्यारे पंडित शिवनारायण,

मेरे रलाराम के साथ खाना खाने पर मेरे बिरादरी वाले जो कुछ शोर मचा रहे हैं, उसकी ख़बर शायद आप को भी मिली होगी। मुझे पूरा यक़ीन है, कि वह मुझे अपने समूह में से ख़ारिज कर देंगे।

मैं आप से यह पूछता हूं, कि क्या आप अकतूबर के पहले सप्ताह में मेरी पत्नी के लाहौर पहुंचने पर उसे एक दो दिन के लिए अपने घर में जगह दें सकते हैं? मुझे डर है, कि मुझे कुछ दिक्क़त भी पड़ेगी, क्योंकि इस समय मेरे पास कोई नौकर नहीं है। मेरा पहला नौकर जो यहां पर मेरे साथ आया था, वह मेरी नौकरी छोड़ गया है।

यदि आप अपने मकान के पास हि मेरे लिए एक मकान किराए पर लेसकें, और मेरे लिए एक नौकर और एक नौकरानी का बन्दोबस्त कर सकें, तो फिर मुझे कोई तकलीफ़ नहीं हो सकती, परन्तु ऐसा होना बहुत सहज नहीं है।

मैं आप को यह पत्र इसलिए लिखता हूँ, कि मुझे प्रायः यक़ीन है, कि ऐसे समय में मेरे लाहौर के मित्रों में से कोई जन भी मुझे आश्रय न देगा, जब कि मेरी सारी बिरादरी आन्दोलित हो रही है।

इस तकलीफ़ के लिए आप मुझे क्षमा करें, और इस पत्र के उत्तर देने की कृपा करें।

आपका सरल भाव से,
( हस्ताक्षर ) काशीराम।

इसके जवाब में मुझे जहां तक याद है, मैंने उन्हें बहुत धैर्य्य देने वाली एक चिट्ठी लिखी, और उस में यह भी लिखा कि मैं उनकी इस विपद में बड़ी ख़ुशी से सहाय करूंगा और जब तक उन्हें ज़रूरत हो, मेरा मकान उनके और उनके परिवार के ठहरने के लिए हाज़िर है। मेरी इस चिट्ठी को पाकर उन्हों ने फिर मेरे नाम जो चिट्ठी लिखी, उसका भी एक अंश नीचे दर्ज किया जाता है:—

SIMLA.
28 September 80.

My dear Pandit Shiv Narain,

Your kind letter of the 25th instant reached me duly. I can not sufficiently thank you for your very generous help.

This is what I fully expected of you.

Yours sincerely,
(Sd.) Kashi Ram.

( भावार्थ )

शिमला ।
२८ सितम्बर सन् १८८० ई०

"मेरे प्यारे पंडित शिव नारायण,

आपकी २५ सितम्बर की चिट्ठी मुझे मिल गई है। आपकी बहुत उदार सहाय के लिए मैं काफ़ी धन्यवाद नहीं दे सकता । मुझे आप से इसी प्रकार की पूर्ण आशा थी।

आपका सरल भाव से,
( हस्ताक्षर ) काशीराम"।

प्रायः ढाई वर्षों में मेरी 'पंजाब सेन्ट्रल ब्राह्म समाज' ने बहुत उन्नति की। इसकी पहली सालाना रिपोर्ट में

इसकी उन्नति का जो हाल छपा था, उसके अनुसार यह समाज जो पहले चार जनों को लेकर स्थापन की गई थी, उस में बढ़ते २, १८ मेम्बर हो गए, जिन में से ६ जन लाहौर के और ६ जन बाहर के थे। लाहौर के मेम्बरों में बाबू नवीन चन्द्र राय और ट्रिब्यून अख़बार के उस समय के एडीटर बाबू शीतला कान्त चैटरजी और लाला (अब डिपटी) गिरधारी लाल भी थे। इसी रिपोर्ट में मेरे साप्ताहिक उपदेशों की जो फ़हरिस्त छपी थी, उस में से कुछ उपदेश इन विषयों पर थे :—

(१) उच्च और नीच जीवन।

(२) पवित्र जीवन।

(३) नव जीवन।

(४) आत्म त्याग।

(५) जीवन्त धर्म्म।

(६) आत्मिक ज्योति।

(७) आत्मिक शक्ति।

(८) पाप और उसके फल। इत्यादि २।

इधर पुरानी समाज के लोगों ने जब इस नई समाज की इतनी बड़ी उन्नति देखी, और उधर अपनी समाज को बहुत असंतोष जनक अवस्था में देखा, तब उन्हों ने दोनों के मिल जाने के लिए कोशिशें शुरू कीं। कई महीने

एक उनकी यह कोशिशें जारी रहीं, और जिन कई विषयों में मत भेद था. उन्हों ने उनका दूर करना स्वीकार किया। तब हमारे मेम्बरों ने भी इन हालात में उनके साथ फिर मिल जाना पसन्द किया। इस लिए यह समझ कर कि यदि अन्मेल-उत्पादक कारणों के दूर होने से मेल हो सकता हो, तो मेल हो जाना हि उचित है, पंजाब सेन्ट्रेल ब्राह्म समाज के २१ मई सन् १८८२ ई० के अधिवेशन में उसके बन्द करने के विषय में सर्व्व सम्मति से यह रिज़ोल्यूशन पास हुआ :—

"स्थिर हुआ, कि पंजाब सेन्ट्रेल ब्राह्म समाज और पंजाब ब्राह्म समाज के दरमियान सब भेदों के दूर हो जाने के कारण पंजाब सेन्ट्रेल ब्राह्म समाज बन्द कर दी जाय।"

इसके बाद मैं फिर पुरानी समाज में शामिल होकर काम करने लगा।

पंजाब ब्राह्म समाज में दुबारा शामिल होने के प्रायः छै महीने बाद हि मैंने सरकारी नौकरी छोड़ कर २० दिसम्बर १८८२ ई० को अपना जीवन व्रत ग्रहण किया। इस व्रत सम्बन्धी अनुष्ठान के सम्पन्न करने के निमित्त जो बहुत बड़ी सभा की गई, उस में औरों के भिन्न नव विधानी ब्राह्मों भी मौजूद थे। मेरे इस अद्वितीय जीवन

व्रत और उसके सम्बन्ध में पूरे त्याग और आत्मसमर्पण के द्वारा मेरे आत्मा में उच्च शक्तियों का जिस प्रकार विशेष रूप से विकाश आरम्भ हुआ, और मुझ में विशेष रूप से आत्मबल उन्नत हुआ, और नीच गति परायण आत्माओं के उद्धार और उन में धर्म्म भावों के विकशित करने के लिए मेरा हृदय जिस कदर व्याकुल हुआ, उसे मेरे भिन्न और कोई अनुभव करने के योग्य न था। मिथ्याप्रिय, संसारासक्त, ईर्षा, और द्वेष परायण जन तो इस अलौकिक घटना और उसके सच्चे महत्व के देखने के पूर्णतः अयोग्य थे। इसलिए जब मैंने इस विशेष आत्मबल से आन्दोलित होकर अपना व्रत सम्बन्धी उपरोक्त कार्य्य आरम्भ किया, तब मेरे इस ज्वलन्त उत्साह को देखकर यद्यपि औरों के भिन्न समाज के लोगों में भी आश्चर्य्य भाव अवश्य उदय हुआ, और किसी २ में कुछ २ श्रद्धा भी जाग्रत हुई; तथापि जब मेरे उपदेशों के उच्च प्रभावों से नीच गति परायण लोगों के दिल हिलने लगे, और उनमें उच्च परिवर्तन का कार्य्य आरम्भ हुआ, और उन में से कुछ दिनों के अनन्तर कई जन मेरी व्याकुलता-पूर्ण अपील से समाज की ओर आकृष्ट होकर उस में शामिल हुए, तब इस महत कार्य्य से हर्ष लाभ करने के स्थान में मेरे विरोधी जनों में–विशेष कर केशव बाबू के कितने हि अन्ध विश्वासियों में—ईर्षा और द्वेष भावों के उत्तेजित हो

जाने से उनकी कुछ समय के लिए दबी हुई पहली विरोध अग्नि फिर भड़क उठीं। लाला काशीराम जिन में यह निकृष्ट भाव बहुत प्रबल रूप में वर्तमान थे, स्वभावतः मुझे हानि पहुंचाने के लिए तैयार होगए। उन्हें मेरी यह कामयाबी जो ब्राह्म समाज की उन्नति का कारण बन रही थी, बहुत क्लेश देने लगी। वह ईर्षा भाव से जलने लगे, और उसकी शान्ति के लिए मेरे दमन करने के निमित्त वह फिर चेष्टा करने लगे। उनकी बला से, उनकी समाज की चाहे उन्नति हो और चाहे अवनति हो, परन्तु मेरी बढ़ती हुई देव शक्तियों और उनके अलौकिक कार्य्य को किसी न किसी विधि से चाहे वह कैसी हि पाप-मूलक हो, दमन करना उनके लिए अनिवार्य्य होगया।

इसलिए लाला काशीराम के लिखने पर केशव बाबू के अंगरेज़ी अख़बार ने जिसका नाम "निउडिसपेन्सेशन" था, ५ अगस्त १८८३ ई० के परचे में एक नोट छापा, कि जिस में मुझ पर चोट करने के निमित्त कई मिथ्या बातें प्रकाशित की गईं। मुझे इस अख़बार में (जिसके सम्पादक ख़ुद बाबू केशव चन्द्र थे) ऐसी मिथ्या बातों की घोषणा देखकर बहुत आघात और दुःख पहुंचा। मैंने इस विषय में एक नोट लिखकर लाहौर समाज के लोगों से पूछा, कि वह अपनी सच्ची साक्षी देकर बताएं, कि असल बात

क्या है। इस पर जिन कई बड़े २ मेम्बरों ने जो २ कुछ उत्तर दिए, उनके आवश्यक अंश मेरे नोट के साथ नीचे दर्ज किए जाते हैं :—

## मेरा नोट।

The new Dispensation of the 5th August 1883 publishes a paragraph, which please read below, under marks of quotation, and be kind enough to let me know whether it contains nothing but the truth; and the whole truth about the Punjab Brahmo Samaj :—

"Lahore—Bhai Ganda Mal is now the *leading spirit* of the Punjab Brahmo Samaj, and the *only active worker* in the Lord's vineyard in this great city. He needs reinforcement. Our Punjab Brethern are *anxious to secure a resident missionary.* Who will offer his services ?"

Lahore.<br>9th August 83.

Yours fraternally<br>S. N. Agnihotri.

## भवार्थ।

५ अगस्त सन् १८८३ ई० के "निउ डिस्पेन्शेसन" अखबार ने निम्न लिखित एक पैरेग्राफ़ छापा है। उसे पढ़ने के बाद आप लोग कृपा करके मुझे अवगत करें, कि क्या उस में पंजाब ब्राह्म समाज के सम्बन्ध में सत्य

और केवल सत्य और पूर्ण सत्य का प्रकाश किया गया है, या क्या ? :—

" लाहौर—भाई गंडामल हि इन दिनों पंजाब ब्राह्म समाज के नेता हैं, और इस बड़े शहर में ईश्वर के अंगूरी बाग़ में वही एक मात्र काम करने वाले हैं। हमारे पंजाबी भाई अपने यहां एक मिशनरी के लिए बहुत आकांक्षा रखते हैं। कौन अपने आप को अर्पण करेगा। ? "

लाहौर :—
६ अगस्त १८८३

स० न० अग्निहोत्री

मेरे इस नोट के उत्तर में लाला श्रद्धा राम ने लिखा :—

" In my opinion the writer of the para referred to is *an enemy* of the Punjab Brahmo Samaj; I for one do not know, that any anxiety–either publicly or privately–has ever ( since December 1882 ) been expressed regarding securing a resident missionary. The para should be contradicted in one or two journals."

भावार्थ।

" मेरी राय में जिस जन ने यह पैरा लिखा है, वह

पंजाब ब्राह्म समाज का दुशमन है। मुझे तो नहीं मालूम है, कि दिसम्बर १८८२ ई० के बाद से यहां पर किसी और मिशनरी के रखने के विषय में कभी निज के तौर पर वा प्रकाश रूप में कोई आकांक्षा प्रगट की गई है। इस पैरे का एक वा दो अख़बारों में प्रतिवाद होना चाहिए।"

राय बहादुर डाक्टर बृज लाल घोस ने लिखा :—

"I have read the New Dispensation No. with surprise. The editor is misinformed ............we at present do not stand in need of a missionary as we have one, who can ably manage............"

भावार्थ।

"मैंने "नव विधान" के उस परचे को पढ़कर ताज्जुब मालूम किया है। एडीटर को झूठी ख़बर दी गई है......हमें इन दिनों किसी और मिशनरी की ज़रूरत नहीं है। हमें एक ऐसा मिशनरी मिला हुआ है, कि जो योग्यता के साथ अपना काम कर रहा है।"

लाला रामचन्द्र ने लिखा :—

"In my opinion Pandit S. N. Agnihotri is the leading spirit of the Punjab Brahmo Samaj. He takes greatest interest in its affairs.........I for one now feel no necessity for a missionary as Pandit S. N. Agnihotri can supply our spiritual wants."

भावार्थ ।

"मेरी राय में पंडित सत्यानन्द अग्निहोत्री हि पंजाब ब्राह्म समाज के परिचालक हैं। वह उसके कामों के साथ बहुत गहरा लगाव रखते हैं।.........मैं किसी और मिशनरी की कोई ज़रूरत अनुभव नहीं करता, क्योंकि पंडित अग्निहोत्री जी हमारी आत्मिक ज़रूरतों को पूरा कर सकते हैं।"

पंडित गोवर्द्धन दास ने लिखा :—

"As far as my experience extends in connection with the affairs of the Samaj, I would emphatically say that the representation made in the "New Dispensation" on behalf of the Punjab Brahmo Samaj is far from being the fact.

I am quite at a loss to conceive what good on earth can a foreigner do us, when one who has spent nearly the whole of his youth amidst us, forsaken his high position and adopted a purely religious life, one who is so able to express himself in our mother tongue can not do for the Lord's vine yard.........moreover, I fear should a Bengali missionary come up, the little fold of Brahmos that gather in the Mandir would most probably scatter away."

भावार्थ ।

"समाज के मामलात के विषय में जहां तक मेरा

तजरुबा है, उसके अनुसार मैं ज़ोर के साथ यह कहता हूं, कि "नव विधान" नामक अख़बार में पंजाब ब्रह्म समाज के सम्बन्ध में जो लेख निकला है, वह सत्य नहीं है।

मैं यह समझ हि नहीं सकता, कि एक बाहर का परदेशी जन हमारा क्या भला कर सकता है, जब कि जिस जन ने अपनी प्रायः सारी जवानी हमारे बीच में व्यतीत की है; जिस ने अपने उच्च पद का त्याग करके केवल धर्म्म जीवन अपना उद्देश्य रक्खा है, जो हमारी मातृ भाषा में ऐसी योग्यता से प्रचार करता है, वह "ईश्वर के अंगूरी बाग़" में काम करने के योग्य न समझा जा सके।.........इसके भिन्न मुझे यह भी भय है, कि यदि कोई बंगाली मिशनरी यहां आया, तो वह थोड़ा सा जन समूह जो अब ब्रह्म मन्दिर में इकट्ठा होता है, यक़ीनन तित्तर बित्तर होजाएगा।"

लाला गंडामल ने लिखा :—

"I have read the last para under the head of church news in the New Dispensation of 5th August 1883.

I sincerely declare that the writer of the para is grossly mistaken, and the facts are misrepresented............I partly do the clerical work of the Samaj............As the clerical work does not form part of the real work of the Samaj, it is not worth mentioning.

The Punjab Brahmo Samaj as s Religious Institution, is at present conducted by Brahmbadi S. N. Agnihotri. He is the life and soul of it. The self-sacrifice practised and the interest taken by him in the cause of theism, have prominently brought the Punjab Brahmo Samaj to the notice of the public. He is the centre and the people are attracted to him. Since he has commenced to work as Minister, the congregation has greatly increased, and the Institution has become more popular among the youngmen.

Brahmbadi (S. N. Agnihotri) is doing a great deal for the regeneration of the country, by public lectures, discussions and sermons as well as by publishing tracts. The Punjab Brahmo Samaj has got a resident missionary in his person. It is rather difficult to get a more suitable and useful resident missionary than him from other provinces..."

भावार्थ।

"मैंने ५ अगस्त सन् १८८३ ई० के "निउ डिस्पेन्सेशन" में सामाजिक समाचार शीर्षिक कालम के अख़ीर का पैरा पढ़ा है। मैं सरल भाव से प्रगट करता हूं, कि उसका लेखक बहुत बड़ी ग़लती पर है। उस में सत्य को उलटे रूप में दिखाया गया है।............

मैं समाज में कुछ क्लर्क का काम करता हूं......जब कि क्लर्क का काम समाज का कोई असल काम

नहीं समझा जा सकता, तब वह कोई वर्णन करने के भी योग्य नहीं।

धर्म्म समाज के विचार से पंजाब ब्राह्म समाज को ब्रह्मवादी सत्यानन्द अग्निहोत्री हि परिचालित करते हैं। वही उसके जीवन प्राण हैं। उन्हों ने ईश्वर के धर्म्म के लिए जैसा आत्म-त्याग किया है, और उसके प्रचार के लिए वह जैसा अनुराग रखते हैं, उस से पबलिक की दृष्टि प्रबल रूप से पंजाब ब्राह्म समाज की ओर खिंची है। वह उसके मध्य बिन्दु ( मरकज़ ) हैं, और लोग उनकी ओर खिंच रहे हैं। जब से वह आचार्य्य का काम करते हैं, तब से ब्रह्म मन्दिर में श्रोतागणों की तादाद बहुत बढ़ गई है, और नौजवान लोगों को हमारी समाज अधिक प्रिय हो गई है।

ब्रह्मवादी ( सत्यानन्द अग्निहोत्री जी ) इस देश के उद्धार के लिए क्या अपने व्याख्यानों, क्या आलोचनाओं, क्या उपदेशों और क्या पुस्तकों के प्रकाशन के द्वारा बहुत बड़ा काम कर रहे हैं। वह पंजाब ब्राह्म समाज के मिशनरी हैं। किसी और सूबे से उन से बढ़ कर योग्य और हितकर मिशनरी का मिलना कठिन है।........"

यद्यपि काशीराम को अपनी इस ईर्षा और द्वेष से भरी हुई चाल में कामयाबी न हुई, और वह बहुत झूठे प्रमाणित हुए, और एक पुराने ब्राह्मो ने उनकी इस अधम

अवस्था से दुःखी होकर उन्हें ब्राह्मो समाज का "दुश्मन" भी लिखा, तथापि जैसे भेड़िया किसी के हज़ार बुरा कहने पर जीव बध और मांसाहार नहीं छोड़ सकता, वैसे हि काशीराम साहब भी अपनी उपरोक्त प्रकृति को नहीं छोड़ सके। उन्हों ने अपना इस प्रकार का पाप कार्य्य उसके बाद भी जारी रक्खा।

दिसम्बर १८८३ ई० में बड़े दिनों की छुट्टियों में अपर इन्डिया की ब्राह्म समाजों में बेहतरी लाने के लिए लाहौर में एक कान्फ्रेन्स की गई। इस में लाहौर और पांच और समाजों के प्रतिनिधि शामिल थे। मैं इस कान्फ्रेन्स का प्रेसीडेन्ट था, और बाबू नवीन चन्द्र राय सेक्रेटरी थे। प्रेसीडेन्ट और सेक्रेटरी दोनों हि नव विधानी न थे, इसलिए लाला काशीराम के हृदय को इस कान्फ्रेन्स का होना (यद्यपि वह ब्राह्म समाजों की बेहतरी के लिए की गई थी) बहुत कष्ट कर प्रमाणित हुआ। वह उस समय कहीं लाहौर से बाहर थे, इसलिए उन्होंने उस में विघ्न उत्पन्न करने के लिए तार के द्वारा अपनी यह आपत्ति भेजी, कि जब कि कान्फ्रेन्स जनरल कमेटी की अनुमति लेकर नहीं की गई, इसलिए वह न होनी चाहिए। जब कि सत्य यह था, कि इस कान्फ्रेन्स में योग देने के लिये लाहौर समाज के सब मेम्बर निमंत्रित किए गए थे।

उपस्थित जनों ने उनकी इस आपत्ति को पूर्णतः

अनुचित समझकर उस पर कुछ ध्यान न दिया, और लाला काशीराम का मुझ पर यह शोचनीय वार भी ख़ाली गया।

लाला काशी राम और उनके कुछ साथियों ने अज्ञान वशतः यह समझा हुआ था, कि जैसे सत्यानन्द अपने मुंह से कुछ शब्द निकाल कर औरों को आकृष्ट कर सकता है, वैसे हि हम भी कुछ कहकर औरों को अपनी ओर आकृष्ट कर सकते हैं—धर्म्म की उच्च शक्तियों से विहीन और महा हानिकारक नीच भावों के अधीन रहकर यह लोग और समझ हि क्या सकते थे? इसलिए उपरोक्त घटना से अगले साल अर्थात् जुलाई सन्० १८८४ ई० में उन्होंने प्रबन्ध कर्तृ सभा की ओर से यह रिज़ोलयूशन पास कराया, कि मेरे भिन्न तीन और जन भी ब्रह्म मन्दिर की वेदी पर बैठकर उपदेश का काम किया करें। इन तीन जनों में से एक ख़ुद काशीराम साहब थे और एक जन इन्हीं के साथी और सहायक एक और नव विधानी थे।

लाला काशीराम ने इस विषय में कमेटी को जो चिट्ठी लिखी थी, उसमें उन्हों ने मुझ पर यह झूठा इलज़ाम लगाया था:—

"That he (S.N.Agnihotri) wants to reserve to himself the exclusive right of occupying the Punjab Brahmo Samaj pulpit."

(भावार्थ।)

"सत्यानन्द अग्निहोत्री यह चाहते हैं, कि पंजाब ब्राह्म समाज की वेदी पर से उनके भिन्न कोई और उपदेश न दे।"

इस झूठ की तरदीद और आचार्य्य पद विषयक योग्यता के विषय में मैंने जो पत्र लिखा, उसमें से उपरोक्त मिथ्या कलंक के सम्बन्ध में निम्न लिखित अंश उद्धृत किया जाता है:—

"Certainly L. Kashi Ram does not mean to do justice to me, when he brings such an unfounded and damaging charge against me.

As regards his motives they are of course clear to me, and those who have carefully studied what he has been saying to others and writing about me, from time to time in the newspapers; of which the above mentioned charge is a fresh example. He would even try to injure the character of others if he can only thereby lower me in the eyes of the Public. Did he not the other day publish in a Paper that the young men who rose to accept the Brahm Dharm after hearing my sermons from the Vedi, had "bolted away" while in fact they had not. Was not this a reflection upon their character and even on the position of the Punjab Brahmo Samaj.

I would not lengthen my letter by giving further examples and thereby showing to you

what he had been doing in connection with my ministry in the Local Brahmo Mandir. Suffice it to say that if by speaking truth and nothing but truth regarding his motive Lala Kashi Ram thinks that "I am lowered considerably beneath the high position......... in the Brahmic world," then I gladly accept his verdicts."

(भावार्थ ।)

"निस्सन्देह लाला काशीराम ने मुझ पर यह मिथ्या और मेरे लिए हानिकारक कलंक लगा कर मेरे साथ न्यायमूलक व्यवहार नहीं किया।

अब रही उनकी बुरी नीयत, वह जैसे मेरे निकट साफ़ है, वैसे हि वह उन लोगों से भी छिपी हुई नहीं है, जिन्हों ने उनकी उन बातों पर जो वह मेरे सम्बन्ध में औरों से ज़ुबानी करते रहे हैं, अथवा अख़बारों में लिखते रहे हैं, सावधानता पूर्वक विचार किया है, और अन्य मिथ्या कलंकों की न्याईं यह कलंक भी जिसका एक नया दृष्टान्त है। मुझे साधारण जनों की आंखों में गिराने के निमित्त यदि उन्हें औरों के चरित्र को भी कलंकित करने की ज़रूरत पड़े, तो वह ऐसा करने के लिए भी तैयार रहते हैं। क्या कुछ दिन हुए उन्हों ने एक पत्र में यह झूठी ख़बर प्रकाशित नहीं की थी, कि जिन कई नव युवकों ने वेदी पर से मेरे उपदेशों को सुन और ब्राह्म धर्म्म ग्रहण किया था, वह चम्पत हो गए हैं, जब कि सत्य यह था कि वह भाग नहीं गए थे? क्या उनकी

यह क्रिया उन लोगों के सम्बन्ध में अनुचित न थी ? और क्या वह पंजाब ब्राह्म समाज की पोज़ीशन के लिए भी हानिकारक न थी ?

मैं इस विषय में और बहुत से दृष्टान्त देकर अपनी इस चिट्ठी को लम्बा करना नहीं चाहता, और अब तक वह मेरे आचार्य्य के पद के सम्बन्ध में जो कुछ करते रहे हैं, उसका कुछ और वर्णन करना पसन्द नहीं करता, परन्तु यहां इतना हि कह देना यथेष्ट समझता हूं, कि यदि लाला काशी राम की बुरी नीयत को सत्य और केवल सत्य रूप में प्रगट करने से उनके लिखने के अनुसार "ब्राह्मिक दुनिया में मैंने अपने आपको अपने ऊंचे पद से नीचे गिरा दिया है," तो मैं उनकी इस व्यवस्था को ख़ुशी से ग्रहण करता हूं।"

आगे चलकर आचार्य्य पद की योग्यता और क़द्रदानी के विषय में मैंने यह लिखा :—

"I am sure you and other members of the Committee remember that in a meeting held previous to one in which the above resolution was passed, I told you all that I never aspire for the ministership of the P. B. S. and that I never requested the samaj to appoint me as such. The Punjab B. S. yet seems far off from knowing and appreciating the true *worth and position of a minister of Religion*. Most of our friends hold and understand religion in the mere cold and intellectual

belief of a certain creed and to them any one can minister, if he only can speak some thing regarding their creed. Under such circumstances it is useless for me to speak on this subject at any great length. All I wished in the meeting then and wish even now, is to get *at least a day* in the week *exclusively* for my ministeration in the *mandir*–either in the name of "regular-minister" or any other else. Up to this time the Committee have allowed me to preach on Sunday evening. But if Sunday evening is so important that it can not be allowed to me, as it is particularly required by L. Kanshi Ram for which he has been trying so hard, let him have it and glorify it and let the Committee allow me some other day of the week for my exclusive use, as long as I remain in the station. If even this can not be done, and if members think that by giving me Sunday or any other day exclusively for my ministration, there is *danger* of my ultimately getting hold of the mandir, like those of the Nava Bidhani apostles of Culcutta, then dear brother, let this letter be accepted as a *resignation* from my ministership, for I am not prepared either to hear such *insulting and mean suspicion* about me, or to say anything more in future in connection with this subject.

( भावार्थ । )

"मुझे यक़ीन है, कि आपको और कमेटी के अन्य

मेम्बरों को यह बात याद होगी, कि उसकी जिस सभा में उपरोक्त रिज़ोल्यूशन पास हुआ था, उस से पहले कमेटी की इस विषय में जो सभा हुई थी, उस में मैंने आप सब के सामने यह कह दिया था, कि मैं पंजाब ब्राह्म समाज के आचार्य्य बनने की कोई लालसा नहीं रखता, और मैंने कभी भी समाज के इस पद पर नियुक्त किए जाने के लिए आवेदन नहीं किया। पंजाब ब्राह्म समाज अब तक न धर्म्म सम्बन्धी आचार्य्य के पद की योग्यता को हि जानती है, और न उसका समादर हि कर सकती है। समाज के बहुत से जन तो कुछ मतों को मान्सिक तौर से मान लेने को हि धर्म्म समझते हैं, और उनके निकट उनके मत के विषय में जो जन कोई कुछ बात सुना सकता हो, वही आचार्य्य होने के योग्य है। ऐसी दशा में इस विषय में मेरे लिए कुछ और कहना बिलकुल बेफ़ायदा है। इसीलिए जो कुछ मैंने उस सभा में चाहा था और अब भी चाहता हूं, वह यह, कि मुझे सप्ताह में कम से कम एक दिन उपदेश करने के लिए मिलना चाहिए—चाहे वह "नियमत आचार्य्य" के नाम से हो, और चाहे किसी और नाम से। अब तक कमेटी ने मुझे इतवार की शाम को उपदेश देने की अनु-मति दी है, परन्तु यदि यह दिन ऐसे महत्व का है, कि वह मुझे नहीं दिया जा सकता, क्योंकि उसकी प्राप्ति

के लिए लाला काशीराम अत्यन्त यत्न करते रहे हैं, तो यह दिन उन्हीं को देदिया जाय, और वह उसके महत्व को स्थापन करें। परन्तु लाहौर में होने के दिनों में मुझे हफ़्ते में एक दिन केवल मेरे काम के लिए कमेटी देदे। यदि हफ़्ते में मुझे इतवार वा किसी और दिन के देने में कमेटी को यह शंका हो सकती हो, कि जैसे कलकत्ते में नव विधानी प्रेरित जनों ने वहां का मन्दिर दबा लिया था, वैसे हि कहीं मैं भी लाहौर का मन्दिर न दबालूं, तब इस चिट्ठी को मेरे आचार्य्य पद के सम्बन्ध में त्याग पत्र (इस्तेफ़ा) समझा जाय, क्योंकि मैं इस प्रकार के अपमान-मूलक और कमीना सन्देह के सुनने के लिए तैयार नहीं हूं, और न इस विषय में आगे के लिए कुछ और कहना चाहता हूं।"

धर्म्म जीवन के विचार से अपने से श्रेष्ट जनों के प्रति जो लोग अपनी किसी नीच प्रकृति के कारण श्रद्धा न कर सकते हों, अथवा किसी अपने से श्रेष्ट जन को अपनी किसी बुरी गति के विरुद्ध पाकर उसके प्रति द्वेष भाव से भरे रहते हों, और उसे हानि पहुंचाने के लिए अपने भीतर प्रेरणाएं अनुभव करते हों; अपने से किसी श्रेष्ट की श्रेष्टता को देखकर ईर्षा भाव से जलते और कुढ़ते रहते हों, और अपने निकृष्ट भावों से प्रेरित होकर औरों के लिए क्लेशकर और हानिकारक बनने के लिए

तैयार रहते हों, और घमंड के वश होकर अपनी इस अधम अवस्था पर फूलते और ख़ुश होते हों, वह मेरे उच्च प्रभावों के ग्रहण करने के योग्य नहीं हो सकते थे। इसीलिए सन् १८८५ ई० में पंजाब ब्राह्म समाज की मैने-जिंग कमेटी ने जब मुझे अपनी समाज के आचार्य्य पद के लिए निर्व्वाचित किया, तब मैंने उस पद के ग्रहण करने से साफ़ इनकार किया। मैंने अपने इस इनकार के सम्बन्ध में समाज के सेक्रेटरी को अंग्रेज़ी में जो पत्र लिखा वह यह था :—

LAHORE.
1st December 85.

" My dear sir,

While I thank the Committee for unanimously electing me as a minister of the P. B. Samaj, I beg to state that I can not accept the office for certain reasons, and therefore respectfully beg to resign the same. Some of my reasons for doing so are as follows :—

(1) General want of that respect and regard for a superior, which a religious society ought to enjoin and enforce on its members.

(2) General want of recognition of the due importance of the spiritual life and fitness in the appointment of ministers.

(3) Bitter feelings and bickering spirit that prevail in the Samaj and cause fearful pains in the hearts of peace-loving members and by which not only the progress of the

Samaj is checked, but its cause and good influence is being entirely lost."

(भावार्थ।)

श्री मंत्री पंजाब ब्राह्म समाज की सेवा में।

लाहौर

१, दिसम्बर १८८५ ई०।

मेरे प्रिय महाशय!

मैं कमेटी को इस बात के लिए कि उसने सर्व्व सम्मति से मुझे पंजाब ब्राह्म समाज के आचार्य्य पद के लिए निर्व्वाचित किया है, धन्यवाद देता हूं। परन्तु मैं यह निवेदन करता हूं, कि मैं कई कारणों से इस पद को ग्रहण नहीं कर सकता, और इसलिए इस पत्र के द्वारा उसे त्याग करता हूं। मेरे ऐसा करने के कुछ कारण यह हैं:—

(१) समाज में किसी श्रेष्ट जन के सम्बन्ध में साधारणतः उस श्रद्धा और सन्मान भाव का अभाव होना कि जिसका किसी धर्म्म समाज के मेम्बरों की ओर से प्रदर्शित और प्रचलित होना आवश्यक है।

(२) समाज के आचार्य्य के नियुक्त करने में ऐसे पद के लिए उच्च जीवन और योग्यता का कुछ विचार न होना।

(३) समाज के बहुत से मेम्बरों में द्वेष और परस्पर असद्भाव का वर्तमान होना, जो एक ओर जहां मेरे

जैसे शान्ति प्रिय हृदयों के लिए बहुत क्लेश दायक है, वहां दूसरी ओर समाज की उन्नति में बाधक और उसके अच्छे असरों को नष्ट करने वाला है।

आपका सद्भाव से,

स० न० अग्निहोत्री।

इस आचार्य्य पद के त्याग के बाद भी मैं समाज का मेम्बर बना रहा, और यद्यपि उन लोगों के विशेष आवेदन पर मैं कभी २ ब्रह्म मन्दिर में उपदेश दे देता था, तथापि मैं अपने जीवन व्रत के सम्बन्ध में सब काम अपने तौर पर अलग ही करता था। सन् १८८६ ई० में मेरे विरोधियों की एक बहुत बड़ी दुष्टता ने मुझे आखिरकार इस समाज की इस मामूली मेम्बरी को भी छोड़ने के लिए मजबूर कर दिया। यह अत्यन्त शोचनीय, कमीना, और उनके और उनकी समाज के लिए अत्यन्त अनिष्टकारी घटना यह थी:—

एप्रिल मास में उक्त समाज का एक उत्सव था। समाज के सेक्रेटरी लाला गंडामल ने मुझ से दरख़ास्त की, कि इस अवसर पर मैं उनके मन्दिर में एक लेकचर दूं। मैंने लेकचर देना मंज़ूर कर लिया। उन्हों ने मेरे लेकचर की नोटिसें छाप कर आम लोगों में बंटवादीं। २४ एप्रिल की शाम को मेरा यह लेकचर होने वाला था। २३ एप्रिल को लाला काशी राम और उनके साथियों को मेरे इस लेकचर का पता लगा। वह लोग ईर्षा और द्वेष

भाव से जल उठे। उनके हृदय में निकृष्ट भावों के द्वारा यह प्रबल प्रेरणा उठने लगी, कि किसी तरह मेरे लेकचर को (जो उन्हीं की समाज के भले के लिए था) बन्द किया जाय। काशीराम ने सोच साच कर एक दस्ती नोटिस अपने दस्तखत के साथ समाज के बोर्ड पर इस विषय की लगाई, कि २४ एप्रिल को मेरे लेकचर के समय वह समाज मन्दिर में "सत्संग" (?) की सभा करेंगे, और उस बोर्ड पर मेरे लेकचर के छपे हुए जो नोटिस लगे हुए थे, उन्हें फाड़ कर फैंक दिया। बहुत से लोग इस खबर को पाकर कि आज मेरे विरोधी गण मेरा लेकचर न होने देंगे, और फ़साद करेंगे, तमाशा देखने के लिए समय से पहले हि ब्रह्म मन्दिर में इकट्ठे होगए। काशीराम जी अपने नव विधानी साथी लाला रल्लाराम मेम्बर और समाज के एक और मेम्बर लाला रामजीदास को साथ लेकर मन्दिर में पहुंचे, और सेक्रेटरी से कहने लगे, कि हम लोग इस समय कोई लेकचर न होने देंगे और सत्संग की सभा करेंगे। यद्यपि सेक्रेटरी ने उन्हें बताया, कि उनका ऐसा करना समाज के नियमों के पूर्णतः विरुद्ध है, और वर्तमान जनों में से भी बहुत से जनों ने एक आवाज़ से यह कहा, कि छपी हुई नोटिस के अनुसार हम लोग तो लेकचर सुनने के लिए आए हैं, और इस समय लेकचर हि होना चाहिए; तथापि काशी

राम पर जो भूत सवार थे, उनकी प्रबल प्रेरणा के अनुसार वह यही कहे गए, कि लेकचर हरगिज़ न होगा। उनकी इस शरमनाक क्रिया का हाल सुनकर मैंने फ़ौरन एक चिट्ठी सेक्रेटरी के पास भेजी, और उसमें यह लिखा कि ऐसे हालात में मैं लेकचर देना नहीं चाहता, और मुझे सख़्त अफ़सोस है, कि जो लोग मेरा लेकचर सुनने के लिए एकत्र हुए हैं, उन्हें निराश होना पड़ेगा। यह चिट्ठी उपस्थित जनों को पढ़कर सुनाई गई। परन्तु काशी राम के निकृष्ट भाव फिर भी ठंढे न हुए। उन्हों ने और उनके किसी २ साथी ने मेरे विरुद्ध ज़ोर २ से कुछ कहना शुरू किया। इस पर बहुत से वर्तमान जनों ने भी बहुत सा शोर ग़ुल और रौला मचाना आरम्भ किया, और इस जोश की हालत में कितने हि जनों ने लैम्प तोड़ दिए और दंगा शुरू किया, और यद्यपि सेक्रेटरी और मन्दिर के दो ट्रस्टियों ने (जो उस समय वहां मौजूद थे) काशी राम और उनके साथियों को मन्दिर से निकल जाने के लिए बार २ कहा, तो भी ११ बजे रात तक यह लोग वहीं डटे रहे। इन लोगों की इन दुष्क्रियाओं का साधारण जनों पर जैसा कुछ बुरा असर पड़ा, उसके सम्बन्ध में लाला गंडामल सेक्रेटरी ने अपनी रिपोर्ट में जो कुछ लिखा था, वह यह था :—

"In short such a bad impression was caused among the people by the conduct of Lala

Kashi Ram, Lala Ralla Ram Bhimbhat and others that what was done during the space of 25 years, was undone in a day. No outsider was seen at the engagements of the *Utsav*, although hundreds of gentlemen were invited, directly or indirectly, Brahmo Dharm was greatly lowered in the estimation of the people, the projectors of the unseemly scenes were taunted for their high profession of Brahmo Dharm, and reproached as hypocrites and dissemblers by Brahmos and others."

( भावार्थ । )

" संक्षेपतः यह कि लाला काशीराम, लाला रलाराम भिम्बट और अन्य जनों के इस आचारण का लोगों पर इतना बुरा असर पड़ा, कि जो कुछ २५ वर्षों का बना बनाया काम था, वह एक दिन में नष्ट होगया । इसीलिए उत्सव की सभाओं में बाहर का कोई आदमी न आया, यद्यपि सैंकड़ों भद्र जनों को साक्षात् और असाक्षात् रूप से निमंत्रित किया गया था । साधारण जनों की आंखों में ब्राह्म धर्म्म गिर गया और जिन लोगों ने अपने आचरण से यह बुरा दृश्य पैदा किया था, उनके ब्राह्म धर्म्म के विषय में बड़े २ दावों पर लोग हंसी उड़ाते थे और क्या ब्राह्मो और क्या और लोग उनको कपटी और दम्भी बताते थे ।"

इन लोगों की इस दुष्टता पर विचार करने के लिए पहले मन्दिर के ट्रस्टियों की एक सभा हुई, और

फिर उसके रिज़ोल्यूशन के अनुसार मैनेजिंग कमेटी की एक मीटिंग हुई, जिस में बहुत गहरे विचार के बाद यह रिज़ोल्यूशन पास हुआ :—

"That the conduct of Lala Kashi Ram and Lala Ramji Dass in bringing about, and that of Lala Ralla Ram Bhimbhat in abetting, the proceedings which led to the unseemly scenes of the 24th April 1886, was in the opinion of the Committee of management scandalous and reprehensible and Committee recommended that the above members should apologise (within two weeks) publicly for their conduct which had caused the disgraceful scenes unheard of in the history of the Punjab Brahmo Samaj."

( भावार्थ । )

"मैनेजिंग कमेटी की राय में २४ एप्रिल सन् १८८६ ई० को ब्रह्म मन्दिर में जो बुरा दृश्य पैदा किया गया, उसके सम्बन्ध में लाला काशीराम और लाला रामजीदास का आचरण उसके पैदा करने और लाला रलाराम भिम्भट का उस में सहायक बनने के विचार से अत्यन्त निकृष्ट और घृणित था, और यह कमेटी अनुरोध करती है, कि उपरोक्त मेम्बरों को, दो सप्ताह के अन्दर, साधारण जनों के सन्मुख अपने ऐसे आचरण के लिए क्षमा प्रार्थना करनी चाहिए, कि जिस के द्वारा उन्हों ने ऐसा शरमनाक दृश्य उत्पन्न किया, कि जैसा पंजाब ब्राह्म समाज के इतिहास में कभी नहीं हुआ था।"

फिर इस रिज़ोल्यूशन की ख़बर पाने के बाद भी, जब लाला काशीराम और उनके साथियों ने दो सप्ताह के अन्तर माफ़ी न मांगी, तब फिर इसी कमेटी ने अपने २१ मई सन् १८८६ ई० के जलसे में सर्व्व सम्मति से यह फ़ैसला किया, कि जनरल कमेटी की मंज़ूरी से लाला काशीराम और लाला रलाराम मैनेजिंग कमेटी की मेम्बरी से ख़ारिज किए जांए, और वह उस समय तक समाज का कोई पद न पावें, जब तक कि वह अपने इन बुरे कर्म्मों के लिए काफ़ी दण्ड ग्रहण न करें, और लाला रामजीदास का नाम समाज की मेम्बरी से ख़ारिज किया जावे।

इस फ़ैसले के बाद फिर क्या हुआ, इसका उत्तर वही लोग दे सकते हैं।

३० जनवरी सन् १८८७ ई० को इतवार के दिन दोपहर के दो बजे से कुछ पहले पंजाब ब्राह्म समाज की प्रबन्ध कारिणी सभा के ग्यारह मेम्बरों का एक "डेप्यूटेशन" मेरे घर पर इस अभिप्राय से पहुंचा, कि मैं उनके मन्दिर में जो उपदेश दिया करता था, उन्हें बन्द न करूं। मैंने उन्हें कहा, कि मैं एक "प्राईवेट" जन की न्याई कभी २ आपके बुलाने और अवकाश मिलने पर आपके मन्दिर में उपदेश दे सकता हूं, यदि मेरे ऐसा करने में आप लोग कोई विघ्न न डालें, और मेरे जीवन व्रत सम्बन्धी कार्य्य में कोई रोक न बनें, अन्यथा नहीं। इस

कथन के प्रसंग में मैंने उनके सन्मुख अपने अनोखे व्रत के सम्बन्ध में बहुत स्पष्ट रूप से जो कुछ कहा था, वह ६ फ़रवरी १८८७ ई० के धर्म्म जीवन पत्र में प्रकाशित हुआ था। मेरा वह बयान यह था:—

"आपकी यह समाज और बहुत सी समाजों की न्याईं एक ऐसी समाज है, कि जिसका साधारणतः केवल यही अभिप्राय है, कि आप लोगों ने जो मन्दिर बना रक्खा है, उस में आठवें दिन कुछ लोग आकर थोड़ी देर के लिए उसी तरह कुछ ईश्वर का भजन कीर्तन आदि सुन लिया करें, जिस तरह और ठाकुर और देवी द्वारों आदि में बहुत से हिन्दु (किसी देवी देवता के सम्बन्ध में) किया वा सुना करते हैं।.........मैं इस प्रकार की अवस्था को ठीक नहीं समझता। मेरा मिशन कुछ और हि है। मैं इसलिए पैदा नहीं हुआ, कि लोगों को कुछ ऐसे स्तोत्र सिखला या याद करादूं, कि जिन में किसी देवी वा देवता के नाम के स्थान में एक परमेश्वर का हि नाम आया करे, या लोग संसार की दृष्टि में अपने साधारण जीवन के विचार से नेक बन कर प्रातः काल वा सन्ध्या को अपने मुंह से ईश्वर का नाम ले लिया करें। किन्तु मेरा मिशन इस अवस्था को दूर करके आत्माओं में नव जीवन, मोक्ष और उच्च जीवन को उत्पन्न करना है, और उन्हें पाप

जीवन से निकाल कर इसी दुनिया में उनके कुल सम्बन्धों को पवित्र करके उन्हें धर्म्म राज्य की बरकतों से माला माल करना है। इसी उद्देश्य को सन्मुख रख कर मैंने गत चार वर्ष तक आपके मन्दिर में बराबर उपदेश दिए हैं, यद्यपि आप लोगों ने मेरे इस उद्देश्य और मेरी शिक्षा से लाभ न उठाया हो, परन्तु और बहुत से लोगों ने उस से नई ज़िन्दगी अवश्य पाई है।"

आख़िरकार मैंने प्रायः बारह वर्ष के निहायत कडुवे तजरुबे के बाद ( जिस में प्रायः आठ साल तक का साधारण ब्राह्म समाज का तजरुबा भी शामिल है ) यह पूर्ण प्रमाण पाकर, कि

( १ ) ब्राह्म समाज के लोगों को न उस उच्च-जीवन का ज्ञान है, और न उनका ऐसा कोई उच्च आदर्श है, कि जिसका मनुष्यों में उत्पन्न करना और दिखाना मेरा मिशन है,

( २ ) कई और सम्प्रदायों की न्याईं ब्राह्म समाज भी एक ऐसा सम्प्रदाय है, कि जिस में बड़े २ उच्च-पदस्थ लोग भी समय २ में मिथ्या और अन्याय का आश्रय लेने से नहीं रुकते,

( ३ ) ब्राह्म समाज के लोगों में साधारणतः एक

और अहंकार और नाना वासनाओं का अधिकार और कितनों में औरों के भिन्न मेरे प्रति द्वेष और ईर्षा आदि निकृष्ट भावों की वर्तमानता से मैं अपने उच्च प्रभावों को उनके हृदयों तक पहुंचा कर उन में कोई उच्च परिवर्तन पैदा नहीं कर सकता, और मेरा उन पर सारा परिश्रम निष्फल जाता है,

( ४ ) उन में से कितने हि लोग मेरे जीवन व्रत की सिद्धि में बहुत बड़ी रोक हैं,

मैंने उस से पूर्णतः अलग होजाने का फ़ैसला करके पहली नवम्बर सन् १८८७ ई० को अपनी मेम्बरी के विषय में भी इस्तेफ़ा भेज दिया और इस प्रकार उसे सदा के लिए त्याग कर दिया।

---

# दूसरा परिच्छेद।

—:०:—

## साधारण ब्राह्म समाज के साथ मेरा सम्बन्ध और उसका त्याग।

—:०:—

पंजाब ब्राह्म समाज को छोड़ कर अब मैं साधारण ब्राह्म समाज के साथ अपने सम्बन्ध के विषय में कुछ बयान करना चाहता हूं। मई सन् १८७८ ई० में कलकत्ते

में साधारण ब्राह्म समाज स्थापन हुई। इसी साल मैं भी उसका मेम्बर हुआ। जनवरी सन् १८८० ई० में इस समाज ने मेरी अनुमति लेकर अपनी उत्सव सम्बन्धी एक बड़ी सभा में अनुष्ठान पूर्व्वक मुझे मिशनरी के पद पर वरण किया। इसी साल इस समाज ने अपने कलकत्ते के मन्दिर का, औरों के भिन्न, मुझे भी ट्रस्टी नियुक्त किया। उपरोक्त अनुष्ठान के समय मेरे भिन्न जो तीन जन और भी मिशनरी बने, उन के नाम यह थे; (१) पंडित शिवनाथ शास्त्री एम० ए०, (२) पंडित विजय कृष्ण गोस्वामी, (३) पंडित राम कुमार विद्या रत्न।

पिछले तीनों जन मेरी न्याई परिवार रखते थे, और वह समाज से अपने भरण पोषण के लिए निर्व्वाह वृत्ति भी लेते थे। मैं उस समय सरकारी नौकरी करता था, और मुझे समाज से किसी वृत्ति के लेने की ज़रूरत न थी। परन्तु १८८२ ई० के अन्त में नौकरी छोड़ने के बाद भी मैंने अपने और अपने पारिवारिक जनों के भरण पोषण के लिए कभी किसी से कोई वृत्ति नहीं चाही, और नहीं ग्रहण की। पंजाब ब्राह्म समाज के लोगों ने शुरू २ में यह चाहा भी था, कि मैं उनकी ओर से कोई ऐसी वृत्ति ग्रहण करूं, परन्तु मैंने उन्हें बता दिया था, कि मैं यद्यपि किसी की ओर से कुछ अर्पण करने पर और उसे उचित समझने पर कोई सहाय ग्रहण कर सकता हूं, परन्तु मासिक

वृत्ति लेकर और किसी मनुष्य या सोसायइटी के अधीन रहकर मैं अपने निराले जीवन व्रत को पूरा नहीं कर सकता—नहीं कर सकता था, तभी मुझे गवर्नमेन्ट की भी नौकरी छोड़नी पड़ी। इसी लिए सरकारी नौकरी के त्याग के अनन्तर मैं साधारण ब्राह्म समाज का केवल आनरेरी मिशनरी रहा।

इन दिनों यद्यपि उपरोक्त समाज के मूल विश्वासों का मैं भी विश्वासी था, तथापि अपने जीवन व्रत और अपनी बढ़ती हुई देव शक्तियों के अनुसार जिस २ विषय में मैं जब और जो कुछ ठीक समझता था, उसी का प्रचार और अपनी इन शक्तियों के प्रयोग से आत्माओं में उच्च परिवर्तन उत्पन्न करता था। हां, यह अवश्य था, कि साधारण समाज के नियम के अनुसार ( जो ठीक था ) मैं हर तीसरे महीने के अन्त में अपने सारे काम की रिपोर्ट उसकी प्रबन्ध कर्तृ सभा के पास भेजा करता था, और मेरी इस रिपोर्ट का ख़ुलासा और प्रचारकों की रिपोर्टों के ख़ुलासे के साथ जनरल कमेटी में पेश होता था। मेरी इस नियमित रिपोर्ट के भेजने में कभी नाग़ा नहीं हुआ, जब कि किसी २ बंगाली मिशनरी की ओर से कभी २ यह त्रैमासिक रिपोर्ट नहीं भी पहुंचती थी। समाज के प्रचारकों में से पंडित शिवनाथ शास्त्री एक ऐसे जन थे, जो मेरे साथ कुछ विशेष मित्र भाव प्रदर्शन करते थे—वह अकसर मुझे चिट्ठियां लिखते थे, और मैं भी उन्हें पत्र लिखता था।

साधारण ब्राह्म समाज भी कहलाने वाली कई और धर्म्म समाजों की न्याईं केवल एक प्रकार के धर्म्म मत पर स्थापित थी; अर्थात् जो जन उसके कुछ मूल मतों पर विश्वास रखता हो, और उसका नैतिक चाल चलन अत्यन्त आपत्ति-जनक न हो, और वह कुछ वार्षिक चन्दा भी देना चाहता हो, वह इस समाज का मेम्बर बन सकता था। वोट देने के विचार से सब के सब मेम्बर बराबर का दरजा रखते थे। उन्हीं मेम्बरों में से निर्व्वाचन विधि के अनुसार चालीस जनों की एक जनरल कमेटी और फिर इन चालीस जनों में से बारह जनों की एक मैनेजिंग कमेटी बनाई जाती थी। क्या मैनेजिंग कमेटी के मेम्बरों और क्या समाज के प्रचारकों में ऐसे लोग पाए जाते थे, कि जो मांसाहार के भिन्न किसी २ नशे का भी सेवन करते थे, और अपने विश्वास के अनुसार "ईश्वर" नामक पुरुष के सम्बन्ध में कुछ आराधना और कुछ प्रार्थना विषयक शब्दों के उच्चारण और भजन कीर्तन आदि को हि धर्म्म जानते थे, और जिस उच्च जीवन का प्रचार मेरे जीवन का परम लक्ष्य था, उसे न वह समझते थे, और न समझ सकते थे, और न उसकी कोई क़द्र करते थे।

यद्यपि शिवनाथ शास्त्री जी और सैकड़ों जनों की अपेक्षा मेरे साथ कुछ अधिक लगाव रखते थे, तथापि वह भी यह मानते थे, कि उनके कई प्रचारकों

की अपेक्षा उनकी समाज के कई और लोग बेहतर ज़िन्दगी रखते थे। ऐसी दशा में यह आवश्यक था, कि यह समाज अपनी गठन को उच्च जीवन के आधार पर नहीं, वरण केवल पोलीटिकल सोसाईटियों के नमूने पर क़ायम करे, और इसी लिए उपरोक्त प्रकार की निर्व्वाचन प्रणाली पर हि यह समाज स्थापित हुई थी। पोलीटिकल सोसाइटियों के नमूने पर स्थापित होने के कारण दो हि बातें हो सकती थीं, अर्थात् या तो ऐसी समाज में नाना विषयों में—विशेषतः धर्म्म विषयक विश्वासों में—परस्पर मत भेद होने पर उसके नाना मेम्बरों के ख़ूब दिल फटें, और उन में वैर भाव उत्पन्न हो, धर्म्म उपदेष्टाओं के सम्बन्ध में साधारण सभ्य मण्डली के नाना जनों में अश्रद्धा पैदा हो, और ईर्षा और द्वेष आदि भावों के उत्तेजित होने से परस्पर के प्रति झूठे अभियोगों ( इलज़ामों ) की उत्पत्ति हो, समाज के भीतर एक २ प्रकार के जनों की विरोधी मंडलियां पैदा हों, और समाज का नैतिक बल ( जो कुछ कि वह हो ) दिनों दिन क्षीण हो, या जो लोग उसके ऐसे बुरे प्रभावों में रह न सकते हों, वह उस से अलग होजाएं।

कुछ सालों के बाद हि मुझे मालूम होगया, कि समाज की ऐसी गठन धर्म्ममूलक नहीं। इस विषय में मैंने पंडित शिवनाथ शास्त्री को जो पत्र भेजा था, उसके

उत्तर में उन्हों ने अपनी २१ सितम्बर १८८४ ई० की चिट्ठी में मुझे लिखा कि,

"I too feel as keenly as you the necessity of a new organisation for the Samaj."

अर्थात्, "मैं भी आपकी तरह समाज के लिए नई गद्दैन की ज़रूरत को प्रबल रूप से अनुभव करता हूं।"

कुछ वर्षों के बाद समाज में उपरोक्त प्रकार की भयानक अवस्था पैदा होगई। १० मई १८८६ ई० की चिट्ठी में पंडित शिवनाथ शास्त्री ने इस विषय में मुझे जो कुछ लिखा, उस से इस बात की भली भांत पोषकता होती है। उनकी चिट्ठी यह थी :—

Calcutta,
10th May 1886.

My dear Agnihotri,

I received your letter a few days ago. I had to go out of town that very day and asked Nawadwip Babu to communicate to you our decision. I am extremely anxious to get away from town, but we expect some serious troubles, which may keep us down here.

These are the facts. For some time past Bijoy Babu* has begun to secretly teach some sorts of process of *Yoga* and teach many other

* A missionary of the Sadharan Samaj.

things along with it. For instance, it is a rule with those who accept this process, not to take things from the same vessel with another. Secondly the process is carried on in strict privacy.

The names of *Radha* and *Krishna*, that have done so much mischief to the country are freely used by Bijoy Babu and his followers....

These and similar proceedings have roused up a strong feeling of opposition amongst our members, so much so that there is apprehension of a rupture.

Yours sincerely,

Sivanath.

( भावार्थ । )

कलकत्ता ।

१० मई १८८६ ई० ।

मेरे प्यारे अग्निहोत्री,

कुछ दिन हुए आपकी चिट्ठी मुझे मिली थी, मैं उसी दिन कलकत्ते से बाहर जाने वाला था, इसीलिए मैंने नवद्वीप बाबू को कह दिया था, कि वह हमारे फ़ैसले के विषय में आप को लिख भेजें। मैं तो यहां से बाहर जाने के लिए अत्यन्त उत्कंठित हूं, परन्तु क्या करूं हम लोग यहां पर एक बड़ी विपद देख रहे हैं, कि जो हमारी रवानगी में रोक बन रही है।

हालात यह हैं :—कुछ दिनों से विजय बाबू* कुछ लोगों को चुपचाप एक प्रकार का योग सिखाते हैं, और उस के साथ बहुत सी और बातें भी सिखाते हैं।

दृष्टान्त स्थल में; वह यह शिक्षा देते हैं, कि जो लोग उसका साधन करें, वह एक दूसरे के साथ एक हि बर्तन में न खाया करें, दूसरे यह सारा काम बिलकुल छिपा कर किया जाता है।

वह राधा और कृष्ण के नाम, जिनके द्वारा इस देश को इतनी हानि पहुंची है, अकसर उच्चारण करते हैं,........उनकी इन और इसी प्रकार की कुछ और बातों ने हमारे सामाजिक जनों में अत्यन्त विरोधी भाव उत्पन्न कर दिया है, यहां तक कि अब हमारे परस्पर फट जाने का अन्देशा हो रहा है।

आपका स्नेह के साथ,

शिवनाथ।

इसके उत्तर में मैंने जो पत्र लिखा, उसमें से एक भाग उद्धृत किया जाता है :—

LAHORE.
15th May 1886.

My dear Sivanath,

Thanks for your letter of the 10th inst. I am sorry to learn that you "expect serious troubles" in the Church at Calcutta.

---

* साधारण समाज के एक मिशनरी।

I am not surprised at it. The constitution of our Church is so defective and it is unfortunately based on such a wrong basis, that it has in it the seed of rupture.........We will learn by the experience of this kind and thus see our defects, and then improve our constitution and make it a *spiritual* one instead of one similar to political associations as it is at present.

( भावार्थ । )

लाहौर ।

१५ मई, सन् १८८६ ई० ।

मेरे प्यारे शिवनाथ ।

आपकी १० मई की चिट्ठी के लिए धन्यवाद । मैं यह शोक के साथ माल्रूम करता हूं, कि आप कलकत्ते में समाज के सम्बन्ध में बहुत विपद की आशंका देखते हैं । मुझे इस में कोई आश्चर्य्य की बात नहीं बोध हुई । हमारी समाज की गठन इतनी दूषित है, और वह ऐसी ग़लत बुनियाद पर स्थापित है, कि उसके अन्दर छिफट जाने का बीज मौजूद है । हम लोग धीरे २ इस प्रकार के तजरबों से इसके दोषों को जान सकेंगे, और उसे पोलीटिकल सोसाइटियों के नमूने पर रखने के स्थान में जैसी कि वह अब तक है, धर्म्ममूलक बनाने की चेष्टा कर सकेंगे ।

आपका स्नेह के साथ,

सत्यानन्द अग्निहोत्री ।

परन्तु तजरबे ने जहां तक बताया वह यही, कि कोई भी मत-मूलक समाज धर्म्म अर्थात् उच्च जीवन के आधार पर स्थापित हो नहीं सकती।

यद्यपि शिवनाथ बाबू ने इण्डियन मेसेञ्जर में एक आर्टिकल लिखा था, जिस में उन्हों ने बताया था, कि हर एक ब्राह्मो को यह स्वाधीनता हासिल है, कि वह चैतन्य की वैष्णव, और पाल की क्रिश्चियन शिक्षा से जिस बात को अपने निकट ठीक समझे, उसे ग्रहण करले, तथापि इसके लिखते समय वह अपनी और अपने सामाजिक जनों की उस प्रकृति को भूल गए थे, कि जिसने उन्हें इस लेख के अनुसार चलने के लिए सर्वथा अयोग्य बना रक्खा था। इसीलिए विजय बाबू आख़िरकार समाज से अलग किए गए।

विजय बाबू ब्राह्म समाज के बहुत पुराने मिशनरी थे, उन्हों ने समाज की बहुत सेवा की थी। वह धर्म्म के लिए अपने हृदय में स्पृहा रखते थे, और चाहते थे कि उन्हें कोई रास्ता मिले। ईश्वर जी ख़ुद उन्हें कुछ नहीं बताते थे। ऐसी दशा में उन्हें मनुष्य गुरु की आवश्यकता बोध हुई। वह अंग्रेज़ी बहुत थोड़ी, परन्तु संस्कृत अच्छी जानते थे। उन्हों ने हिन्दु शास्त्रों के पाठ से "योग" की महिमा और उसके साधन की विधि सीखने के लिए गुरु की आवश्यकता अनुभव की, और उसी धुन में भटक कर

कहीं के कहीं पहुंच गए। कुछ सालों के बाद पंडित रामकुमार विद्यारत्न का भी वही हाल हुआ। ब्राह्म समाज के कहलाने वाले ईश्वर–गुरु ने जब उन्हें कुछ न बताया (जैसा कि वह कुछ नहीं बता सकते थे) तब वह भी एक दिन समाज को छोड़ कर हिन्दुओं की प्रचलित विधि के अनुसार संन्यासी बन गए।

मैं यद्यपि इस साल अर्थात् १८८६ ई० में ईश्वर का पूर्ण विश्वासी था, तथापि मुझ पर यह सत्य प्रगट होगया था, कि जिस प्रकार कोई मनुष्य रात्रि के अन्धकार के समय अपने घर को ईश्वर से प्रार्थना करके ज्योतिर्म्मान नहीं कर सकता, अपने बेटे को किसी अंग्रेज़ी जानने वाले शिक्षक के पास रखने के बिना ईश्वर के द्वारा उसे अंग्रेज़ी भाषा नहीं सिखा सकता, उसी प्रकार जब तक कोई असत्य और अहित बोधी और सत्य और हित परायण आत्मा किसी ऐसे जन के हृदय को जो ऐसी बोध शक्तियों से शून्य हो, अपनी ज्योति और शक्ति के द्वारा परिवर्तित न करे, तब तक वह ईश्वर को मान कर और उसकी किसी प्रचलित विधि से पूजा करके भी अपनी नाना नीच गतियों से उद्धार नहीं पा सकता, और न उच्च जीवन का आकांक्षी बन सकता है। इसी लिए उसी साल सच्चे गुरु की आवश्यकता के विषय में मैंने भी अपने अख़बार "धर्म्म जीवन" में कुछ लेख प्रकाशित

किए थे। इस उच्च परिवर्तन को मैं उस समय "नव जीवन" की प्राप्ति कहता था। मैं न केवल साधारण ब्राह्म लोगों को, किन्तु समाज की प्रबन्ध कर्तृ सभा के भी कितने हि मेम्बरों को, इस "नव जीवन" से शून्य देख कर, इस बात को ठीक न समझता था, कि ऐसे लोग मेरे जैसे जन के परिचालक बनें। इसीलिए मैं साधारण समाज की पोलीटिकल नमूने की गठन को बहुत दूषित समझता था। परन्तु वह लोग न मेरी इस पोज़ीशन को समझते थे, और न अपनी ऐसी अवस्था रख कर उसकी गठन में मेरी इच्छा के अनुसार कोई तबदीली ला सकते थे। इसके भिन्न मिशनरी लोगों के परस्पर का सम्बन्ध भी धर्म्म-मूलक न था। समाज के नाना जन भी उनके साथ कोई श्रद्धा-मूलक सम्बन्ध न रखते थे। फिर मेरे भिन्न इन मिशनरी जनों में जो लोग समाज से मासिक वृत्ति लेते थे, उन्हें प्रबन्ध कर्तृ सभा किसी और हि दृष्टि से देखती थी। इस प्रकार धर्म्म-मूलक गठन से विहीन सारी समाज में हि परस्पर बहुत कुछ असद्भाव फैला हुआ था। मैं इस महा शोचनीय अवस्था से बहुत व्यथित था। मैं इस विषय में पंडित शिवनाथ शास्त्री को भी लिखता रहता था। मेरे इसी प्रकार के एक पत्र को पाकर उन्हों ने समाज की ऐसी दशा के विषय में अपनी एक चिट्ठी में मुझे जो कुछ लिखा था, उसका वह अंश नीचे उद्धृत किया जाता है :—

Calcutta,
14th October 1886.

My dear Agnihotri,

Please excuse me for not being able to answer your last letter before this. I see you are thinking very seriously upon the present state of our Church. I can not tell you how much I feel myself weighed down by anxiety.

The whole body is *without organisation*, the few missionaries we have are not bound up together by ties of friendship, the relation between the members and the missionaries is not what it should be, the missionaries are not sufficiently respectful to the members of the Committee, who have executive control over the affairs of the whole Church. The whole body is split up into a number of mutually conflicting parties, differing from each other materially, in point of faith and spiritual discipline: serious differences of opinion are arising in the body and no effort is being made to keep together all these discordant elements."

( भावार्थ । )

कलकत्ता ।
१४ अकतूबर सन् १८८६ ई० ।

मेरे प्यारे अग्निहोत्री,

" कृपा करके मुझे माफ़ करें, कि मैं इस से पहिले

आप के पत्र का उत्तर न दे सका। मैं देखता हूं कि आप समाज की वर्तमान अवस्था के विषय में बहुत गाढ़ रूप से चिन्ता करते हैं। मैं आप को बता नहीं सकता, कि मैं भी इस विषय में कितने फ़िकर से लदा रहता हूं। सारी हि समाज गठन के बिना है। समाज में थोड़े से मिशनरी हैं, परन्तु वह भी मैत्र भाव से बन्धे हुए नहीं। मेम्बरों और मिशनरियों का वह सम्बन्ध नहीं, कि जो होना चाहिए। मिशनरी लोग कमेटी के उन मेम्बरों के प्रति यथेष्ट सन्मान भाव नहीं रखते, कि जो सारी समाज की बातों पर अधिकार रखते हैं। सारी समाज ऐसी कितनी हि परस्पर विरोधी मंडलियों में फटी हुई है, कि जो एक दूसरे से क्या विश्वास और क्या धर्म्म साधन के विषय में बहुत प्रभेद रखती हैं। सारी समाज में भयानक मत भेद जारी है, और इन परस्पर विरोधी जनों के मिलाए रखने के लिए कोई कोशिश नहीं होती।"

विजय बाबू के सम्बन्ध में अनुसन्धान करने के लिए जो सब कमेटी नियुक्त हुई थी, और उस ने इस विषय में अपनी जो रिपोर्ट लिखी थी, और उस पर मैनेजिंग कमेटी ने जो रिज़ोल्यूशन पास किया था, वह रिज़ोल्यूशन उपरोक्त रिपोर्ट के साथ समाज के बंगाली अखबार, "तत्व कौमुदी" में प्रकाशित हुआ था। मैंने उसे गहरे

शोक के साथ पढ़ा। यद्यपि विजय बाबू की कई बातों को मैं ठीक न समझता था, तथापि उन की कुछ बातों को ठीक जान कर मैंने अपना यह उच्च कर्तव्य अनुभव किया, कि जहां तक मैं उनका समर्थन कर सकता हूं, वहां तक मैं उन का भली भांत समर्थन करूं। इस उद्देश से मैंने उन्हें एक पत्र लिखा, जिस में मैंने पहिले इस फ़ैसले के विषय में अपनी निम्न लिखित राय प्रगट की :—

"Lahore.
17th June 1886.

My dear and revered brother,

I have read carefully and with deep regret the whole account published in the last issue of the "*Tattwa Kaumudi*" regarding your resignation, and the report of the Sub-Committee appointed by the Managing Committee of the S. B. S. to make an enquiry about it, and the decision of the Committee thereon.

2. To me the whole affair is most deplorable. I was prepared of course to see your resignation in the hands of the Committee, considering the circumstances under which you had to work lately, but I was little prepared to see the kind of report made by the Sub-Committee and the decision of the committee thereon.

I am sorry to find that the resolution of

the Managing Committee embodies the charges preferred against you in the spirit and words, which in my opinion, do not carry *exact* sense of your belief and principles, as stated in your letter of resignation and the report of the Sub-Committee."

( भावार्थ ।)

लाहौर।
१७ जून १८८६ ई०।

मेरे प्रिय और माननीय भ्राता।

मैंने "तत्व कौमदी" के पिछले परचे में आपके त्याग पत्र के विषय में जो हाल छपा है, उसे और उसके सम्बन्ध में विचार करने के लिए साधारण ब्राह्म समाज की ओर से जो सब कमेटी नियत की गई थी, उसकी रिपोर्ट, और उस पर कमेटी के फ़ैसले को ध्यान पूर्वक और गहरे शोक के साथ पढ़ा है।

२—मेरे लिए यह सब कुछ बहुत दुःख प्रद है। आप जिन हालात में पिछले दिनों काम करते थे, उन्हें सन्मुख लाकर मैं यही उम्मेद रखता था, कि आप कमेटी को अपना त्याग पत्र देदेंगे, परन्तु मैं सब कमेटी की इस प्रकार की रिपोर्ट और उस पर कमेटी के ऐसे फ़ैसले के देखने की आशा न करता था। मुझे यह मालूम करके शोक हुआ है, कि मैनेजिंग कमेटी के रिज़ोल्यूशन

में आपके विरुद्ध जो इलज़ाम दर्ज हैं, वह ऐसे भाव से और ऐसे शब्दों में लिखे गए हैं, कि जो आप के विश्वास और असूलों को, उसी प्रकार ठीक तौर से प्रगट नहीं करते, जिस प्रकार वह आपके त्याग-पत्र सम्बन्धी चिट्ठी और सब कमेटी की रिपोर्ट में दर्ज हैं।

इसके बाद मैंने उनकी शिक्षा प्रणाली और राधा कृष्ण के शब्दों के व्यवहार के विषय में उनकी भयानक भूल दिखा कर यह लिखाः—

"Then there are a few other minor points which I do not approve, for instance your prohibiting the use of flesh and allowing the use of fish at the same time.

Excepting these I beg to state that I do agree in *spirit*, though not entirely in form, with those teachings of yours, which have been condemned in strong terms by the entire body of the Managing Committee. I would have considered myself *wanting in moral courage* and *love of truth*, had I kept a silence over the matter and not raised my voice in your support.......................... They do not seem as yet to comprehend the meaning of the growth of life in soul, or else how could they dare to put a limit to the knowledge about it and virtually say (as illustrated in the nature of enquiry into your case) "So far and no further."

What they do not know and have no experience in their soul, they call *supersti-tious* and *mischievous*........................

To them religion is nothing but a *bundle of opinion*, which they profess to hold and not beyond it..........................................

It is all very well to say that ours is a Universal Church, but where exist those practical conditions and grounds for such a belief? Then is it not true that (1) the relation of the teachers or missionaries with that of the Church is not yet settled, (2) the true way to and nature of salvation and sanctification still remains undefined, (3) the missionary body is not yet organised, (4) spiritual and moral discipline in the Church have not as yet come in vogue, (5) forms of ceremonies have not yet been settled, and under these conditions if our good Managing Committee do not understand their own position as well as that of the Church and act in a manner, as they have done in the present case, they only prove themselves wanting in *foresight* and *large-heartedness.*

( भावार्थ । )

"इसके भिन्न आपके सम्बन्ध में कुछ और छोटी २ बातें ऐसी हैं, जिन्हें मैं ठीक नहीं समझता । दृष्टान्त स्थल में:- इधर तो आप (अपने जनों को) मांसाहार से विरत रहने की शिक्षा देते हैं, उधर उन्हें मछली

खाने की आज्ञा देते हैं, जब कि दोनों का हि खाना ठीक नहीं।

ऐसी कई बातों को छोड़ कर मैं आप की और शेष शिक्षा के भाव को, न कि पूर्णतः उस के आकार को, अवश्य ठीक समझता हूं, जिसे सारी मैनेजिंग कमेटी ने अपने सख्त शब्दों के द्वारा बुरा प्रगट किया है। मैं यदि इस अवसर में आप की इस शिक्षा के समर्थन के निमित्त अपनी आवाज़ न उठा सकता, तो मैं अपने में नैतिक साहस और सत्य अनुराग की कमी अनुभव करता।..................

मालूम होता है, कि वह आत्मा के जीवन का कोई ठीक ज्ञान नहीं रखते, अन्यथा वह उसके विषय में अपनी हि समझ तक सीमा बद्ध करने का साहस न करते और यह न कहते (जैसा कि आप के मामले में अनुसन्धान की प्रणाली से ज़ाहिर होता है) कि "यहां तक, और इस से आगे कुछ नहीं।"

जो कुछ वह ख़ुद नहीं जानते और जिसका वह अपने आत्मा में कोई अनुभव नहीं रखते, उसे वह मिथ्या और हानि प्रद कहते हैं।

..........................................................................

उनके नज़दीक धर्म्म केवल उनके थोड़े से मतों का नाम है, जो कि वह ख़ुद रखते हैं, और उस से बढ़ कर और कुछ नहीं।........................

क्या यह सच नहीं कि—

(१) हमारी समाज के साथ उसके शिक्षकों अर्थात मिशनरियों का जो सम्बन्ध है, वह अभी तक स्थिर नहीं हुआ, (२)मोक्ष विषयक सत्य पथ और पवित्रता के विषय में अभी तक कोई ठीक फ़ैसला नहीं हुआ, (३) मिशनरी श्रेणी अभी तक संगठित नहीं हुई; (४) आत्मिक और नैतिक साधनों की कोई प्रणाली स्थिर नहीं हुई, (५) अनुष्ठानों की विधि का अभी तक फ़ैसला नहीं हुआ। इसलिए इन हालात में यदि हमारी अच्छी मैनेजिंग कमेटी अपनी और अपनी समाज की पोज़ीशन को नहीं समझ सकती, और उसी तरह अपनी कार्य्यवाही करना चाहती है, जिस तरह उस ने आप के सम्बन्ध में की है, तो ऐसा करके वह अपने आप को दूरदर्शिता और उदार भाव से शून्य प्रमाणित करेगी।"

अख़ीर में मैंने समाज के साथ अपने सम्बन्ध के विषय में जो थोड़े से शब्द लिखे थे, वह यह थेः—

" You have gone out first, although I expected to go away first. But if no proper and necessary change takes place in the condition of members that compose the Managing Committee, then the time seems not far distant, when I and perhaps others shall be obliged to follow your suit"

(भावार्थ।)

" आप समाज से सब से पहले अलग होगए, जब

कि मैं आशा करता था कि सब से पहले मैं उस्से अलग हूंगा। परन्तु यदि मैनेजिंग कमेटी के मेम्बरों में कोई उचित और आवश्यक परिवर्तन न आया, तब वह समय दूर नहीं है, जब कि मैं और शायद कई और जन भी आप की न्याईं उस से जुदा होजाएं।"

मैंने विजय बाबू को जो चिट्ठी लिखी थी, उसकी एक कापी मैंने साधारण सामाज की मैनेजिंग-कमेटी को भी भेज दी थी। उसे पढ़ कर जैसी कि आशा हो सकती थी, कमेटी के मेम्बर मुझ से बहुत नाराज़ हुए। इसके भिन्न समाज के मिशनरी लोगों की रहबरी के विषय में वह जिस प्रकार के नियम बनाना चाहते थे, वह कई बातों के विचार से मूलतः ठीक न थे। इसलिए उनके विषय में भी वह मेरी राय से ख़ुश न थे। कोई २ और मिशनरी भी इन नियमों को बहुत अनुचित बोध करते थे। इन्हीं में से एक बाबू नगेन्द्र नाथ चैटरजी थे, जिन्हों ने ३० जुलाई सन् १८८६ ई० को मुझे इसी विषय में इस प्रकार लिखा था :—

" My dear Agnihotri,

You must write a crushing criticism to the proposed rules for the guidance of the Missionaries. I know your voice is felt in the Committee.

I will, of course, send my ideas about the rules to the Committee as soon as possible.

The Brahmo Samaj is in a crisis. We must do our duty to the Church."

(भावार्थ।)

"मेरे प्रिय अग्निहोत्री।

मिशनरियों की रहनुमाई के लिए जो नियम तजवीज़ किए जारहे हैं, उन की आपको कुचल देने वाली आलोचना करनी चाहिए। मैं जानता हूं कि कमेटी में आपकी आवाज़ असर रखती है। मैं ख़ुद भी जिस क़दर जल्द हो सकेगा इन नियमों के विषय में अपने ख़यालात कमेटी तक पहुंचाऊंगा। इस समय ब्राह्म समाज नाज़ुक अवस्था में है, हमें उसके सम्बन्ध में अपने कर्तव्य को पूरा करना चाहिए।"

इधर समाज की ऐसी गठन को जिस में सांसारिक गौरव के कारण निम्न श्रेणी के आत्मा समाज में उच्चपद पाकर उच्च श्रेणी के किसी आत्मा के परिचालक बनते वा बन सकते हों, मैं धर्म्म के पूर्णतः प्रतिकूल समझता था, और इस विषय में बेधड़क अपने भाव प्रकाश करता था, उधर ऐसे जन मेरी ऐसी स्पष्ट आलोचना को पसन्द न करते थे। फिर समाज के नाना जनों की ऐसी अवस्था थी, कि उन्हें अपने से जिस किसी श्रेष्ट से श्रेष्ट जन की भी कोई बात अपने मत वा विश्वास के विरुद्ध मालूम हो, उसी के विरोधी बन जाते थे। मेरी भी ऐसी कई बातों से

ऐसे कितने हि जन मेरे बहुत विरोधी थे। इसीलिए जब विजय बाबू की कई बातों की मैंने ताईद की, तब ऐसे लोग विशेष रूप से मेरे विरोधी होगए। इस से एक सदि पहले जब उन्हों ने मेरी धर्म्म-मूलक सत्य स्वाधीनता में एक बार हस्तक्षेप करना चाहा था, तब मैंने समाज के सम्बन्ध में अपनी पोज़ीशन को भली भांत प्रगट कर दिया था। इस विषय में मैंने पंडित शिवनाथ शास्त्री को जो पत्र लिखा था, उस में से निम्न लिखित अंश (जो किसी २ शब्द के संशोधन के बाद दर्ज होता है) बहुत ध्यान से पढ़ने के योग्य है :—

"Lahore,
18th Sept., 1885.

"Allow me to tell you frankly that I feel I am not born to be led by others, but to lead and rule them. This you may consider my self-arrogance, but I do not feel it to be so.............................................

I have stood on my own convictions and my own light in the past and I mean to do the same in future.................Whenever I do anything or take any new step in my life, I do so with my *inner consciousness* that my *heart is right*, and I never count whether that step will be approved of by any man, or class of men, or by my own fellow-believers or others.

"This is a characteristic of my life, and I

can not be untrue to it. Yes, it is a spiritual death to me, should I turn out a traitor to my higher light.

(भावार्थ।)

"आप मुझे स्पष्ट रूप से यह बात बता देने की अनुमति दीजिए, कि मैं इस पृथिवी में इसलिए नहीं जन्मा हूं, कि मेरे जीवन के और नेता बनें, किन्तु मैं (अपनी विशेष धर्म्म शक्तियों के विचार से) औरों का नेता बनने और उन पर शासन करने के लिए प्रगट हुआ हूं। इसे आप मेरा घमंड समझ सकते हैं, परन्तु मैं इसे ऐसा नहीं समझता.........इसीलिए जिस प्रकार अब तक मैं अपनी समझ और अपनी ज्योति के अनुसार चलता रहा हूं, उसी प्रकार भविष्य में भी चलना चाहता हूं। .........जब कभी मैं अपने जीवन में कोई नई गति ग्रहण करता हूं, तब उसे मैं अपने आत्मिक बोध के अनुसार ठीक समझ कर करता हूं, और ऐसा समझ कर फिर इस बात की परवा नहीं करता, कि उसे कोई जन वा जन-समूह वा मेरे साथी विश्वासी गण वा कोई और जन पसन्द करते हैं, वा नहीं। यह मेरे आत्मा का स्वभाव बन चुका है, जिस के विरुद्ध जाकर मैं अपने लिए मिथ्या प्रमाणित नहीं हो सकता—हां, यदि इस विषय में मैं सच्चा न रहूं, तो मानो मैं आप अपनी आत्मिक मृत्यु का कारण बनता हूं।"

अन्त में मैं यहां पर फिर एक बार यह बता देना

चाहता हूं, कि मैं अपने जीवन व्रत की सिद्धि के निमित्त जो २ कुछ साधन करता था, तत्व ज्ञान विषयक जो २ अनुसन्धान करता था, जिस २ प्रकार का काम करता था और ऐसे महान् कार्य्य के लिए आत्माओं को जिस २ विधि से तैयार करता था, जो २ पुस्तकें और अपने अखबार के लिए निबन्ध लिखता था, जो २ उपदेश देता था; इत्यादि २, वह सब कुछ मैं अपनी उन्नत शील उच्च ज्योति और शक्ति के अनुसार स्वाधीन रूप से करता था। साधारण समाज को मैं अपने काम की त्रैमासिक रिपोर्ट अवश्य देता था, परन्तु कार्य्यगत मेरा उस के साथ कुछ अधिक सम्बन्ध न था। फिर भी मैं उसका सच्चा और बहुत बड़ा हिताकांक्षी था, और उसके हित के लिए नाना प्रकार से यत्न शील रहता था।

परन्तु जब वर्षों के तजरुबे ने मुझ पर यह प्रगट कर दिया, कि यह समाज भी कहलाने वाली कुछ और धर्म्म समाजों वा सोसाइटियों की न्याईं केवल मत मूलक एक समाज है, और उस की गठन धर्म्म-मूलक नहीं, और वह मेरे जीवन व्रत की सिद्धि में केवल यही नहीं, कि सहाय नहीं, किन्तु रोक अवश्य है, और नव विधान समाज के कई लीडरों की न्याईं उसके भी कितने हि लीडर समय २ में मुख और लेख के द्वारा मिथ्या

घड़ने और फैलाने के लिए तैयार रहते हैं, तब मैंने सन् १८८७ ई० के अन्त में उसे पूर्णतः त्याग करने का संकल्प कर लिया और अपना त्याग पत्र भेज दिया। यह त्याग पत्र समाज के मंत्री के नाम था। उस का आवश्यक भाग नीचे दर्ज होता है :—

"Dear Sir,

In 1880 while I was in Calcutta I was requested on behalf of Sadharan Brahmo Samaj, to enlist myself as a missionary of the Samaj. Seeing nothing wrong either in the request or any interference in my independent career I accepted the office, though I seldom used this designation in connection with my work. And since then though apparently connected with the S. B. S. yet my connection has been practically a nominal only, excepting that I sent to you my quarterly reports of the work, which I have been doing in my own way..................

But as after a pretty long experience I do not see, on the one hand, any considerable good in keeping this my nominal connection with you, and on the other I do not approve the present *constitution* of the Samaj, and also the treatment which I receive at the hands of the Executive Committee, I have decided to give up this nominal connection also, and therefore request the favour of your accepting this letter as my resignation,"

( भावार्थ । )

"प्रिय महाशय !

सन् १८८० ई० में जब कि मैं कलकत्ते में था, तब मुझ से साधारण ब्राह्म समाज की ओर से यह दरख्वास्त की गई थी, कि मैं उस के मिशनरी पद को ग्रहण करूं। यह देख कर कि इस आवेदन में कोई बात अनुचित नहीं, और मेरे स्वाधीन लक्ष्य की सिद्धि में भी कोई हस्तक्षेप नहीं, मैंने इस पद को ग्रहण कर लिया था; यद्यपि अपने कार्य्य के सम्बन्ध में मैंने इस नाम का प्रायः व्यवहार नहीं किया। उस समय से लेकर अब तक साधारण समाज से मेरा कार्य्यगत सम्बन्ध नाम मात्र रहा है, सिवाए इसके कि मैं अपने काम की त्रैमासिक रिपोर्ट आपके पास भेजता रहा हूं, कि जो मैं अपने तौर पर करता रहा हूं।......

परन्तु अब एक लम्बे काल के तजरुबे के बाद एक ओर जहां मैं आप की समाज के साथ सम्बन्ध रखने में कोई विशेष शुभ नहीं देखता, और दूसरी ओर मैं समाज की वर्तमान गठन को ठीक नहीं समझता, और समाज की प्रबन्ध कर्तृ सभा का अपने प्रति बर्ताव भी उचित बोध नहीं करता, इस लिए मैंने आख़िरकार यह फ़ैसला किया है, कि मैं उसके साथ इस नाम मात्र सम्बन्ध को भी त्याग दूं। इसलिए आप से निवेदन

है कि आप कृपा करके मेरी इस चिट्ठी को मेरा त्याग पत्र समझ कर स्वीकार करें।"

साधारण शिष्टता के नियमानुसार यह आवश्यक था, कि मेरे इस त्याग पत्र के सम्बन्ध में कमेटी का जो फ़ैसला होता, वह मेरे पास भेजा जाता। परन्तु ऐसा नहीं किया गया, किन्तु मेरे त्याग पत्र को पूर्णतः दबा दिया गया, और उस पर कमेटी ने जो मामूली रिज़ोल्यूशन पास किया, उसे समाज के अख़बार "इन्डियन मेसेंजर" में एक नोट के साथ छाप दिया गया। मेरे इस त्याग पत्र के छापने का वह क्यों साहस न कर सके, इसका अनुमान किया जा सकता है। परन्तु नोट के लिखने में लेखक ने (जो शायद पंडित शिवनाथ शास्त्री हि थे) मुझ पर जो झूठा इलज़ाम लगाया, वह अत्यन्त शोचनीय था। वह अपवाद यह थाः—

" He considers the majority of Brahmos to be unsaved men, in the salvationist sense of the term, which has recently struck his fancy, and hence he is not willing to be identified with these men."

( भावार्थ। )

" वह बहु संख्यक ब्राह्मो लोगों को मुक्ति फ़ौज वालों के विश्वासानुसार (जिनकी ओर वह कुछ दिन से आकृष्ट हुए हैं) मुक्ति विहीन समझते हैं, और इस लिए उनके साथ मिलकर रहना नहीं चाहते। "

मुक्ति फ़ौज वाले उस जन को अनन्त काल के नर्क से बचा हुआ (saved) विश्वास करते हैं, कि जो ईसा के संबंध में यह विश्वास करे, कि उसने सूली पर चढ़कर ईश्वर के कुछ पापियों के लिए उनके पापों की सज़ा छुड़ा कर माफ़ी हासिल कर ली है, और जो कोई ईसा पर इस प्रकार से विश्वास करे, वह पापों की सज़ा अर्थात् अनन्त काल के नर्क दुःख से मुक्ति पा जाता है, और जो इस प्रकार का विश्वास नहीं करता वह उनके निकट ना बचा हुआ अर्थात् "unsaved" समझा जाता है।

उपरोक्त नोट का लेखक अपने दिल में अवश्य जानता था, कि मैं कभी भी अपनी उमर में इस प्रकार का विश्वासी नहीं बना, और न अपनी निराली प्रकृति के विचार से बन हि सकता था। परन्तु फिर भी उस ने मेरे विषय में जो मिथ्या कलंक लगाया, उस से उस के ईश्वर प्रेम और पवित्र हृदय का प्रमाण मिल सकता है। उसके इस मिथ्या कलंक के खंडन में मैंने उसी समय एक चिट्ठी लिख दी थी। इस अवसर पर यह प्रश्न उदय होता है, कि जब कि मेरे त्याग पत्र में समाज से मेरे अलग हो जाने के ठीक २ कारण दर्ज थे, तब उन लोगों ने मेरे त्याग पत्र को क्यों न छापा, और उसे क्यों दबा रक्खा और इस विषय में एक मिथ्या कारण क्यों घड़ा? इसका उत्तर प्रत्येक समझदार और अपक्षपाती जन खुद हि सोच

कर मालूम कर सकता है । मैं खुद ब्राह्म समाज के मेम्बरों को अपने तजरुबे से जैसा कुछ समझ चुका था, उसका ऊपर वर्णन हो चुका है । उसके दुहराने की यहां और आवश्यकता नहीं । परन्तु मुझे अपने प्रति इस मिथ्या कलंक से जहां एक ओर बहुत आघात और क्लेश पहुंचा, वहां दूसरी ओर इस बात का एक और प्रमाण मिल गया, कि सत्य अनुराग विषयक नाना अंगों से विहीन जन धर्म्म के नाम लेवा होकर भी किस तरह समय २ में मिथ्या का आश्रय लेने और उसके द्वारा किसी और को हानि पहुंचाने के लिए विवश तैयार हो जाते हैं!!

आश्विन और कार्तिक १३१६ शक के "नव्य भारत" नामक बंगला मासिक पत्र में, साधारण ब्राह्म समाज के एक मेम्बर बाबू चंडी चरण बन्धोपाध्याय ने पंडित शिवनाथ शास्त्री की "हिस्टरी आफ़ दी ब्राह्म समाज" पर अपनी आलोचना करते समय मेरे विषय में यह लिखा है :—

"अग्निहोत्री महाशय के सम्बन्ध में तदानीन्तन साधारण ब्राह्म समाज की कार्य्य निर्व्वाहक सभा के पास एक पत्र भेजा गया, उस पत्र पर दो तीन मास की आलोचना के बाद कार्य्य निर्व्वाहक समिति की मीमांसा (जो धर्म्म मत के सम्बन्ध में न थी) के ज्ञापन किए जाने पर अग्निहोत्री महाशय ने प्रचार का पद परित्याग कर दिया ।"

उपरोक्त कार्य्य निर्व्वाहक सभा की ओर से कभी भी मुझे कोई ऐसा पत्र नहीं मिला, जिस में मुझे अपने प्रचारक पद के त्याग के लिए किसी प्रकार का साक्षात् वा असाक्षात् रूप से कोई संकेत तक किया गया हो।

मैंने साधारण ब्राह्म समाज को त्याग करने के विषय में इस लेख में साफ़ २ और विस्तार पूर्व्वक जो कुछ हाल बता दिया है, उसे पढ़ कर जैसे इस विषय में कोई सत्यप्रिय जन पंडित शिवनाथ शास्त्री की बात पर विश्वास नहीं कर सकता, वैसे हि चंडी बाबू की उपरोक्त बात को भी सत्य नहीं मान सकता।

# पहले अध्याय की परिशिष्ट ।

## भेंट विषयक त्याग ।

—:०:—

(१) जब मेरे किसी उपकृत सेवक वा सेवका ने मुझे कोई ऐसी रक़म भेंट करनी चाही है, जिस के विषय में मुझे ऐसा बोध हुआ है, कि यद्यपि उसे उस समय उस की आवश्यकता नहीं है; तथापि हो सकता है कि आयंदा कभी उसे उसकी अवश्यकता हो, तब मैंने उसकी ऐसी भेंट को ग्रहण करना उचित नहीं समझा। इसीलिए औरों के भिन्न एक बार जब मेरी एक अत्यन्त उपकृत सेवका ने मुझे अपनी ओर से ख़ुदबख़ुद ८००) रुपए की भेंट देनी चाही, तब मैंने उस की वह भेंट स्वीकार न की।

(२) जब मेरे किसी उपकृत सेवक वा सेवका ने मुझे धन विषयक कोई भेंट देनी चाही है, और मुझे मालूम हुआ है, कि उसका अपना ख़र्च उसकी आमदनी से मुशकिल से पूरा होता है, तब मैंने उस की वह भेंट ग्रहण नहीं की।

(३) जब मेरे किसी उपकृत जन ने मुझे किसी ऐसी चीज़ के लिए कोई भेंट देनी चाही है, कि जिस की मुझे कोई आवश्यकता बोध नहीं हुई, तब मैंने उस चीज़ के लिए उसकी उस भेंट का लेना स्वीकार नहीं किया।

(४) जब किसी ऐसे जन ने मेरे सन्मुख रुपए की कोई भेंट रक्खी है, कि जिस के विषय में मुझे मालूम

हुआ है, कि वह दयानतदारी से रुपया नहीं कमाता, तब मैंने उस की वह भेंट क़बूल नहीं की।

(५) जब मेरे एक वा दूसरे उपकृत जन ने मेरे लिए कोई ऐसी भेंट भेजी है, जिसे मैंने देव समाज को देदेना उचित समझा है, तब मैंने वह भेंट आप ग्रहण नहीं की, और समाज फ़ंड में दाख़िल कर दी है, और ऐसा करने की उसे ख़बर देदी है।

(६) यद्यपि इस संसार में साधारण मां बापों को छोड़ कर कितने हि बड़े २ धनी माता पिता अपने बेटों के जवान हो जाने और धन कमाने के योग्य बन जाने पर, उन से धन पाने के केवल यही नहीं, कि लालसी रहते हैं; किन्तु उन से धन लाभ करने के लिए कई प्रकार के बड़े २ यत्न तक करते हैं; तथापि मैंने अपने किसी कमाऊ बेटे से कभी कोई ऐसी आकांक्षा नहीं रक्खी; और एक बेटे के भिन्न जिस ने और सेवाओं के सिवाय मुझे धन की भेंट करने में भी अपना परम सौभाग्य और आत्म-कल्याण अनुभव किया है, मैंने किसी और बेटे से कोई भेंट नहीं चाही,—यहां तक कि एक बेटे के बार २ ज़ोर देने पर जब कुछ महीनों के लिए मैंने उसकी तरफ़ से कुछ नियमित भेंट क़बूल की, तब फिर यह बोध करने पर, कि उस का लेना उचित नहीं; मैंने केवल यही नहीं, कि आयंदा उस की वह भेंट ग्रहण नहीं की, किन्तु उन दिनों की पहली ली हुई कुल भेंट भी उसे वापिस कर दी।

ग्रन्थकर्ता।

# अति हितकर हिन्दी पुस्तकें।

—○:○:○—

निम्न लिखित अति हितकर हिन्दी पुस्तकें सुपरिन्टेन्डेन्ट देव समाज हेड आफ़िस लाहौर से मिल सकती हैं।

## बालक बालिकाओं और स्त्रियों के लिए पाठ्य पुस्तकें।

(१) वर्ण बोध प्रथम भाग—हिन्दी की सचित्र पहिली पुस्तक, केवल असंयुक्त वर्ण और शब्द। मूल्य )॥

(२) वर्ण बोध द्वितीय भाग—हिन्दी की सचित्र दूसरी पुस्तक, संयुक्त वर्ण और शब्द। ... मूल्य -)

(३) पाठबोध प्रथम भाग—हिन्दी की सचित्र तीसरी पुस्तक। बहुतसी मनोहर और शिक्षादायक कहानियां, विविध पदार्थों और उद्भिद् और पशु जगत् के विषय में हितकर पाठ, स्वजातीय जनों की सद्गुण प्रकाशक जीवन कथाएं और पुरानी और नई उत्तम कविता। ... ... ... ... ... ... मूल्य ।)

(४) पाठबोध दूसरा भाग—हिन्दी की चौथी पुस्तक। वृक्षों और पक्षियों आदि के विषय में अति मनोहर और शिक्षाप्रद पाठ, स्वास्थ्य-रक्षा के नियम, भारत सम्राट्, चित्तौड़ की रानी पद्मिनी और राजा कर्ण आदि की संक्षिप्त जीवन कथाएं, और पुरानी तथा नई उत्तम कविता। ... ... ... ... ... मूल्य ।)

(५) पतिव्रता दर्पण—सत्यभमा, द्रौपदी, पार्वति आदि, प्राचीन स्त्रियों के हितकर संव्वाद।......मूल्य ≠)

(६) लीलावती चरित—एक आदर्श हिन्दू नारी की सच्ची जीवन कथा। ... ... ... मूल्य ≡)

(७) सावित्री चरित—महाभारत में से सावित्री और सत्यवान की कथा को मूल बनाकर यह जीवन-चरित्र अति उत्तम और नूतन विधि से लिपिबद्ध किया गया है। ... ... ... मूल्य ≠)॥

श्रीमति सावित्री अग्निहोत्री जी का संक्षिप्त जीवनचरित—बहुत हितकर पुस्तक है।... मूल्य ≠)

[ अन्य पुस्तकें ]

(८) शन्तिचरित—एक नवयुवक की सच्ची हृदय स्पर्शी और शिक्षाप्रद जीवनकथा। ... मूल्य ≡)

(९) मेरा वंश और मेरे वंशीय पूर्वज—श्री देवगुरु भगवान् के वंश और वंशीय पूर्वजों का हाल। ... ।)

(१०) पुष्प और पुष्प अनुराग। ... ... )॥

(११) श्रीदेवगुरु भगवान् का अद्वितीय अविर्भाव-उनकी अद्वितीय धर्म्मशिक्षा और उनका मोक्ष और उच्चजीवन विषयक अद्वितीय दान। ... ... मूल्य )॥

(१२) विनाश से मोक्ष और उच्चजीवन की प्राप्ति। ... ... ... मूल्य )॥

(१३) ऋषिवाक्य संग्रह ... " -)

(१४) श्रीमद्भगवद्गीता संग्रह । ... ...मूल्य -)॥

(१५) कबीर जी के दोहे । ... ... " )॥

(१६) जीवनपथ से अन्धता । ... ... " -)॥

(१७) नीतिसार—सात विख्यात नीति शास्त्रों में से चुने हुए हितकर श्लोक, अर्थ सहित । ... मूल्य ‌-)॥

(१८) देवसमाज स्थापक श्री देवगुरु भगवान् का अद्वितीय आविर्भाव । ... ... ... मूल्य -)॥

(१९) श्री देवगुरु भगवान् की छोटी २ जीवन कथाएं । सब वयस्क के जनों के पढ़ने के योग्य, प्रथम भाग । ... ... ... मूल्य =)

(२०) श्री देवगुरु भगवान् की छोटी २ जीवन कथाएं, द्वितीय भाग । ... ... मूल्य =)॥

(२१) आत्म कथा—अर्थात् देव समाज स्थापक श्री देवगुरु भगवान् की जुबिली एडरेस जो पोष वदि प्रतिपदा संवत् १९६४ बिक्रमी को उनके महाव्रत ग्रहण सम्बन्धी रौपिक जुबिली महोत्सव पर लाहौर में पढ़ी गई थी । बहुत हितकर पुस्तक है।... ... मूल्य ।)

(२२) आत्म परिचय—श्री देवगुरु भगवान् के अपने जीवन के सम्बन्ध में कई क़ीमती लेखें। मूल्य ।)

(२३) श्री देवगुरु भगवान् का आविर्भाव । " )॥

(२४) पशु जगत् और उसके सम्बन्ध में मनुष्य के कर्तव्य। ... ... ≈)॥

(२५) ईश्वर और श्री देवगुरु भगवान् के जुदा २ काम। ... ... ... ... मूल्य )॥

(२६) ईश्वर विषयक मिथ्या और महाहानिकारक विश्वास। ... ... ... )॥

(२७) भूचाल-ईश्वर और देवी का कोप। )॥

(२८) ईश्वर वादियों का एक नया सम्प्रदाय )॥

(२९) कल्पित ईश्वर की कल्पित सर्व्वज्ञता। )॥

(३०) बृटिश राज्य और हमारे देश में स्वराज्य की पुकार। ... ... ... ... )॥

(३१) धर्म्म संगीत—जिस में ६८ भजन दर्ज हैं। ... ... ... ... मूल्य ≠)

(३२) संगीत सुधा—जिस में १०० भजन दर्ज हैं ।)

(३३) हिन्दुओं में कई प्रकार के सामाजिक मिथ्या भेद और उसके बहुत बुरे फल ... )॥

(३४) धन का विनाशकारी मोह और उस से उद्धार पाने की विधि ... ... ... ... ... -)

नोट--डाक व्यय इस के भिन्न हैं।

---

५४ ) ६